मैथिली

तंत्रनाथ झा

शिवशंकर झा 'कान्त'

MT
817.23 092 J
559 J

भारतीय
साहित्यक
निर्माता

MT
817.23092
J559J

INDIAN INSTITUTE
OF
ADVANCED STUDY
LIBRARY, SHIMLA

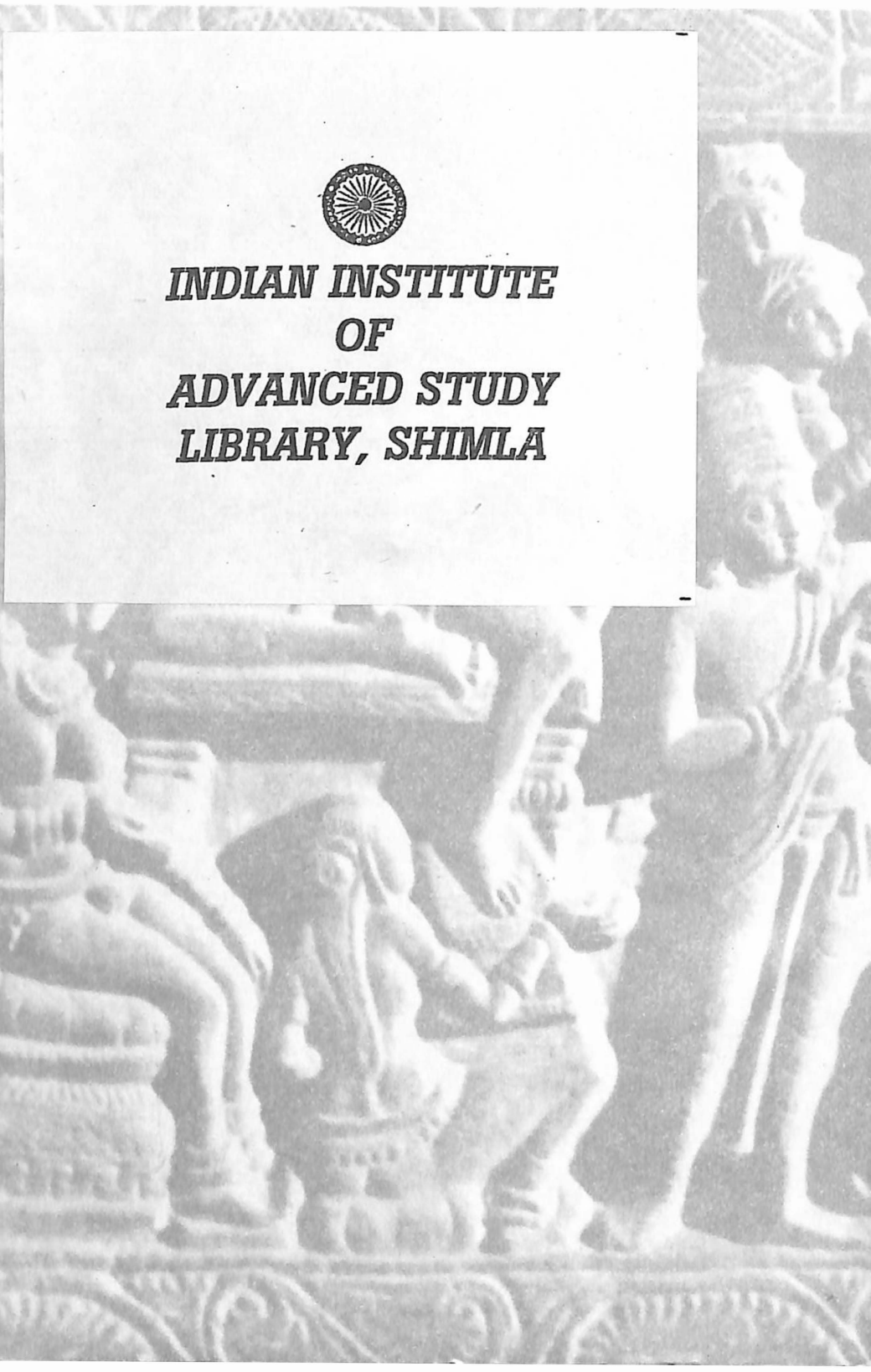

अस्तरपर छपल मूर्तिकलाक प्रतिरूपमे राजा शुद्धोदनक दरबारक ओ दृश्य देल गेल अछि जाहिमे तीन गोट भविष्यवक्ता भगवान बुद्धक माता रानी मायाक स्वप्नकेर व्याख्या कय रहल छथि। हिनका लोकनिक नीचाँमे एक गोट देवानजी बैसल छथि जे ओहि व्याख्याकेँ लिपिबद्ध कय रहल छथि। भारतमे लेखनकलाक ई प्रायः सभसँ प्राचीन एवं चित्रलिखित अभिलेख थिक।

नागार्जुनकोण्डा, दोसर शताब्दी
सौजन्य : राष्ट्रीय संग्रहालय, नयी दिल्ली

भारतीय साहित्यक निर्माता

तंत्रनाथझा

लेखक
शिवशंकरझा 'कान्त'

साहित्य अकादेमी

Tantranath Jha : A monograph in Maithili by Shiva Shankar Jha 'Kant' on the Maithili author. Sahitya Akademi, New Delhi (1996), Rs. 15.

Library IIAS, Shimla
MT 817.23 092 J 559 J
00117132

© साहित्य अकादेमी
प्रथम संस्करण : १९९६

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय
रवीन्द्र भवन, ३५, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नयी दिल्ली ११० ००१
विक्रय विभाग : 'स्वाति', मन्दिर मार्ग, नयी दिल्ली ११० ००१

क्षेत्रीय कार्यालय
१७२, मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय मार्ग, दादर, मुम्बई ४०० ०१४
जीवनतारा भवन, चौथा तल, २३ ए/४४ एक्स, डायमंड हार्बर रोड,
कलकत्ता ७०० ०५३
३०४-३०५, अन्ना सालई, तेनामपेट, मद्रास ६०० ०१८
ए डी ए रंगमन्दिर, १०९, जे. सी. मार्ग, बैंगलौर ५६० ००२

MT
817.230 92
J 559 J

मूल्य : पन्द्रह टाका

117132
9.12.04
SHIMLA

ISBN 81-260-0160-7

लेज़र-टाइपसेटिंग : अक्षरश्री, दिल्ली ११० ०३२
मुद्रक : कलरप्रिंट, दिल्ली ११० ०३२

विषयानुक्रमणिका

जीवन परिचय	९
प्रबन्धकाव्य	१५
मुक्तककाव्य	४०
गद्य एवं अन्य रचना	५७

दू आखर

साहित्य अकादेमी, दिल्लीसँ तंत्रनाथझापर एक गोट विनिबन्ध लिखबाक आग्रह कएल गेल, उत्साहपूर्वक से स्वीकार कए एहि कार्यमे लगलहुँ, किन्तु समय ओ शरीर संग नहि देलक ओ कठिन रोगसँ ग्रसित भए गेलहुँ। सम्पूर्ण कार्य लगभग दुइ वर्ष धरि पड़ले रहि गेल। उत्साहक आधिक्य छल किंतु छलहुँ रुग्ण, वस्तु ओरिऔल, ओकरा सजएबाक मात्र कार्य,पुनः थोड़हिसँ प्रारम्भ कए कहुना एकरा पूरा कए सकलहुँ। हमर अपन शोध-प्रबन्ध 'मैथिली महाकाव्यक उद्‌भव ओ विकास'क क्रममे तंत्रनाथझाक रचनाक सम्बन्धमे जे पढ़ने रही से सब एखन नीक जकाँ सहायक भेल, मुदा समयक अन्तराल ओ अनुभवक कारणेँ कतोक नवीन तत्त्व सभ सेहो मस्तिष्कमे आएल। सभसँ बेसी जे ओहि समयमे हम तंत्रनाथझाक प्रबन्धकाव्य, सेहो खूब नीक जकाँ मात्र 'कीचक-वध' ग्रंथक अध्ययन कए सकल रही। एहि मध्य कविक दोसर प्रबन्धकाव्य 'कृष्णचरित' तथा दुइ गोट मुक्तक काव्य 'नमस्या' ओ 'मंगल पंचाशिका' सेहो प्रकाशित भए गेल छल, तकर सभक परिशीलन नव रूपमे करबाक छल। पुनः हिनक कथा-साहित्य, निबन्ध ओ एकांकी साहित्यक सम्यक् विवेचन आवश्यक छल। एहि सभमे किछु देरी लागल। भए सकैत अछि, शारीरिक रूपसँ स्वस्थ रहने ई कार्य किछु पहिनहि भए जाइत।

एहि कार्यमे, कविक रचनासँ हिनक पुत्र डॉ. उग्रनाथझा ओ जमाय डॉ. दुर्गानाथझा 'श्रीश' हमरा सहायता देल, ताहि हेतु हिनका लोकनिक प्रति हम आभार व्यक्त करैत छी।

–शिवशंकरझा 'कान्त'

जीवन परिचय

मैथिलीक प्रसिद्ध कवि तंत्रनाथझाक जन्म भेल दरभंगा जिलाक हुनक पैतृक गाम धर्मपुर (उजान) मे शाके १८३१क द्वितीय-श्रावण-शुक्ल-षष्ठी-रवि तदनुसार २२ अगस्त १९०९ ई. कें । मैथिलीक प्रसिद्ध आलोचक-अनुसंधित्सु रमानाथझाक अनुज तंत्रनाथझाक पिता तारानाथझा छलथिन्ह । हिनक पिता परम्पराक पालक ओ संस्कृतक ज्ञाता छलथिन्ह । हिनक मातामह छलथिन्ह तीर्थनाथझा तथा माम छलथिन्ह प्रसिद्ध म.म.डॉ. गंगानाथ झा ओ ममिऔत सभमे डॉ. अमरनाथ झा, आदित्यनाथ झा लोकनि, जनिक छत्रच्छाया-साहचर्य आदिक प्रभाव हिनक जीवनहुपर अमिट रूपे पड़ल । पैतृक ओ मातृकक एहन सरस्वती-सिद्ध परिवारमे बालक तंत्रनाथक शिक्षा-दीक्षा अनौपचारिक रूपसँ ताधरि चलैत रहल जाधरि ई इन्ट्रेन्समे नहि पहुँचि गेलाह । अपन स्थिर मस्तिष्क ओ धैर्यक संगे ई सब परीक्षामे नीक जकाँ उत्तीर्ण होइत गेलाह, किन्तु हिनक अध्ययन जँ प्रारम्भमे बेसी दिनधरि खानगीए रूपमे चलल तँ हिनक परीक्षाफल ओहि सभ परीक्षामे ओहन नहि भए सकल, जेहन हिनका सदृश विद्यार्थीकेँ होएबाक चाहिऐक । जतए-जतए ओ अध्ययन करथि, अग्रज रमानाथ झाक संग-संग, हुनकहि अभिभावकत्वमे ओ रहथि ओ खानगी रूपमे पढ़थि । पारिवारिक, आर्थिक स्थिति प्रायः अभावक रहलन्हि तँ प्रारम्भमे एहि रूपक कठिनता भेलन्हि । मधुबनी, मुजफ्फरपुर आदि स्थानपर अपन अग्रजक संग रहलहुपर तंत्रनाथझा अपन समय पढ़बहिमे व्यतीत करथि । प्रारम्भमे इहो एकटा बड़ विचित्र रूपक व्यवस्था छल, सामाजिक ओ सांस्कृतिक मान्यताप्राप्त जे लोक, सद्ब्राह्मण, पियाजु, लहसुन आदि नहि खाथि, होटलमे नहि खाथि, जतए-ततए नहि खाथि । ई लोकनि स्वयं अपन डेरा लए, स्वयं पाक बना खाथि ओ रहथि । तँ बेसी काल, छोट भेलाक कारणेँ, भोजनादिक व्यवस्था हिनकहि करए पड़न्हि । तथापि, तंत्रनाथझा अपन अध्ययनक्रम, जे स्वभावतः डेरहिपर चलैत छलन्हि, ताहिमे व्यतिक्रम नहि आबए देल । मुजफ्फरपुरमे १९२५ ई. मे तंत्रनाथझा बी.बी. कालेजिएट इसकूलमे पहिले-पहिल नाम लिखाओल, जतएसँ पुनः १९२६ ई.क प्रारम्भहिमे टी.सी. लए, वाट्सन हाइ इसकुल, मधुबनी आबि गेलाह । ओतहिसँ ओ १९२७ मे मएट्रिक

पास कएल । हिनक विवाह सेहो एहि मध्य कविशेखर बदरीनाथझाक कन्यासँ भए गेल छलन्हि ।

मएट्रिक पास कए तंत्रनाथझा पटना कओलेजमे आइ.ए. मे नाम लिखाओल तथा अपन अग्रज रमानाथझा, जे तहिया एम. ए. मे पढ़ैत छलाह, तनिक अभिभावकत्वमे अध्ययन करए लगलाह । १९२९ मे आइ. ए. क परीक्षामे ई प्रथम श्रेणीमे नीक अंकसँ पास भेलाह तथा बी.ए. मे अर्थशास्त्र विषयमे प्रतिष्ठा राखि पटना कओलेजहिमे पढ़ए लगलाह । १९३१ ई. मे बी.ए. आनर्स ओ १९३३ ई. मे एम.ए. अर्थशास्त्रमे पास कए ई आब प्रौढ़ प्रतिभाक भए गेलाह । एम. ए. कएलाक बाद ई सरकारी नओकरीक हेतु बेस प्रयास कएल किन्तु से सम्भव नहि भेलन्हि । अपन कोनो सम्बन्धीक प्रयासेँ १९३४ ई. मे कटिहारक माहेश्वरी एकेडेमीमे हिनक नियुक्ति सहायक शिक्षक पदपर भेलन्हि । किन्तु ई १९३६ ई. मे कटिहार छोड़ि राजस्कूल दरभंगामे शिक्षक भए गेलाह । रमानाथझा सेहो राज-दरभंगाक पुस्तकालयमे अध्यक्ष पदपर दरभंगहि आबि गेल छलाह, तेँ साहित्य-सेवाक अवसर सुगमतासँ हिनका दुनू भाइकेँ एहिठाम प्राप्त भेलन्हि ।

मैथिली भाषा-साहित्यक विकासक हेतु साहित्य-रचना ओ सरकार द्वारा शिक्षाक विभिन्न स्तरपर मैथिलीक स्वीकृतिक हेतु आन्दोलनक ई उचित अवसर छल ओ ताहि हेतु दरभंगा उपयुक्त केन्द्रीय स्थान सेहो छल । फलतः एहि दिशामे सेहो हिनका सदृश साहित्यकार ओ मातृभाषाप्रेमीक ध्यान जाएब उचिते छल । दरभंगा आबि गेलापर तंत्रनाथझा अपन युक्ति ओ योग्यताक बलेँ चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयक सचिव, गंगाधर मिश्रसँ अर्थशास्त्र विभागमे १९४१ ई. क जुलाइ मासमे व्याख्याताक पद प्राप्त कएल तथा राज इसकूल छोड़ि देल । ओही कालेजमे हिनक संगी सुभद्र झा सेहो हिन्दीक अध्यापक भए आबि गेलथिन्ह । स्वभावतः हिनका लोकनिक प्रयास मातृभाषाक विकासक क्रममे एक सशक्त आधार बनल । पश्चात् तंत्रनाथझा पटना विश्वविद्यालय ओ बिहार विश्वविद्यालयक सिनेटक सदस्य सेहो भेलाह । एहि सभ स्थानपर रहि अपन एकटा दल बनाए मैथिलीक विकास, मान्यता, शिक्षकक अधिकारक प्राप्ति, वेतनवृद्धि आदि समस्त विषयकेँ क्रमसँ उठाए ओहिमे सफलता प्राप्त कएल । एकटा कओलेजक स्थापना सरिसवपाहीमे कए कतोक समय धरि ओहि कओलेजक सचिव रहलाह । हुनक प्रशासकीय क्षमता ओ बुद्धिमत्तासँ कओलेज पर्णरूपेँ विकसित भए आइ ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालयक एक गोट अंगीभूत एकांश रूपमे प्रतिष्ठित अछि ।

तन्त्रनाथझा सिनेट सिण्डिकेटक सदस्य रूपमे चन्द्रधारी मिथिला कओलेजक सेहो विकास कएल, कतोक नव विषयक संबंधन कराओल, जाहिमे राजनीतिशास्त्र ओ समाजशास्त्र प्रमुख अछि । किंतु मैथिली भाषा-साहित्यक दृष्टिएँ हिनक कार्यक महत्ता पटना विश्वविद्यालयमे मएट्रिकसँ एम. ए. धरिक हेतु सम्बन्धन अछि । सुभद्रझा हिनका एहि कार्यमे बसी सहायक भेलथिन्ह ।

१९३६ ई. मे दरभंगा आबि गेलापर, तंत्रनाथझाक साहित्यिक लेखन पूर्णरूपेँ होबए लागल। रमानाथझा-सम्पादित 'साहित्य-पत्र' मे हिनक 'कीचकवध' महाकाव्यक प्रकाशनसँ एकर प्रारम्भ भेल। ई स्वयं कतोक ठाम कहने छथि जे भाइ (रमानाथझा)क फरमाइसपर ई लिखल करथि, अर्थात् जखन-जखन रमानाथझाकेँ कोनो पत्र, पुस्तक आदिक हेतु काव्य, कविता, निबन्ध, कथाक प्रयोजन होन्हि, तंत्रनाथझा से लिखि देथिन्ह। फलतः कविताक अतिरिक्त गद्यहुक विधामे हिनक लेखन एही समयमे प्रकाशमे आएल। ओना, स्वतंत्र रूपहुसँ, फरमाइस भेलापर अन्यो विधामे ई रचना कएल, जकर उदाहरण अछि 'एकांकी चयनिका'। हिनक एहि एकांकी संग्रहमे पाँच गोट एकांकी अछि, जाहिमे तीन गोट प्रायः विविध व्यक्ति ओ संस्था द्वारा फरमाइसेपर लिखल गेल अछि।

सी. एम. कओलेजक परिसर तहिया उत्साही प्राध्यापक लोकनिक केन्द्र छल, जतएसँ मैथिली भाषा-साहित्यक विकासमे विशेष योगदान होइत छल। किछु महत्त्वपूर्ण सैद्धान्तिक ओ साहित्यिक समस्याक समाधानमे सेहो ई लोकनि बेसी प्रयत्नशील भेल छलाह, जेना– मैथिलीमे वर्तनीक समस्या। वर्तनी निर्धारणक हेतु जे समिति बनल, तकर निर्णय जे भेल हो, किन्तु ई तीन-चारि व्यक्ति वर्तनी निर्धारण कए अन्त धरि ओही वर्तनीमे लिखैत रहलाह।

तंत्रनाथझा मैथिली साहित्य परिषद्क मंत्री भेलाह १९४१ ई. मे ओ प्रायः छओ वर्ष धरि एकर मंत्री रहलाह। परिषद्क मुख्य उद्देश्य छल पोथीक प्रकाशन, पोथीक निर्माण ओ ताहि हेतु प्रयास, मिथिलाक्षरक विकास एवं मैथिली भाषा साहित्यक सर्वविध उन्नयन। मैथिलीक मान्यताक प्रसंगे विश्वविद्यालयमे प्रयास आवश्यक छल ओ ताहि हेतु आवश्यक छल मैथिलीक समर्थकक संख्याकेँ सिनेटमे बढ़ाएब। एहि हेतु पंजीकृत स्नातकक संख्यामे बढ़ोत्तरीक कार्य कएल गेल। एहि आधारपर मैथिलीक समर्थक लोकनिकेँ विश्वविद्यालयक सिनेटमे सदस्यक रूपमे जिताएब आवश्यक छल। प्रारम्भमे एहिमे असफलता भेटल, किन्तु पश्चात् दुइ गोट सदस्य एहि माध्यमे पटना विश्वविद्यालयक सिनेटमे पहुँचि गेलाह एवं अन्य समर्थक सदस्यगणक सहयोगसँ मैथिलीक मान्यता पटना विश्वविद्यालमे भेटि सकल।

ई अपन मंत्रित्वकालमे मैथिली साहित्य परिषद्क माध्यमे आठ गोट विशिष्ट कोटिक पोथीक प्रकाशन कराओल। एहिसँ परिषदक मंत्रीक रूपमे हिनक सफलता सिद्ध अछि।

तंत्रनाथझा शिक्षकक ओ साहित्यकारक रूपमे वेश ख्याति अर्जित कएल। हाइ स्कूलक शिक्षणवृत्तिमे सेहो हिनक अनुशासन ओ अध्यापनसँ लोक प्रभावित भेल, से कटिहार ओ दरभंगा दुनू स्थानपर। कओलेजमे हिनक शिक्षणक प्रभाव तथा एकटा प्राध्यापकक रूपमे हिनक ख्याति एखनहु व्याप्त अछि। मितभाषी तंत्रनाथझा जे निश्चय कएल ताहिपर अडिग रहि, ओकरा पूर्ण करबाक धैर्यसँ प्रयास कएल। इएह कारण अछि जे हिनक परिवारक संयत स्वरूप सभकेँ आकृष्ट करैत अछि।

परम्पराक ई अनुयायी छलाह, किन्तु नवताक पूर्ण समर्थक सेहो छलाह । हिनक नजदीकी सम्बन्धी लोकनिक कहब छन्हि जे पैतृकसँ हिनका परम्पराक पालन करबाक ओ मातृकसँ नवताक आग्रहकेँ ग्रहण करबाक प्रेरणा भेटल छलन्हि । हिनक मातृकमे सरस्वतीक पूर्ण आशीर्वाद छलन्हि । हिनक माम तथा ममिऔत लोकनि एकसँ एक उद्भट विद्वान् छलाह से संस्कृत ओ अंग्रेजी, दुनू क्षेत्रमे ।

कल्पनाशील कवि तँ ई छलाहे, प्रयोगशीलताक नव आयामसँ सेहो अपन बादक कविगणकेँ प्रभावित कएने छथि । हिनक कवित्वक दोसर विशेषता अछि जे ई कोनो 'वाद' मे घेराएल नहि रहलाह । देखल गेल अछि जे प्रयोगशील कवि लोकनि प्रायः 'वाद'क डोरीमे बन्हाएल, प्रतिबद्ध भए तद्रूपक रचना करैत छथि । ओना, 'प्रतिबद्धता' एकटा फराक तत्त्व अछि जे तंत्रनाथझाक सम्बन्धमे कोनो महत्त्व नहि रखैत अछि । हिनक प्रयोग भेल अछि छन्द ओ भाषाक सम्बन्धमे । हिनक दुनू प्रबन्धकाव्यमे, विशेषतः 'कीचकवध' मे, छन्दहिमे प्रयोग भेल अछि ओ ताहि आधारपर मैथिलीक नव्यतम महाकाव्यक रूपमे ओकर प्रतिष्ठा छैक । 'कृष्णचरित' मे प्रयोग अछि आधुनिक शैक्षिक वातावरणक परिशुद्ध करबाक । एही कृतिपर तंत्रनाथझाकेँ १९७९ ई. क साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त भेलन्हि । प्रयोगशीलता हिनक मुक्तक काव्यमे सेहो भेटैत अछि । 'नमस्या'क बेसी कवितामे प्रयोगक नवीनता देखबामे अबैत अछि, से 'वर्षाघोष', 'धनछूहा', 'तार्क्ष्य', 'कौआ', 'कुकुर' आदि कविता होअए अथवा 'प्रयाणालाप', 'नवका मकान' आदि । तंत्रनाथझा सभसँ पहिने प्रयोगक रूपमे 'मुसरीझा'क रचना कयल जे प्रकाशमे अबितहि पूर्ण लोकप्रिय भए गेल । कहल जाइत अछि, हिनक माम ओ ममिऔत लोकनि जखन दरभंगा अबैत छलथिन्ह, तँ साहित्यक प्रति हुनका लोकनिक अत्यन्त सामीप्य रहबाक कारणेँ, बेसीकाल कवि-गोष्ठीक आयोजन होइत छल जाहिमे पहिले-पहिल 'मुसरीझा'क पाठ भेल छल । तकर बाद तँ 'मुसरीझा' कतेको ठाम संगृहीत भेल । कवि स्वयं एहि कविताकेँ 'नमस्या' मे पाछाँ संकलित कएल । हिनक 'मंगल पंचाशिका'मे सेहो प्रयोग भेल अछि, किन्तु ओ प्रयोग अछि निश्छल हृदयक स्वाभाविक उद्गारमे, भक्त हृदयक उच्छ्वासमे ओ उपास्यदेवक प्रति समर्पणक भावमे । इएह कारण अछि जे ई मातृकमे देल अपन नाम 'मुकुन्द'क प्रयोग एहि सभ प्रकारक भक्तिभावयुक्त पदमे कएल अछि ।

तन्त्रनाथझा प्रबुद्ध प्रांजल ओ प्रतिष्ठित शिक्षक, मर्मज्ञ साहित्यकार ओ व्यंग्य-वक्रोक्ति-हास्य-प्रयोगशीलताक कविक रूपमे बेसी प्रसिद्ध छथि । हिनक व्यक्तित्व सामाजिक ओ शैक्षिक उत्तरदायित्वसँ सेहो पूर्ण अछि । महाविद्यालयीय स्तरसँ विश्वविद्यालयीय स्तर धरि हिनक एहि रूपक योगदान सर्वविदित अछि । सम्पूर्ण बिहारमे जहिया महाविद्यालय शिक्षकक अधिकारपर प्रहार होइत रहैत छल ओ तकर उतारा देनिहार केओ नहि छल, ताहि समयमे तंत्रनाथझा शिक्षकलोकनिकेँ अपन अधिकार ओ कर्त्तव्यक

प्रति जाग्रत कएल, जे तहिया तँ सफल भेबे कएल, बादहुमे ओकर प्रयोगसँ अनेक अधिकार प्राप्त भए सकल। ई योगदान हिनक अपन समुदायक प्रति एकाग्र भावनाक प्रतिफल छल। तंत्रनाथझा संयत ओ मर्यादित नेता बनि समुदायक विकासक मार्गकेँ प्रशस्त करैत रहलाह। किन्तु, अपन प्राध्यापकीय जीवनक अन्तिम चरणमे ई विश्वविद्यालयक अधिकारिवर्गक उपेक्षाक कारणेँ सेवा-निवृत्तिक समयसँ किछु पहिनहि स्वयं सेवामुक्त भए गेलाह।

ई समाज, साहित्य ओ संस्थाक लेल उत्साहित भए कार्य कएल, जाहिमे संघर्षरत रहब हिनका बेसी कार्यक्षम बनबैत रहल। हिनक जीवन ओ साहित्यक संबन्धमे डॉ० 'श्रीश'क कथन उद्धृत करब समीचीन लगैत अछि – ''वस्तुतः (श्री) तन्त्रनाथझाक जीवन-परिचय आदर्श कर्म ओ संघर्षक एकटा ज्वलन्त इतिहास थिक। शैक्षणिक कार्य हो अथवा साहित्यिक कार्य, सामाजिक कार्य हो अथवा पारिवारिक कार्य, हुनका डेग-डेगपर संघर्ष करए पड़लन्हि। अपन साहित्य-रचनहि जकाँ अपन व्यावहारिक जीवनहु मध्य समाज ओ लोक-हितक हेतु नव-नव प्रयोग करबहिमे ई अपन जीवन बिताए देल, आजीवन दुष्करकेँ सुकर, असाध्यकेँ साध्य करवामे श्रम-क्लान्त ओ कहियो नहि भेलाह। जीवनक दीर्घसाधना ओ कठिन संघर्षक छाया हुनक मुखमण्डलपर बड़ ध्यानसँ देखलहिपर अनुभव कएल जाए सकैत अछि, अन्यथा एखनहुँ ओ सिन्धुसन धीर-गम्भीर ओ शान्त रहैत छथि, एखनहुँ हुनक अतल-भेदी दृष्टि अन्तस्तलकेँ स्पर्श कए अनायास सभटा रहस्यसँ अवगत कराए दैत अछि, एखनहुँ ओ जटिलसँ जटिल समस्याक ग्रन्थिकेँ सोझरएबामे अपन आगन्तुक लोकनिकेँ मार्ग-दर्शन करबैत रहैत छथि, एखनहुँ जे हुनक सम्मुख अबैत अछि, से हुनक विनोदी-स्वभाव रससँ आप्लावित भए जाइत छथि। आबहु ओ अपन समाज ओ साहित्यक प्रेरक तत्त्व छथि। परन्तु अपन प्रशान्त मुखमण्डलपर त्रिपुण्ड ओ अंग-प्रत्यंगमे अनेक प्रकारेँ रुद्राक्ष धारणकए जखन ओ एगारह गोट नर्मदेश्वरक स्तवन नित्यप्रति करए बैसैत छथि तँ शिवमय भए जाइत छथि, मुदा लौकिक कार्यसँ विरत नहि छथि। एहि वयसमे निर्लिप्तभावेँ कएल हुनक कर्मक प्रसाद पाबि सरिपहुँ साहित्य ओ समाज धन्य-धन्य भए रहल अछि।''

पचहत्तरिम वर्षक आयुमे एहि मनीषी कविक निधन दरभंगामे दिनांक ४ मइ १९८४ केँ भेलन्हि।

तन्त्रनाथझाक प्रतिभाक अवदानसँ मैथिली साहित्य समृद्ध भेल। हिनक शैक्षणिक, सांस्कृतिक, साहित्यक ओ सामाजिक क्षेत्रमे कएल गेल कार्यसँ समाज उपकृत भेल। एहि तथ्यकेँ समाजक बुद्धिजीवी वर्ग अवश्यमेव हृदयंगम करैत रहल तथा अपन कृतज्ञताकेँ विभिन्न प्रकारक सम्मान-अभिनन्दनक माध्यमसँ अभिव्यक्त करैत रहल। हिनक मैथिली सेवाकेँ देखैत १९७६मे पटनाक चेतना समिति अपन विद्यापति-स्मृति-पर्वक अवसरपर हिनक मैथिली-आन्दोलन ओ साहित्य सेवाक प्रति सम्मान व्यक्त करबाक हेतु हिनका

'ताम्रपत्र' समर्पित कएल । १९७९मे हिनक कृति 'कृष्णचरित' महाकाव्यपर साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित कएल गेलन्हि । १९८० मे हिनका जीवन आ कृतिक समग्र मूल्यांकन पूर्वक वृहत् अभिनन्दनग्रन्थ समर्पित कएल गेलन्हि । १९८१ मे संकल्प-लोक (लहेरियासराय) नामक साहित्यिक संस्था द्वारा अभिनन्दन कयल गेलन्हि । एहि अभिनन्दनक प्रशस्ति पद्यमे तन्त्रनाथझाक साहित्यिक उपलब्धि सबकेँ मार्मिक रीतिएँ रेखांकित करैत कहल गेल छल :–

मैथिलीक ग्रीवामे शोभित नवल पुष्पमय हार ।
बहु नक्षत्रेँ जगमग जगमग काव्य-गगन-विस्तार ।।
एक पुष्पकेर अभिनव आकृति अभिनव रंग, सुवास ।
नव नक्षत्रक नव किरणावलि, नव छवि, नवल प्रकाश ।।
नव वारिदसँ अविरल बरिसल नव-नव कविता बुन्द ।
मैथिलीक आङनमे पड़लनि तनिके नाम 'मुकुन्द' ।।
नव गति, नव यति, नव लय-भाषा, नूतन रचलनि छन्द ।
'कीचकवध' आ 'कृष्णचरित' सन सिरजल काव्य प्रबन्ध ।
नव उन्मेषशालिनी प्रतिभा, उत्तम जकर तपस्या ।
से दरसाओल काव्य जगतकेँ रचि कए अपन 'नमस्या' ।।
मैथिलीक उरमे धएल रचि नित नव नव मालिका ।
मैथिलीक मंगल कएल कृति 'मंगल-पंचाशिका' ।।

तात्पर्य जे तंत्रनाथझा साहित्यिक-समाजक हेतु एहन प्रेरणापुञ्ज छलाह जनिक जीवन साहित्यकेँ सतत आलोकित करैत रहल । सामाजिक रीति-नीतिक सम्यक् बोद्धाक रूपमे सेहो हिनक ख्याति रहल अछि । प्राध्यापकीय गरिमाक रक्षक तंत्रनाथझा सभ दिन शैक्षणिक वातावरणक परशुद्धिपर ध्यान दैत रहलाह । अतः हिनका साहित्यिक प्रज्ञापुरुषक रूपमे मानल जाए सकैत अछि ।

हिनक प्रकाशित ग्रंथक नामावली निम्नांकित अछि :–

कीचकवध एवं कृष्णचरित (प्रबन्धकाव्य), नमस्या एवं मंगलक पंचाशिका (मुक्तक काव्य), योगक संगी एवं लघुकथा (कथा संग्रह), एकांकी चयनिका (एकांकी संग्रह) नाट्य कथासार एवं हितोपदेशसार (सार-संक्षेप) ।

प्रबन्धकाव्य

मैथिली साहित्यमे प्रबन्धात्मक शैलीक काव्य-रचना कवीश्वर चन्दाझाक 'मिथिला-भाषा रामायण' सँ आधुनिक युगहिमे प्रारम्भ होइत अछि। एहि समयक अन्य महाकवि लोकनिमे कविवर लालदास छथि जनिक 'रमेश्वरचरित मिथिला रामायण' प्रबन्धकाव्य अछि। मुंशी रघुनन्दनदासक 'सुभद्राहरण' ओ सीतारामझाक 'अम्बचरित' सेहो एकर किछु समयक बादक रचना थिक। तंत्रनाथझाक रचना 'कीचकवध' मैथिलीक नव शैलीमे लिखल पहिल महाकाव्य थिक जकर प्रकाशन क्रमबद्ध रूपमे रमानाथझाक सम्पादकत्वमे दरभंगासँ प्रकाशित मैथिली 'साहित्य-पत्र' मे भेल छल ओ जे पुस्तकाकार भेल १९५३ ई. मे तथा सम्पूर्ण रूपेँ प्रकाशित भेल १९७७ मे। एहिमे कविक प्रारम्भिक, मध्यक ओ प्रौढ़– तीनू प्रकारक शैली एकहि ठाम भेटैत अछि। अमित्राक्षर छन्दमे रचना कए कवि मैथिली महाकाव्यक रचना-प्रक्रियामे एकटा नव अध्यायक श्रीगणेश कएल, एकटा नव ओ चमत्कारी प्रयोग कएल।

कीचकवध

पाश्चात्य महाकाव्य शैलीपर ई मैथिलीक सफल महाकाव्य थिक। ई महाकाव्य अमित्राक्षर छन्द, अंग्रेजीक ब्लैंकभर्समे रचल अछि तथा माइकेल मधूसूदनक 'मेघनाद-वध'क स्पष्ट प्रभाव एहिपर अछि। कवि स्वयं एकरा स्वीकार कएने छथि। परंच ई काव्य अछि सर्वथा मौलिक। एकर कलेवर बड़ छोट छैक। जेँ ई पाश्चात्य शैलीपर लिखल अछि तेँ भारतीय लक्षण एहिमे घटित नहि होइत अछि। मुदा महाकाव्यक स्वरूप ओ रचना-शैलीमे भिन्न रहितहुँ प्राच्य ओ पाश्चात्य–दुनू ठामक समान भावधाराक ई सम्बाहक अछि। रचना-शैलीक श्रेष्ठता, भारतीय पद्धतिक अनुकूल भलहि एहिमे स्पष्ट नहि होअए, चरित्र-विकास ओ भावनाक सुनियोजन (कम्पैक्ट फीलिंग्स)क जे चमत्कार एहिमे देखैत छी, ताहिसँ ई सर्वथा महाकाव्य सिद्ध होइत अछि। तीव्र प्रभावान्विति, जे महाकाव्यक हेतु आवश्यक तत्त्व अछि, से एहिमे पूर्णरूपमे विद्यमान अछि। चरित्र-चित्रण ओ चरित्र-

विकासमे प्रस्तुत महाकाव्यक तुलना मैथिलीक आन कोनो महाकाव्यसँ नहि भए सकैत अछि। भाषा हिनक संस्कृत-बहुल अछि, परंतु से बिनु भेलेँ अमित्राक्षर छन्दमे ततबा स्पष्ट नहि भए सकैत जाहिसँ पद पूर्ण हो। डॉ. जयकान्त मिश्र 'कीचक-वध' केँ सर्वाधिक सफल महाकाव्य मानैत छथि।

एहि महाकाव्यक कथानक महाभारतक विराटपर्वसँ लेल गेल अछि। कीचक कामुकताक प्रतीक अछि, अतः दण्डनीय अछि। स्त्रीक पातिव्रत धर्म, भीमक शौर्य, कामुक व्यक्तिक दुर्गति आदि तथ्यक अभिव्यक्ति एहि काव्यक माध्यमसँ भेल अछि। यद्यपि महाभारतीय कथामे कोनो तेहन परिवर्तन नहि भेल अछि, मुदा चरित्र-विकासक जे गहनतम योजना अछि, ताहिमे द्रौपदीक (सैरन्ध्रीक) आन्तरिक संघर्ष ओ अन्तमे आत्मबलक विजयमे मानेवैज्ञानिक पद्धतिक प्रयोग भेल अछि। ई मैथिली साहित्यक हेतु सर्वथा मौलिक वस्तु अछि। संवेग ओ मनःस्थितिक प्रत्येक मोड़केँ स्पष्टतापूर्वक चित्रित कएल गेल अछि। एक स्थलपर सैरन्ध्रीक मनःस्थिति एहि प्रकारेँ वर्णित भेल अछि :–

क्षत्रिय-पुत्रि, वीर-पत्नी, कुल नारि
निर्भय भए जाइत छी कीचक गेह
जे विभु कौरव सभा-मध्य मम लाज
राखल, जे विभु कएलन्हि ओहि विधि त्राण
सिन्धुराजसँ से विभु निश्चय आज
भए सहाय रखताह धर्म अक्षुण्ण।
शार्दूली की कखनहु पाबए त्रास
जम्बूकक, की ज्वलित तप्त अंगार
तृणचय सकय झोंकि ? की चम्पक त्रास
भ्रमर तुच्छ कए सकए कतहु उपभोग ?
जे हम कएल न तजि पाण्डव-पति पंच
आन पुरुष प्रति कखनहु स्वप्नहु चित्त
नहि कीचक कए सकत हमर तन स्पर्श।

'कीचक-वध' नओ सर्गक महाकाव्य अछि। एकर कथानकक प्रारम्भ राजा विराटक ओतए पाण्डवक अज्ञातवाससँ होइत अछि। ओतए सैरन्ध्री छद्म नामधारिणी द्रौपदी विराट रानीक सेविकाक कार्य करैत छथि। रानीक भाय कीचक सैरन्ध्रीक सौन्दर्यपर मुग्ध भए जाइत अछि। ई जनितो जे द्रौपदी गन्धर्वक पत्नी थिकीह, कीचक कामासक्तिक मार्गसँ पाछाँ नहि हटैत अछि। सैरन्ध्रीक अभ्यर्थनोपर रानी कीचकेक पक्ष लए लैत छथि। सैरन्ध्री कीचकक एहि कुत्सित भावनासँ भीमकेँ परिचित करा दैत छथि। एक राति भीम सैरन्ध्रीक रूप धारण कए कीचककेँ बजाए मारि दैत छथि।

'कीचक-वध' यद्यपि रचल गेल अछि पाश्चात्य शैलीपर, परञ्च भारतीय लक्षणक अनुकूल एहिमे प्रारम्भिक विनय-वाणी अछि । वाणी-दात्री भगवतीक अभ्यर्थना कवि प्रारम्भमे एहि हेतु करैत छथि जे ओ जाहि काव्यक सृजन कए रहल छथि, ताहिमे 'उपजओ नव-नव भाव' आ 'पंगु कल्पना पाबओ पद-संचार' । पुनः मैथिलीक वन्दना करैत कवि स्पष्ट कए देल अछि जे ओ हुनक पूजा अभिनव रीतिसँ करताह– 'अभिनव रीतिहि पूजब चरण पुनीत' ।

तदनन्तर कवि वन्दना करैत छथि व्यास द्वैपायनक, जनिक यश-परिमलसँ दिग्-दिगन्त सुरभित अछि तथा जनिक अनुसरणसँ कतोक व्यक्ति सुयश-लाभ कएलनि । महाकाव्यक कथानकक अनुकूल एहिमे वीर-रस प्रधान अंछि । प्रकृतिवर्णन ओ विविध अन्य वर्णनहुक यत्र-तत्र समावेश छैक । मुदा जँ एकर पद्धतिये किछु भिन्न प्रकारक अछि तँ, ओहि सभक प्रति विशेष मात्सर्य नहि देखाओल गेल छैक । चरित्रक विकासमे कवि सतत सचेष्ट छथि, से पतिपरायणा सैरन्ध्री आ महाबलशाली भीमसेनक चरित्रक उज्ज्वल घटनाचक्रसँ स्पष्ट भए जाइत अछि । लिखलनि ई माइकेल मधुसूदनदत्तक शैलीपर अंग्रेजीसँ प्रेरणा लए, मुदा विशेषता ई जे अंग्रेजीक उत्कृष्ट काव्यमूलतत्त्व ओ रचना-शैलीक ई मैथिलीमे साक्षात् प्रयोग कएल, ओ चमत्कार ई जे भाषा-भाव, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि इत्यादि विषयमे ई अपन भारतीय परम्पराक कट्टर अनुयायी बनल रहलाह । ई समन्वय हिनक असाधारण प्रतिभाक परिचायक थिक । यदि मैथिलीक माइकेल मधुसूदनदत्त हिनका कही तँ कोनो अत्युक्ति नहि ।

'कीचकवध' नवीन शैलीमे रचित महाकाव्य अछि । नवीनता एहि महाकाव्यक आन्तरिक स्वरूपहुमे स्पष्टतया भेटैत अछि । ओना अछि ई महाकाव्य महाभारतमूलक, किन्तु वस्तुविन्यासमे कवि अपन मौलिकताक परिचय सर्वत्र देल अछि । एहिमे मनोविज्ञानक उपयोगसँ मानव-मानसक जे चित्रण कएल गेल अछि, से मैथिली काव्यक हेतु नव प्रयोग अछि । सुदेष्णा एवं द्रौपदी-दुहू नारीपात्रक चित्रणक प्रमुख आकर्षण अछि कवि द्वारा प्रस्तुत मनोविश्लेषण । सुदेष्णा द्वारा कीचकक ओतए प्रेषित द्रौपदीक मानसिक द्वन्द्वक चित्रण अत्यन्त मार्मिक भेल अछि । द्रौपदी तत्काल असहाय होएबाक बोध रहितो लगले आत्मबलक उदयसँ स्थितिकेँ सम्हारबामे सफल होइत छथि । द्रौपदीक मानसिकताक चित्रण एकटा बिशिष्टताबोधक तत्त्वकेँ स्पष्ट करैत अछि । तात्पर्य जे प्राचीन कथा-वस्तुकेँ सेहो कवि मनोवैज्ञानिक विश्लेषणक एहि नवीन आवरणसँ सुशोभित कए जाहि रूपमे प्रस्तुत कएलन्हि अछि, ताहिसँ कथात्मकतामे नवीनताक उद्भावना भेल अछि । एहि ठाम कविक सृजनशीलताक अभिनव बानगीसँ परिचित होएबाक अवसर भेटैत अछि । इएह 'कीचक-वध'क रचनाक मूल आधार प्रतीत होइत अछि । विषयक वर्णनमे चमत्कारक सृष्टिसँ कथाक्रममे कतहु गतानुगतिक नहि अछि से तँ स्पष्ट होइतहि अछि, संगहि

संचरणशील काव्य प्रसंगसँ उद्‌बोधित समालोचक एहि काव्यात्मक वर्णनमे सम्पूर्णता सेहो देखैत छथि । भीम ओ कीचकक युद्धवर्णन अत्यन्त रोचक ओ लोमहर्षक भेल अछि । अनेको पुराण-प्रसिद्ध युद्ध, यथा–इन्द्र-वृत्रासुर, तारक-स्कन्द, इन्द्र-वैरोचन, पद्‌मनाभ-कैरभ, शिव-अन्धक आदि सभसँ एहि युद्धक उपमा दए कवि विशद् शास्त्रीय ओ पौराणिक ज्ञानक परिचय देल अछि । बीच-बीचमे परिस्थितिजन्य हास्यरसक समावेश सेहो भेल अछि । नीतिक वचन आ सूक्ति सेहो एहिमे यत्र-तत्र भरल पड़ल अछि ।

'कीचक-वध' महाकाव्यक विषय-वस्तुक विवेचनसँ पूर्व एकर रचनाक सामान्य ऐतिहासिक इतिवृत्तसँ परिचित होएब आवश्यक । ई प्रथमतः मैथिली 'साहित्यपत्र' मे १९३७ मे प्रकाशित भेल ओ प्रकाशित होइतहि लोकप्रिय भए गेल । किन्तु साहित्यपत्रक प्रकाशन बन्द होइतहिँ एकर रचनाक क्रम सेहो शिथिल भए गेल–ई तथ्य कवि स्वयं एहि महाकाव्यकेँ सम्पूर्ण रूपमे प्रकाशमे अनैत १९७७ क संस्करणमे कहल अछि । वैशिष्ट्य तँ ई अछि जे अपूर्ण कीचकवध छओ सर्ग मात्रक प्रकाशनहिसँ बेस लोकप्रिय भए गेल । रमानाथझा, जयकान्त मिश्र आदि श्रेष्ठ आलोचक लोकनि मुक्तकंठे एहि नवीन महाकाव्यक भूरि-भूरि प्रशंसा कएल । वस्तुतः कीचकवधक रचना मैथिली प्रबन्धकाव्यक हेतु एकटा अविस्मरणीय इतिहास अछि ।

कीचकवधक कथावस्तु महाभारतक विराटपर्वक कथापर आधारित अछि । विराट पर्वक ओ कथा जाहिमे पाण्डव द्रौपदीक संग अज्ञातवासमे राजा विराटक ओतए छद्‌मनामसँ रहैत छथि ओ कामुक कीचकक वध भीम द्वारा कएल जाइत अछि । एही कथानककेँ दश सर्गमे बाँटि, मनोज्ञ वर्णनक माध्यमे कथावस्तुकेँ सम्पूर्ण रूपमे देखाओल गेल अछि । डॉ. 'श्रीश' कहैत छथि–"तन्त्रनाथझा महाभारतक विराटपर्वसँ (पाण्डवक) अज्ञातवासक कथा लए ओकरा एहि प्रकारेँ सर्गबद्ध कएलन्हि जे कोनहु ठाम अप्रासंगिकता नहि आबि सकल । कोनहु प्रकारक वर्णन–ऋतु वर्णन हो अथवा रूप वर्णन हो–कथानकक समुचित विकासमे बाधक सिद्ध नहि भेल । किंतु एतए ई कहब युक्तिसंगत जे कवि सम्पूर्ण रूपमे कथावस्तुकेँ परम्परागत रूपमे स्वीकार कएल अछि, अपितु अपन अन्तःस्पर्शी प्रेरणा ओ अध्ययनक साक्षात् परिचय कथावस्तुक नवीन उद्‌भावनाक माध्यमे यत्र-तत्र देल अछि ।"

महाकाव्यक विविध तत्त्व–कथावस्तु, चरित्र, रस, वर्णन आदि सभमे कवि नवीनताक प्रयोग कएल अछि, आधार किन्तु सभठाम परम्परागत अछि । प्रसंगानुकूल पात्रक माध्यमे अभिव्यक्ति कराए कवि कतहु वर्णन किंवा चरित्रमे शिथिलता नहि देखाओल अछि । कीचकक वध भीमक माध्यमे भेल अछि अवश्य, तँ भीम नायक छथि सेहो कहब, किन्तु अछि ई नायिकाप्रधान महाकाव्य, कारण सम्पूर्ण घटनाचक्र तँ द्रौपदीक चरित्र, संकल्प, कर्त्तव्य ओ वक्तव्य तथा योजनाक माध्यमहि चलैत अछि । तेँ कीचकवध

महाकाव्य एकटा नवीनता रखने अछि, से स्वीकार करहि पड़त। संयत रूपेँ शिष्ट वर्णनसँ काव्यक विशेषताक उद्घाटन सहजे संभव होइछ ओ कीचकवधमे ओकर निश्चित दर्शन होइत अछि। तेँ कहब जे सूक्ष्म चरित्र-चित्रण ओ विशिष्ट वर्णन–एहि महाकाव्यक ई दुइ गोट आकर्षक आधार अछि। कथानककेँ रुचिपूर्ण बनाएब तँ कविक कार्य थिक ओ कवि एहि महाकाव्यक कथा-क्रममे विपुल घटनाक संघटन कए एकटा नव परिपाटीक विकास कएल अछि। ई घटना सभ मनोवृत्तिक सूक्ष्म विश्लेषण ओ कथा-क्रमक सम्पर्कसँ भेल अछि। 'कीचक-वध' अछि तँ चरित्रप्रधान काव्य ओ से चरित्र सभ आधारित अछि मनोवैज्ञानिक विश्लेषण ओ पृष्ठभूमिपर। आओर तेँ एहि महाकाव्यक प्रत्येक पात्रक चरित्रमे एकटा विशेष प्रकारक दृष्टिकोणसँ परिचय भेटैत अछि से थिक मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि–जे एहि महाकाव्यकेँ नवीन रचना-कौशलसँ पूर्ण होएबाक विशेषता प्रदान करैत अछि।

'कीचकवध'' महाकाव्यमे वीर रसक प्रधानता अछि। ओना सामान्य रूपसँ उत्साहजनित आवेग तँ भेटितहि अछि, किंतु क्रोधजनित भावक प्रभाव सेहो बेसी ठाम देखबामे अबैत अछि। जहिना वीररसक परिपाक स्वाभाविक रूपेँ एहि महाकाव्यमे भेल अछि, तहिना रौद्ररसक परिपाक सेहो पूर्ण स्वाभाविकताक संग भेल अछि। किन्तु 'कीचक वध' वीररसात्मक काव्य ओ अन्य सब रस रौद्रादि समेत, अंग रूपमे अछि। सामान्यतः पौराणिक महाकाव्य सभमे शृंगार, वीर, शान्त, करुण आदिमेसँ एकटा रस अंगी रहैत आएल अछि, 'कीचकवध' मे सेहो एहि परिपाटीक अवलम्बन कएल गेल अछि तथा वीर-रसकेँ अंगी बनबैत अन्य सभ रसकेँ अंग रूपमे प्रतिष्ठित कएल गेल अछि। ओहुना रौद्ररस प्रतिनायकमे बेसी होइत अछि, धीरोद्धत नायकक लक्षण होइत अछि। एहि तथ्यकेँ मुख्यता प्रदान करब कविक दृष्टि प्रायः नहि रहल अछि।

वर्णन महाकाव्यक स्वरूपक शृंगार ओ वस्तु, चरित्र तथा रसक सामान्य विश्लेषणक आधारक संग-संग आकर्षणक आधार अछि। काव्यकेँ बेसी आकर्षक बनएबाक हेतु विविध प्रकारक वर्णनक प्रयोग कएल जाइत अछि। प्रकृतिवर्णन एहिमे मुख्य होइत अछि। ऋतुवर्णन, वन, पर्वत, नदी आदिक वर्णनक संग-संग विशिष्ट पाबनि, घटना, सूर्य, चन्द्रमा, सन्ध्या, प्रभात, रजनी आदिक वर्णन होइत अछि। चारित्रिक वर्णनक श्रेष्ठतामे एहि प्रकारक वर्णनक आवश्यकता होइत अछि। एहि सब वर्णनमे अलंकारक प्रयोगादिक माध्यमसँ तथ्यकेँ आकर्षक ओ हृदयग्राही बनाओल जाइत अछि। एही क्रममे प्रकृतिक मानवीकरण कए वर्णनकेँ मनोज्ञ बनाओल जाइत अछि। ई वर्णन सभ प्राच्य ओ पाश्चात्य दुहू क्षेत्रक महाकाव्यमे विपुलताक संग द्रष्टव्य अछि। 'कीचकवध' मे भाव ओ वस्तु-वर्णनक स्वाभाविक ओ चामत्कारिक रूप देखबामे अबैत अछि।

अतः महाकाव्यक रूपमे 'कीचकवध' एक नवीन प्रयोगक संग उपस्थित भेल अछि

तथा एहि प्रयोगक सफलतापर आलोचक लोकनि मन्त्रमुग्ध छथि। शैली अभारतीय, शिल्प नवीन, मुदा आदर्श भारतीय–एतेक तत्त्वक समन्वयसँ कीचकवधक शिलान्यास भेल अछि। तेँ प्रकृति कीचकवधक कथाक अंग रूपमे उपस्थित बुझि पड़ैत अछि। वर्णन-सौन्दर्य, चातुरी एवं कौशल स्पष्ट करबाक हेतु चित्रित अछि आओर एहि प्रकारेँ अपन वर्णनात्मक रूपमे प्रकृति वस्तुपरक आधार अछि। कीचकवधक भाषा विशुद्ध रूपमे प्रबन्धात्मक शैलीक काव्यक हेतुएँ उपयोगी अछि। शब्दक एहन सुरुचिपूर्ण विन्यास कवि-कौशल ओ वस्तु-प्रकाशमे अत्यन्त सहायक भेल अछि–

निष्प्रभ भेल दिवाकर गतमर्याद,
विगत सकल ऐश्वर्य, सकल बल-दर्प,
पश्चिम गगन-जलधि पिय डूबल जाए।

साहित्यिक परिशीलन

'कीचक-वध' महाकाव्यमे नायक भीम छथि। किंतु सभसँ विचित्र तँ ई जे भीम अथवा अन्य कोनो पाण्डव अज्ञातवासमे रहलाक कारणेँ, एखन अपन परिचय स्पष्ट नहि कए सकैत छथि। किंतु प्रच्छन्न रूपेँ नहि, स्पष्ट रूपेँ द्रौपदीक अपमान होइत देखब पाण्डव सदृश वीर, विवेकी ओ शौर्यसम्पन्न व्यक्तित्वक हेतु कठिन होइछ। एक तँ स्त्रीक अपमान सहब हिनका लोकनिक स्वभाव नहि, दोसर द्रौपदी सदृश स्त्रीक अपमान जे पाण्डवक पत्नी छथि, सहन करब कापुरुष ओ कायर चरित्रक बोधक अछि। एहन स्थितिमे पाण्डव लोकनि, जे अपनाकेँ छद्मरूपमे विराट नरेशक ओतए आश्रय लेने छथि, अपन परिचय बिनु स्पष्ट कएने कोना एहि समस्याक समाधान कए सकैत छथि तकर प्रयास करैत अन्ततः भीमक कौशल, वीरत्व शक्ति ओ शौर्यक प्रतापसँ कीचकवध होइत अछि। एहि रूपमे समस्याक कहुना समाधान भए पबैछ। उक्त समस्याक निवारणक विमर्शक समयक मानसिक ऊहापोह ओ स्थितिक आकलन कोनो विदग्ध मनोविश्लेषक कए सकैत छथि। भीमक उक्तिसँ एहि तथ्यक पुष्टि होइछ :–

"सभा-सद्म बिच सहि कौरव-उपहास,
दुःशासन-कृत कृष्णा-दुर्गति देखि,
जाहि सुमरि एखनहु होइछ रोमांच,
अविचल सहल सकल भए बन्ध्य-क्रोध,
वन-वन विचरण करइत भए गृहहीन,
सहइत उपर्य्युपरि नित दुस्सह क्लेश,
बारह वर्ष बिताए निराश्रय भेल,
करइत ई अज्ञातवास व्रतरूप,

अन्तप्राय जखन सम्प्रति कए लेल,
तखनुक कीचककृत ई दुर्व्यापार
थिक जनु विपद्वृश्चिकक पुच्छक दंश ।''

औनाइत मोनक एहन भाव जाहिमे कार्यसिद्धिक व्यग्रता, परिस्थितिजन्य आकुलता, शौर्य ओ दीप्तिपूर्ण पौरुष पर्यन्तकेँ झकझोरि सकैत अछि–तकर ई उदाहरण अछि । तेँ अपन विचार सोझ ओ स्पष्ट रूपेँ भीम रखैत छथि :–

''बल-दर्पित जघन्य नहि सामक साध्य,
भीम न सीखल बैसल करए विचार,
से जीतए जे करइछ प्रथम प्रहार ।
पाबि पराभव जे बैसथि कर जोड़ि,
करइत अपन सहन-शक्तिक व्यवहार,
पौरुष तनिक सिरजि बहुविध सन्ताप
होइछ व्यर्थ यथा यौवन विधवाक ।
जे भए अवमानित बैसथि भए शान्त,
थिक तनिकासँ बर बरु बाटक धूलि,
पादाहत भए जे माथहि चढ़ि जाए ।''

सामान्यतः भीम सदृश बलशाली पुरुषक चरित्रमे बुद्धि-कौशलक एहन स्वरूप प्रायः देखल नहि जाइछ । किन्तु 'मध्यम पाण्डव' भीम शक्ति-पौरुषसँ दीप्त स्फीत बुद्धिक विराट व्यक्तित्व सभक संगहि छलाह तेँ हिनकहु विचार बुद्धिमत्तापूर्ण होएब स्वाभाविक अछि । समय ओ अवसरक कसौटीपर उचित रहएवला हिनक बुद्धिक विलक्षणता द्रष्टव्य :–

''सह्य करब हम द्रौपदीक अपमान
गनइत शेष कुदिन प्रतिशोधक हेतु
धए संयोगि क्रोध-विष, सर्प समान,
जाधारि दिनकर-किरण रहैछ अनुष्ण,
किन्तु चित्त होइछ नितान्त उद्विग्न
कोनपरि कृष्णा खेपति अवधिक शेष
निरवलम्ब एकसरि निरीह असहाय
एहि वनोपम पुरविच मृगी समान
क्षुधित–व्याघ्र-सम खल-कीचकक अछैत ।
घटित-विपत्ति न तादृश चिन्तयितव्य
यथा विपत्यावृत्तिसिरासोपाय ।।''

117132
9.12.04

दोसर दिशि कीचक कामान्ध भेल अपन इच्छाशक्तिसँ पराभूत असाध्यक

प्राप्त्याशामे 'ताबत' सफल मनोरथ भेल, परम आह्लादित भए प्रमुदित होइत अछि :–

"कीचक भावए मन-मन जीवनधन्य,
आज हमर चिरकांक्षित कए उपलब्ध ।"

किन्तु कीचक मोनक भाव किछुए समय धरि स्थिर रहल । अनन्तर अपन हृदयक स्वरक अपलापमे समस्त परिमण्डलक स्वरसँ अनभिज्ञ भेल ओकर अन्त आबिए गेल । ओकर पापयुक्त अभिप्रायक समाप्ति भेल भीमक बलिष्ठ हाथसँ :–

"हन-हन मुष्टिक चट-चट पड़ए चपेट,
वेणुस्फोट सदृश करइत स्वर घोर ।"

तथा अन्ततः

"पराभूत कीचक कएलक चीत्कार
आर्त्तनाद करइत भए शिथिल शरीर ।
मेरुदण्डपर निज गरिष्ठ उरु चापि
ललकि भीम धिक्कारि-कहल,
पापिष्ठ,
शठ, पामर, मदान्ध, कुत्सित, खल नीच,
परदारा-लम्पट, अएलें मन बाँटि
करब एतए सैरन्ध्री-सुख-सम्भोग,
भेटलहु आबि कराल सपत्न कृतान्त ।
सैरन्ध्री-कण्टक, तोहि झट संहारि
करब शान्त सम्प्रति प्रज्वलित अमर्ष ।"
ई कहि कीचक-मेरुदण्ड कए भङ्ग ।
पदाघातसँ विघटित कए सब अस्थि,
वाम चरण धए मस्तक कएल विचूर्ण,
कीचक भए निष्पन्द भेल निष्प्राण ।

उपर्युक्त समस्त स्तरपर कथानायक भीमक बल, शौर्य, विवेक ओ बुद्धिक अद्भुत विलक्षण स्वरूपक परिचय होइत अछि ।

कवि 'कीचक-वध' मे चरित्रक अवतारणामे प्रकृतिक सहयोग लेल अछि, संगहि प्रकृतिक मानवीकरण कए कल्पना ओ यथार्थक समन्वय देखाओल अछि । एहि स्थलपर कल्पनाक चमत्कार आकर्षक रूपमे प्रस्तुत भेल अछि :–

"जनि सुन्दर-सुविशाल-रसाल सनाथ-
मालति, कुसुम-भार-नत, जकर सुगन्धि
लए-लए पवन करए जनमन आनन्द

नियति क्रमहि पाबए दुस्सह आघात
झंझानिलक, होअए आश्रम-द्रुम नष्ट ।''

एहि पंक्तिमे प्रकृति अपन सौम्य प्रबल दुहू रूमपे अवतरित भए महाकाव्यीय चरित्रक स्वाभाविक स्पन्दनक संग अपन सम्बन्ध स्थापित करैत अछि । पुन :–

''किन्तु समीपहि ठाढ़ि,
कृष्णा सुन्दरि जनि सरसिज सर-बीच
चपल हास-परिहास-जलहिँ निर्लिप्त,
ग्रसल भाग्य-रवि तनिकर दुर्दिन-राहु,
अस्फुट तैँ मुख-सरसीरुह ।

एहिमे परिस्थितिजन्य कष्टक तादात्म्य प्राकृतिक सुलभ पुष्पसँ कए कवि एक-दोसराक सहयोगी बनाए जेहन दृश्य उपस्थित कएल अछि, ताहि प्रति आकर्षण स्वाभाविक जागृत भए जाइछ । यथा :–

''कुन्द-कुसुम पीयर-सित केसर-युक्त
हरित पत्रचय, श्याम मधुप मधुलुब्ध
करए अनुक्षण चउदिसि मधुर निनाद,
जनि समृद्ध जन विविध विभव-सम्पन्न
सेवए लोभहिँ लोलुप लोक-समूह ।''

एहिमे प्रकृतिक मधुरतम स्वरूपक सामान्य जीवनक लोभमे ग्रासित मनक संग जे तादात्म्य देखाओल गेल अछि, निश्चये से सर्वविध स्वाभाविक अछि ।

प्रकृतिवर्णनमे 'कीचकवध' मे नव ओ स्वाभाविक स्वरूपक परिचय तँ होइतहि अछि संगहि ई सम्पूर्ण स्वरूप मुख्यतः आलम्बन, उद्दीपन, अन्योक्ति, उपदेश-कथन, मानवीकरण तथा अलंकार-विधानक रूपमे देखाओल अछि । अनेक स्थलपर एहि रूपक दृश्य देखबामे अबैत अछि । आलम्बन रूपमे भीम-अर्जुनक विचार-विमर्श, जे ओ लोकनि द्रौपदीक द्वारा कीचकक प्रणय-प्रस्तावकेँ स्वीकार कए कीचककेँ मत्स्याधिपक नृत्यागारमे एकान्त स्थानमे बजाओल गेलापर करैत छथि, द्रष्टव्य थिक :–

''चन्द्र-किरण-चुम्बित भूमण्डल आज,
साओन-रजनि शोभ नभ-मण्डल मध्य,
मेघ-राशि नाना रूपक लघु-दीर्घ ।
मेघ-खण्ड अनुपम परिवर्त्तनशील,
किछु खन कए संचित होअए पुनि व्याप्त,
नभ-मण्डलमे गहए अमाक स्वरूप ।
केतकि कुसुम प्रफुल्ल, शोभ-जनु इन्दु
खण्ड-खण्ड कए खसल गेल छिड़िआए ।''

तहिना, उद्दीपन विभावक रूपमे प्रकृतिक स्वरूप एहि महाकाव्यमे स्वाभाविक रूपेँ देखाओल गेल अछि :–

"रहि-रहि घन गर्जन कर जे सुनि त्रस्त
विमुख कामिनी पिअकाँ कए आबद्ध
बाहुपाश दए अपनहि तेजए मान ।
उमरल वारिवाह, लखि मत्त मयूर
करए नृत्य करइत कल मादक गान,
जे सुनि प्रोषित्पतिका आतुर-प्राण
नयनहि ज़ल वरिसाबए मेघक संग ।"

प्रकृतिक मानवीकरणक छटा 'कीचक-वध'क तृतीय सर्गमे सन्ध्या-वर्णन-प्रसंगे सूर्य एवं सन्ध्यापर क्रमशः दक्षिण नायक ओ सच्चरित्रा (पतिव्रता) नायिकाक क्रिया-कलापक आरोप करैत कवि देखाओल अछि :–

"देखल जखन ताहि ऊन्ध्या-सुकुमारि
प्रस्तुत ततए पापमति अति उद्दण्ड
कर बढ़ाए उद्धत आलिङ्गन हेतु,
भेलि परम संक्रुद्ध, घनहि तन कान्ति
भेल राग-रञ्जित प्रतप्त-कनकाभ ।
निष्प्रभ भेल दिवाकर गत-मर्य्याद
विगत सकल ऐश्वर्य, सकल बल-दर्प,
पश्चिम गगन-जलधि बिच डूबल जाए ।"

एहिना, अलंकार-योजनाक रूपमे प्रकृतिक प्रयोग कए कवि 'कीचक-वध' महाकाव्यमे वर्णनक सश्रीकता स्पष्ट कएल अछि । अपह्नुति एवं निदर्शना अलंकारक चित्र एतए द्रष्टव्य :–

शुक्लपक्षक रात्रिवर्णनमे कविक उक्ति :–

'तारक न्यूनाधिक द्युतिमान
पूरल गगन विधाता की एहि हेतु ?
देखओ जन, जनु होअओ निज गुण-मत्त
जनु पुनि होअओ हताश पाबि गुण न्यून,
विश्वमध्य अछि ककर गर्व अक्षुण्ण ।"

अन्तिम पंक्तिमे अर्थान्तरन्यास अलंकारक स्वरूप स्पष्ट अछि । एहिना उत्प्रेक्षा-रूपक-अनुप्रासक प्रसंग उदाहरणक रूपमे :–

"लागए कतहु शैल-श्रेणीक समान
ठाम-ठाम उत्तुंग शृंग-संयुक्त ।

कतहु लाग जनु गगन-सरोवर मध्य
क्रीड़ा करए मत्त मातंगक यूथ ।''

अर्थालंकारक सदृश शब्दालंकारक वर्णन सेहो यथेष्ट मात्रामे भेल अछि। अलंकारक एतेक प्रयोग होइतहुँ कखनहुँ वर्णन अस्वाभाविक नहि भेल अछि । अनुप्रास अलंकारक उदाहरणमे :–

''पत्नी पंच पाण्डवक, द्रुपद सुपुत्रि,
पति-प्राणा, कुलवधू-कुरुक सुकुमारि
रति-लज्जाकर जनिकर अनुपम रूप,
पति अज्ञात-वाससँ छथि-असहाय ।''

पुनः –

''किंशुक, चम्पक, बकहुल, बकुल, नेबारि,
पाटलि-पटलि, मल्लिका, माधवि-मंजु,
ज़नि अवनी ऋतुराजक स्वागत-जन्य
नूतन वसन-विभूषण पूरल अंग ।''

प्रकृति वर्णन ओ अलंकार वर्णनक अतिरिक्तो महाकाव्यमे वर्णनक अनेक क्रम अछि, किन्तु सभक आधार होइत अछि कथातथ्यक विश्लेषण । एतए ई स्वीकार करक चाही जे कवि स्वतंत्र होइत छथि, किंतु ओतबे दूर धरि जे ओ साहित्यक सामान्य रसभाव-बोधमे अस्वाभाविक नहि भए पाबए । तंत्रनाथझा एहि भावकेँ ग्रहण करैत कथानकक स्वाभाविक गतिकेँ तीव्रता प्रदान करबाक हेतु कखनहुँ अनगढ़ल तथ्यक निष्पादन नहि कएल अछि । एतबा अवश्य जे भावोद्बोधनक हेतु ई नव स्वरभंगिमाकेँ स्वीकार कएल, किंतु ओतहु ताहि रूपेँ मर्यादित रहलाह जे स्वाभाविक रूपमे विषय-बोधमे कोनो अवरोध नहि होबए देल । अमित्राक्षर छन्द नव अवश्य छल मैथिली प्रबन्धकाव्यक हेतु, किंतु ओकर परिचालन कवि ताहि रूपेँ 'कीचकवध' मे कएल अछि जे ओ कखनहुँ अनसोहाँत नहि लागत । एहि सन्दर्भमे डॉ. 'श्रीश'क वक्तव्य द्रष्टव्य अछि :–

''एहि रूपक काव्यमे प्रत्येक पद स्वतंत्र तँ रहितहि अछि अपन भावक अभिव्यक्तिमे अपनहिमे पूर्ण सेहो होइत अछि । परंच कवि तंत्रनाथझा एहि बन्धनकेँ सम्पूर्ण रूपमे स्वीकार नहि कए ताहि रूपमे प्रस्तुत कएल जे एहिमे निहित भाव-प्रवाहमे एक गति आबए तथा ओ कखनहुँ व्यतिक्रमसँ ग्रस्त नहि रहए । प्रत्येक भावक आरोह-आवरोहक गतिकेँ कवि जाहि प्रज्ञा ओ अनुशासनमे बान्हि प्रस्तुत कएल से निश्चये कविताक प्रत्येक स्थितिकेँ अपनामे पूर्ण करैत तुक ओ तानकेँ स्थिर करैत रहल अछि । पहिल पंक्तिमे वाक्यक पूर्णता तथा पुनः दोसर पंक्तिक बादक पंक्तिक पूर्णता सेहो देखएमे आओत ।''[१]

१. एक्सपेरीमेंट्स ऑफ मैथिली पोएट्री, इंडियन लिटरेचर, भाग XXL संख्या २, पृष्ठ १३६

कृष्णचरित

तंत्रनाथझाक ई दोसर महाकाव्य थिक जे कीचकवधसँ सर्वथा भिन्न शैलीमे लिखल गेल अछि । परम्परित शैलीमे रचित एहि कृतिपर कविकेँ १९७९क साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ अलंकृत कएल गेल छलन्हि ।

ई श्रीमद्भागवतक दशम स्कन्धक अठारह गोट श्लोक मात्रक आधारपर रचल गेल अछि । एहि महाकाव्यमे कविक प्रतिभाक योजनाबद्ध विकास देखएमे अबैत अछि। वस्तुनिष्ठ वर्णन होइतहु स्वाभाविकताक निदर्शन सर्वत्र होइत अछि । कृष्णचरित्रक व्यापकताकेँ निबद्ध करबामे, अपन साहित्यिक दीर्घ अनुभवक सहयोगसँ कवि एहि महाकाव्यमे जाहि कौशलक परिचय देल अछि, स्वतः स्फूर्त्त विविध तत्त्वक विश्लेषण जाहि रूपमे कएल अछि–वस्तुतः एहि ग्रंथक से सार्वजनीन विशेषता भए गेल अछि ।

भारतवर्षमे श्रीकृष्णक चरित्रपर आधारित जतेक साहित्यिक सामग्री उपलब्ध अछि; प्रायः अन्य कोनो साहित्यिक आधार ओतेक लोकप्रिय नहि अछि । किन्तु, श्रीकृष्णक चरित्रक किछु एहनो रूप अछि जाहि आधारपर समस्त भारतीय साहित्यमे बड़ थोड़ रचना भेल अछि । यद्यपि एहिसँ चरित्रक एहि भागक महत्त्वमे कोनो कमी नहि अबैछ, किंतु हुनक चरित्रक व्यापकतामे एहि रूपसँ परिचय किछु थोड़ अवश्य भेटैत अछि । विविध पुराणहुमे श्रीकृष्णक चरित्र एहि भागक सम्बन्धमे थोड़ कहल अछि हुनक चरित्रक अन्य पक्षक तुलनामे, ओ से चरित्र थीक श्रीकृष्णक छात्रजीवनक समय, जे ओ ऋषि सन्दीपनिक आश्रममे अपन सखासभ आ अग्रज बलरामक संग बिताओल । एही कथानकक चर्चा श्रीमद्भागवतक दशम स्कन्धक अठारह गोट श्लोकमे अछि । लीलानायक श्रीकृष्ण, गीतागायक श्रीकृष्ण, अनेक भयंकर, दुर्द्धान्त असुरक वध कएनिहार श्रीकृष्ण, गुरुक समक्ष केहन स्नेहिल, उत्सुक, जिज्ञासु बनल रहैत छथि तथा कोनो तत्सामयिक परम्परानुकूल गुरुदक्षिणाक कठिन परीक्षामे सेहो उत्तीर्ण होइत छथि– से देखए योग्य अछि । आजुक शिक्षापद्धतिक क्रममे ई एकटा अनसोहाँत ओ अनर्गल सन कथा लगैत अछि किन्तु एकर पारम्परिक ओ शास्त्रीय महत्त्वकेँ के नकारि सकैत अछि, ओ तेँ ई ग्रन्थ समसामयिक रूपमे सेहो ओतबे लोकप्रिय अछि ।

कथावस्तु

श्रीकृष्णक कैशोर वयक कथाकेँ महाकाव्यमे निबद्ध कएल गेल अछि। बारह सर्गक एहि महाकाव्यमे कृष्णक ओहि स्वरूपक वर्णन अछि जे प्रायः समस्त भारतीय साहित्यमे विरल रूपमे भेटैत अछि । पुराण ओ अध्यात्मक एहि कथाकेँ संरचनाक संश्लेषणसँ सर्वोपयोगी बनाए कवि काव्यक विषयक क्षेत्रमे एकटा नवीन उद्भावना कएल अछि ।

सामान्य शिष्टाचार ओ रचना-प्रक्रियाक परिपालन कंरैत कवि ग्रंथक प्रारम्भ दुर्गा, माधव, गणपति ओ सरस्वतीक वन्दनासँ करैत छथि, अनन्तर सज्जन-दुर्जन ओ मुनि सन्दीपनिक आश्रमक प्राकृतिक छटाक वर्णन होइत अछि। संदीपनि ऋषिक छात्रक संग आदर्श सम्बन्ध ओ ज्ञानक आधार गुरुक गम्भीरता सेहो वर्णित अछि। श्रीकृष्ण ओ बलरामक बटुक रूपमे एही क्रममे आश्रममे गुरुक संग प्रवेश होइत अछि। आश्रमक सभ छात्रक श्रीकृष्ण ओ बलरामसँ परिचय होइत अछि। गुरु सुदामा नामक वरिष्ठ छात्रकेँ कृष्ण ओ बलरामक निरीक्षणक भार दैत छथि। पुनः श्रीकृष्णकेँ आश्रमक नियमक पालन तत्परतासँ करैत देखाओल गेल अछि। पुष्पचयनसँ लए समिधासंचय धरि सभ कार्य ओ पूर्ण मनोयोगसँ करैत छथि, गुरु हुनकापर पूर्ण प्रसन्न छथिन्ह।

एही क्रममे वनमे समिधा-संचयक हेतु सुदामाक संग कृष्णक जाएब, ओतए कार्यमे अबेर होएब, बिहाड़ि उठब, फँसि पुनः वनहिमे रहि जाएब, झंझावातक वर्णन, रातिमे वुभुक्षा जोर भेलापर सुदाम द्वारा आनल सम्पूर्ण केराक घौर, कृष्णकेँ सूतल बूझि हुनक मुह देखि-देखि कए खाएब, पश्चात् श्रीकृष्णक उठलापर भूखक आकुलता, दुइयो छिम्मरि केरा नहि छोड़ि देबाक धिक्कार, सुदामाक लज्जित होएब, पुनः श्रीकृष्णक सान्त्वना देब आदि-कथा वड़ स्वाभाविक रीतिए संघटित कएल गेल अछि। एम्हर गुरुक चिन्ता ओ रातिभरि आसनपर बैसल जप करिते रहि जाएब, आदि कथा वर्णित अछि। प्रातःकाल आश्रमक सभ छात्र प्रयास कए कए श्रीकृष्ण ओ सुदामाक वनमे अन्वेषण करैत छथि ओ सभक संग आश्रम अबैत छथि। अनन्तर प्रकृतिवर्णन, पावनि-तिहारक वर्णन ओ बादक सर्गमे देवकीक वात्सल्य-वियोगक वर्णन अछि।

पश्चात् बसुदेवक आग्रहसँ महाराज उग्रसेन उद्धवकेँ कुमारक सभ समाचार ओ शिक्षामे आओर कतेक दिन लगतन्हि से समाचार आनक हेतु आचार्य सन्दीपनिक आश्रम अवन्तीपुर जएबाक आदेश दैत छथि। उद्धवकेँ सन्दीपनि मुनिक अवन्तीपुरक आश्रम पहुँचलापर ओतए केओ भेटैत नहि छन्हि। पश्चात् ज्ञात होइत छन्हि जे सभ केओ गुरुक संग प्रभास क्षेत्र मास करबाक हेतु गेलाह अछि। ओतए पहुँचि उद्धव आओर विचित्र स्थितिमे भए जाइत छथि, कारण गुरु सन्दीपनिक पुत्र समुद्र-स्नानसँ घुरलाह नहि, ओतहि लुप्त भए गेलाह, तेँ सभ केओ चिन्तित छथि। कृष्ण ओ बलराम कतए गेलाह से केओ नहि जनैछ। गुरुपत्नी पुत्र-वियोगमे मूर्च्छिता छथि ओ सभकेओ हुनका सोमपीठ लए गेल छथिन्ह। ता एम्हर शंखक शब्द होइछ। बड़का शंख धारण कएने कृष्ण एक हाथेँ ओकरा बजबैत ओ दोसर हांथेँ गुरुपुत्रकेँ लदने अबैत छथि। सभ प्रसन्न होइत अछि आ गुरुक मोनमे जिज्ञासा होइत छन्हि। कृष्णकेँ साधुवाद दैत छथि, गुरुपत्नी ओ सभ घटना बुझबाक हेतु आतुर होइत छथि। पश्चात् कृष्णक इंगितिसँ बलराम सविस्तर कथा कहैत छथिन्ह जे कोना कृष्ण गुरुपुत्रक नाम लए समुद्रक कछेड़सँ बजौलनि, परन्तु कोनो उत्तर नहि पाबि

क्रोधमे समुद्रहिकेँ दण्ड देबाक कथा कहल । तखन समुद्र उपस्थित भए शंख रूपधारी पंचजन नामक असुरक सूचना देल जे द्वीपान्तरमे अनेक असुरक संग रहैत छल ओ जकरा कारण प्रभासक्षेत्रमे सतत जान-मालक क्षति होइत रहैत छल, लोक भयाक्रान्त रहैल छल ।

तदुत्तर कृष्ण समुद्र ओ स्थविरक विचारानुकूल मदिरापानमे व्यस्त पंचजनक निकट राखल ओ शंख लए लैत छथि, ओकर वध करैत छथि आ पंचजनक कारागारसँ गुरुपुत्रकेँ मुक्त कए अनैत छथि । संगहि बलराम ओ कृष्ण दुनू मिलि प्रभासक्षेत्रकेँ असुरक दमन कए पूर्णतः मुक्त कए दैत छथि । एकर बाद उद्धैव अपन संग आनल अनेक प्रकारक उपादानसँ संदीपनि मुनिक सम्भार करैत छथि । पश्चात् विदापूर्व रात्रिमे कृष्ण ओ सुदामाक वार्तालाप अछि जाहिमे सुदामा संन्यास ओ कृष्ण आश्रम-धर्म-व्यवस्थाक प्रतिपादन अपन वक्तव्यमे करैत छथि । कृष्णक तर्कसँ सहमत भए सुदामा पश्चात् आश्रमधर्म स्वीकार करब गछि लैत छथि । अन्तिम सर्गमे कृष्णकेँ गुरु लोकसेवा करबाक शिक्षा दैत छथि एवं साश्रुनयन अपन प्रिय शिष्य कृष्णबलरामकेँ सजाओल रथपर चढ़ाए विदा करैत छथि ।

प्रस्तुत कथानकमे दुइ प्रकारक तत्त्व उपलब्ध अछि । जेँ हेतुएँ सर्वशक्तिमान, लीलाप्रभु श्रीकृष्ण एहि महाकाव्यक नायक छथि तेँ पौराणिक, आध्यात्मिक ओ लौकिक दुहू प्रकारक तत्त्व भेटैत अछि । कवि साकांक्ष रहि एतबा अवश्य कएल अछि जे कथानकक भित्तिकेँ पराशक्तिसँ पूर्ण प्रायः नहि होबए देल अछि, अलौकिक तत्त्वक यथासमय निवारण कए लौकिक ओ व्यावहारिक पक्षक समर्थन कएल अछि । कृष्णकेँ स्वाभाविक रूपमे, मनुष्यक रूपमे वर्णित कएल अछि । एकाध स्थलकेँ छोड़ि प्रायः अन्यत्र आध्यात्मिक स्वरूपक चरित्रक दर्शन नहि होइत अछि । कृष्णचरितमे विषयक उपस्थापनहिसँ कवि तंत्रनाथझा एहि विचारकेँ उपस्थित करब श्रेयष्कर बुझल जे आपद्ग्रस्त विश्वकेँ किछु एहन संदेश प्रचारित कएल जाए जे सर्वकालिक ओ सर्वलौकिक भए सकए । ओ तेँ कृष्णक अवधान कए शिक्षाक सामान्य व्यवस्था ओ तकर वैशिष्ट्यकेँ उल्लिखित कएल ।

कृष्णचरित एहन महाकाव्य अछि जे सर्वगुण-सम्पन्न ओ समस्त विशिष्टतासँ पूर्ण अछि । लक्षणानुसार प्रायः विशेष तत्त्वक समावेश तँ एहि महाकाव्यमे अछिए, संगहि साहित्यिक स्वरूप, समय, तत्त्व ओ वर्णनक दृष्टिएँ सेहो एकर सफलता असंदिग्ध अछि । महाकाव्यक चारू विशिष्ट आधुनिक तत्त्व एहिमे समाविष्ट अछि । जीवन्त कथानक, श्रेष्ठ चरित, जीवन्त वर्णनशैली ओ महत् उद्देश्य–एहि चारू तत्त्वकेँ जाहि कौशलपूर्वक एहिमे सन्निविष्ट कएल गेल अछि से एकर विशिष्टताकेँ द्योतित करैत अछि । कोनहु आधुनिक काव्यमे वैविध्यपूर्ण, विशिष्टतायुक्त, पुरुषोपम व्यवहारसमन्वित कृष्णक विविध कार्य ओ शैली केँ देखाओल जाए, एहन कृष्णक चरित्रकेँ रूपायित कएल जाए जाहिमे सभ रसक सामान्य ओ विशिष्ट रूपक जीवन्त वर्णन होअए, संगहि अन्य विविध तत्त्वक सांगोपांग

चित्रण रहए तथा विश्वमे नवीन उत्तम उद्देश्य व्यंजित करबाक योजना होअए–निश्चये ओहि महाकाव्यकेँ सम्पूर्ण रूपमे सफल मानब । जे चरित्र संसारमे नैतिक, सामाजिक, राष्ट्रीय ओ धार्मिक नेतृत्वक सहज आलम्बन अछि सएह यदि कोनो महाकाव्यक नायकक रूपमे अपन ओहि समस्त शक्ति, प्रवृत्ति, प्रतिभा ओ कौशलकेँ प्रदर्शित करए तँ निश्चये ओकर सफलतामे शंका नहि होएबाक चाही । कृष्णचरितक व्यावहारिक पक्ष अत्युत्तम अछि, स्पृहणीय अछि :–

आश्रमसँ बहार भए कृष्ण,
देखि फुनगीपर विकसित फूल ।
चढ़ि सत्वर तोड़थि दर्शित कए,
तनक लघुत्व प्लवग समतूल ।।

कृष्णचरित महाकाव्य अनेक दृष्टिएँ महत्त्वपूर्ण अछि । संस्कृत लक्षणानुसार एकर महाकाव्यत्व सिद्ध अछि । आधुनिक रूपमे एहिमे विशिष्ट काव्य-लक्षणसँ युक्त महाकाव्यक समस्त तत्त्वक निर्वाह भेल अछि ओ परम्परानुसार एहि महाकाव्यक महत्ता कथावस्तुक विशिष्टता, उत्तम चरित्रक अवधान, वर्णनचातुर्य ओ महत् उद्देश्यक प्राप्तिमे अछि । वस्तुतः जहिना ई युगक चेतनाक संवहन करबामे समर्थ होइत अछि, तहिना उत्तम चरित्रक व्यवस्थाक कारणेँ युगक प्रतिनिधित्व करबामे सेहो । लोकप्रियता महाकाव्यक सभसँ पैघ सफलता होइत अछि । कृष्णचरित रचनाक बादहि ई लोकप्रिय महाकाव्यक श्रेणीमे आबि गेल । कृष्णचरितक विशिष्टताक आधार मिथिलाभाषामे रचित होएबाक कारण तँ अछिए, मिथिलाक माटि-पानिसँ सम्पृक्त एकर प्राकृतिक छटाक जेहन मनोहारी चित्र एहि ग्रंथमे भेटैत अछि से एकर अतिरिक्त विशेषता थिक । व्यंग्यक जे स्वरूप एहिमे अछि से एकरा उत्तम काव्यक कोटिमे परिगणित करैछ । कोमल शब्दावली कविक मुख्य साधन अछि, भावसम्वर्धन कविक वैशिष्ट्य अछि । तंत्रनाथझा मूलतः अपन प्रत्येक काव्यमे किछु नव ओ विशिष्ट शब्दसँ परिचय करबैतं छथि । वर्णन तँ सिद्ध होइत अछि-छन्द, अलंकार, शब्द, अर्थ ओ ध्वनि आदिक प्रयोगहिसँ आ से यदि प्रकृति वर्णन हो तँ ओ उपर्युक्त प्रयोगसँ आओर आकर्षक एवं सौन्दर्यपूर्ण भए जाइछ । प्रायः प्रत्येक सर्गमे प्राकृतिक छटा दिग्दर्शित अछि । तहिना मिथिलाक पाबनि-तिहार सेहो एहिमे अपन पारम्परिक उत्साहक संग वर्णित भेल अछि । कृष्ण सदृश व्यापक भावयुक्त लीलामय चरित जाहि ग्रंथमे प्रमुखताक संग वर्णित हो, तकरा आकर्षक होएबामे कोन संदेह ? श्रीकृष्ण ऋषि संदीपनिक शिष्य होएबाक संगहि ब्रह्मचारी सुदामाक अभिभावकत्वमे गुरुक आदेशसँ अध्ययनरत समस्त छात्रमंडलीकेँ प्रसन्न कएनिहार, गुरु ओ गुरु-पत्नीक आनन्दक आधार गुरु-पुत्रकेँ जीवित कएनिहार छथि-वस्तुतः एहन कृष्ण मैथिली काव्यजगतमे तँ नवीन छथिहे, अन्यो साहित्यमे विरल रूपमे वर्णित छथि । किशोर श्रीकृष्ण बाल श्रीकृष्णसँ सचेष्ट ओ युवक श्रीकृष्णक बाटकेँ

प्रशस्त कएनिहार छथि। कवि कृष्णचरितकेँ एहने व्यापक परिधिमे रखबाक चेष्टा कएल अछि जाहिमे वैष्णव भक्तसँ लए सदाचारी गृहस्थ धरि समान रूपसँ ऊर्जा ग्रहण करैत छथि ओ जीवनमे सफल होएबाक बाट प्रारम्भेमे प्रशस्त करैत छथि। संतति वियोगसँ द्रवित देवकीक हृदयकेँ सान्त्वना देबाक हेतु महाराज उग्रसेन उद्धवकेँ कृष्णक निकट पठबैत छथि तथा कवि एहि उद्धव-प्रसंगकेँ जाहि मनोयोगसँ वर्णन कएल अछि से दर्शनीय अछि।

अतः 'कृष्णचरित' कविक समस्त भाव ओ प्रेरणाक पुंजीभूत स्वरूपक एहन उपायन अछि जे साहित्य-रसिकसँ लए श्रेष्ठ शिक्षाजिज्ञासुक हेतु सेहो आदर्शक पुष्ट आधार प्रस्तुत करैत अछि। ई मैथिलीक अन्यतम महाकाव्य अछि जे साहित्य ओ शिक्षा, दुहू दृष्टिएँ आधुनिक युगमे अनुकरणीय-स्पृहणीय अछि।

वर्णन-विश्लेषण

'कृष्णचरित' 'कीचक-वध' सदृशहि कविक ओहन कृति अछि जे परम्परागत रूपमे उपलब्ध मैथिली साहित्यक विविध महाकाव्यसँ विषय आ वर्णन दुहू दृष्टिएँ फराक अछि तथा नव तत्त्वक उपस्थापनमे अग्रणी अछि। 'कृष्णचरित' अछि तँ कविक स्वान्तःसुखाय रचना, किंतु एहिठाम कवि प्राध्यापकीय जीवन ओ सामान्य जीवनक क्रममे अबैत विविध समस्याक प्रति साकांक्ष रहि ओकर निष्पादनक प्रयास कएल अछि। लीलापुरुषोत्तम कृष्ण जहिना विविध प्रकारक लीला-व्यापारमे सिद्धहस्त छथि, तहिना संसारक विविध प्रकारक कष्ट ओ भारक निवारणमे सेहो शक्तिशील छथि। कवि श्रीकृष्णक एही भाव ओ चरित्रकेँ लगसँ देखि अपन परिवारक समस्याक निदान चाहल अछि।

एहि महाकाव्यक नायक थिकाह श्रीकृष्ण। कृष्णक ने तँ बाल रूपक आओर ने प्रगल्भ रूपक, अपितु गुरुकुलमे व्यतीत भेल हुनक कैशोर वयक किछु समयक वर्णन अछि। एतए वर्णन भेल अछि कृष्णक ओहि चरित्रक जकर चर्च बड़ थोड़ साहित्यकार कएने छथि। गुरुक आश्रमक ब्रह्मचारी छात्र कृष्णक चरित्र एहि प्रबन्धकाव्यमे स्फुट भेल अछि। संगहि गुरु सन्दीपनि, सखा सुदामा ओ उद्धवक चरित्रकेँ सेहो एहिमे रेखांकित कएल गेल अछि। चरित्रक विकासमे कथानक जाहि रूपमे विकसित भेल अछि ताहिसँ एक दिशि 'कृष्णचरित' क कथावस्तुक स्वाभाविक विकास-क्रम लक्षित अछि तँ दोसर दिशि चारित्रिक विकास ओ कथावस्तुक तादात्म्य सेहो देखबामे अबैत अछि। पाँचम सर्गमे कृष्ण-सुदामाक वार्त्तालापमे सुदामाक चरित्रमे एक प्रकारक ग्लानि अछि जकरा कृष्ण अपन सदाशयतासँ पूर्णतः हटाए देबाक प्रयास कएल अछि—कथान्विति ओ चरित्रविकास-दुहू दृष्टिएँ से बेसी आकर्षक भेल अछि। क्षुधातुर सुदामा द्वारा श्रीकृष्णकेँ सूतल बुझि केराक समग्र घौड़ खाए लेलापर कृष्णक उक्ति :—

"जठरहि जनु हवन-प्रवृत्त भेल
पूर्णाहुति अन्तिम फलक देल।

छल अन्त्यकबल मुख भरल जखन
कृष्णो जाग्रत भए बैसि तखन ।।
हँसि देखि सधल कदली समस्त
बजलाह जेना भए क्षुधा-ग्रस्त ।
"रम्भाफल सबटा लेल खाए
हमरा लए नहि राखल बचाए ।।
दुइयो छिम्मरि तँ दितहुँ छोड़ि
वा लितहुँ सङ्ग कए निन्द तोड़ि" ।
भए गेला सुदामा अति लज्जित
अनुताप उदधिमे जनु मज्जित ।।"

सुदामाक स्थितिक अनुमान सहजहि कएल जा सकैत अछि । जेठ रहबाक कारणेँ गुरु कृष्णक देख-रेखक भार सुदामाकेँ देलथिन्ह ओ एहि कार्यमे सुदामा असफल भए गेलाह, कृष्णक बुभुक्षाक शान्ति नहि कए सकलाह, अपन क्षुधाकेँ शान्त करबहिमे लागि गेलाह, तज्जन्य लज्जासँ आहत सुदामाक उक्तिमे स्वाभाविकता ओ चरित्रक निर्मल ओ स्वच्छ विकासक भाव दर्शित अछि :–

"नतमुख भए कृष्णक धएल हाथ
बजलाह–"अहाँसँ कोन लाथ ।
भए तीव्र क्षुधासँ गतविवेक
करइछ मनुष्य पातक कतेक ।।"

पुनः अपन सफाइ दैत लज्जित सुदामा कहैत छथि :–

"लखि गाढ़ सुनिद्रा मध्य मग्न
नहि कएल अहाँक सुषुप्ति भग्न ।
एखनहुँ अशेष नहि तृप्ति भेल
किछुओ तेँ नहि हम छाड़ि देल ।।
अनुचित अतिशय ई भेल काज
हमरा बड़ होइछ एकर लाज" ।
अनुतापानलसँ दग्ध प्राण
अवलोकि सुदामा-वदन म्लान ।।"

किन्तु सुदामाक ई अनुताप, कदाचित् हुनका बेसी क्लान्त नहि कए दैन्हि, श्रीकृष्ण शीघ्रहि अपन कथन बदलि, एहि समस्त प्रकरणकेँ 'परिहास' मात्र कहि सुदामाकेँ सान्त्वना दैत प्रसंगकेँ ताहि रूपमे परिवर्तित करैत छथि जाहिसँ सुदामाक अनुताप नष्ट भए जाइन्हि तथा ओ पूर्णतः स्वस्थ तथा सामान्य अनुभव करए लागथि । कृष्णक मनोवैज्ञानिक भावकेँ

चिन्हबाक कला एतए देखबामे अबैत अछि । सुदामासँ ओ कहैत छथि :–

"कए तनिक प्रबोधन कहल कृष्ण
नहि छी हम अणुमात्रो सतृष्ण ।
उपभोगि सुनिद्रा विगत-क्लम
छी सम्प्रति भेल निरामय हम ।।
कएलहुँ अछि हम परिहास मात्र
नहि थिकथि सखा कुत्साक पात्र ।
एकसर जागल सहि परम कष्ट
हमरहु रक्षा पर राखि-दृष्टि ।।
उद्विग्न चित्त करइत उपाय
छी रहल एहि विधि निशि बिताए ।
अछि संग अहँक स्मरणीय भेल
मिलि दुस्तर रजनी खेपि लेल ।।"

एहि रूपेँ सुदामाक मोनसँ लज्जा-अनुतापकेँ हँटाए कृष्ण सामान्य रूपेँ एहि घटनाकेँ लए कथानक ओ चरित्रक विकासक स्वाभाविक गति देखाओल अछि । एकर निराकरण अन्ततः सौहार्द्रपूर्ण भए जाइत अछि :–

"एवंविध वार्त्तालाप-निरत भए युगल बन्धु
करइत सन्तरण सुदुस्तर रजनी-क्षुब्ध-सिन्धु
वनचर-पशु-पक्षि-निकर-कलरव सुनि सन्तर्पित
प्राची-प्रकाश लखि भेल उभय जन परम मुदित ।

अर्थात् कृष्णचरितक कथावस्तु-योजना तथा चरित्र-योजनाक तादात्म्य एक दोसराक विकासमे साधक तँ अछिए, संगहि एहि माध्यमे कवि घटनाक सुनियोजनमे सेहो सफलता प्राप्त कएल अछि । कौशलपूर्वक कृष्ण सुदामाक मनसँ ग्लानियुक्त भावक उपशम कए हुनका सभ रूपेँ मानसिक तनाव-ग्रस्त होएबासँ बचाए लेल अछि । इएह थिक चरित्रक सबल पक्ष, जाहिसँ कथानकक भित्ति पूर्ण स्थिर रहैत अछि ।

'कृष्णचरित' मे नायक ओ अन्य चरित्रक जाहिमे रूपमे परियोजना भेल अछि ताहिसँ ई तँ पूर्णतः स्पष्ट भए जाइत अछि जे कृष्णक अतिरिक्त आन चरित्र सभ एहिमे सहायक छथि, किंतु कृष्णहुक चरित्रमे विकासक, आकर्षणक स्वरूप ओना तँ सतत किंतु बेसी घनिष्ठ रूपेँ तखनहि आबि जाइत अछि जखन तीर्थाटनसँ घुरैत समय संग लेने बलराम-कृष्णक परिचय गुरु सभक समक्ष दैत छथि :–

"राजपुत्र यदुकुलक युगल ई
एतए अहींलोकनीक समान
विधिपूर्वक आश्रममे रहि

करताह अध्ययन, अर्जन ज्ञान ।
वसुदेवक सुत उभय वटु, रौहिणेय-बलराम
देवकि-दुहितात्मज तनिक यवीयान घनश्याम ।

गुरुकुलमे कृष्णक चरित्रक अनेक रूप भेटैत अछि । सम्पूर्ण रूपमे ब्रह्मचारी बटु सदृश आश्रमक नियम-मर्यादाक पालन तथा अनुशासनमे रहब कृष्णक स्वाभाविक चरित्र अछि । एकर अतिरिक्त आश्रमक सभ काज करैत थोड़हि समयमे सकल शास्त्रक ज्ञान प्राप्त कए लेब कृष्णक एहि चरित्रक उपलब्धि अछि । गुरु कृष्णक मेधाशक्तिसँ चकित छथि । हुनक पाठ बढ़ैत अछि ओ कृष्ण तकरा शीघ्रहि मुखस्थ कए सुनाए दैत छथि :–

"पहिलुक पाठ परातहि सुनि पुनि पाठ नवीन द्विगुण कए देल
तकरहु सुनि कण्ठस्थ छनहिमे कुलपति अति अश्चिर्यित भेल
दैत कृष्णकेँ पाठ अत्यधिक प्रत्यह ताहि मुखस्थ सुनैत
निरखि अलौकिक मेधा तनिकर चकित होथि देवांश बुझैत ।"

आश्रममे कृष्ण जतेक पाठपर ध्यान दैत छलाह ताहिसँ तथा बेर-बेर अपन कौतुकसँ आश्रमक प्रत्येक व्यक्तिक प्रिय वनि गेलाह । गुरुक पूजाक निमित्त पुष्प चयनमे अपन चपलता देखबैत कृष्ण अत्यन्त कौतुक रूपेँ समक्ष अबैत छथि :–

"आश्रमसँ बहार भए कृष्ण देखि फुनगीपर विकसित फूल
चढ़ि सत्वर तोड़थि दर्शित कए तनक लघुत्व प्लवग समतूल
कतहु देखि पाकल फल लपकि गाछपर चढ़ि त्वरितहि सोत्साह
आनि समीप उपस्थित होथि सुदामा जा वारण करताह ।"

कृष्णक चरित्रमे ब्रह्मचारीक अतिरिक्त शंख दानवक संहारकक सेहो एक एहन रूप अछि जाहि माध्यमसँ लोक-कल्याणक भाव स्फुट होइत अछि । दानवी शक्तिक उपशम कए संसारमे व्यापक ओ स्थिर शान्तिस्थापन करब महापुरुषक मूल कार्य होइत अछि । गुरुदक्षिणामे गुरुपुत्रकेँ मृत्युसँ मुक्त कए जीवित कए गुरुक समक्ष आनि देब सामान्य व्यक्तिसँ सम्भव नहि अछि । एहन कार्य कोनो अलौकिक शक्ति-सम्पन्न चरित्रहिसँ सम्भव अछि । किंतु कवि एहि प्रबन्धकाव्यकेँ लोकरुचिक अनुकूल सामयिक बनएबाक प्रयास कएल अछि ओ तेँ पारलौकिक तत्त्वक आधुनिक रूपमे, अस्वाभाविकताजन्य दोषसँ बचबाक हेतु, तकर वर्णन नहि कएल अछि । फलतः कृष्णक लौकिक चरित्रक सामान्य ओ विशिष्ट रूप–सएह भेटैत अछि । कृष्णक लोककल्याणकारी चरित्रक परिचय एहि रूपमे होइत अछि :–

"सर्वोपरि तप थिक विश्वमे करब लोक कल्याण
ताहि हेतु अवतरथि धरापर धए नर-तन भगवान
एतादृश व्यक्तिक यशसँ सुरभित भए जाए दिगन्त
सदाचार प्रचरित भए करए दानवी-वृत्तिक अन्त ।"

किन्तु एहि प्रकारक कल्याणकारी कार्य करबाक हेतु कृष्णकेँ अनेक श्रम करए पड़ैत छन्हि । गुरु-पुत्रक अन्वेषणक समय कृष्णक संकल्प अछि :–

"प्राणाहुति दए करब सिन्धुसँ गुरुपुत्रक उद्धार
त्याग करब प्रायोपवेश कए बरु असार संसार
कुम्भोद्भवसँ मन्त्र सीखि सोखब खल-जलधि अपार
नहि कए सकत दुष्टमति सागर पुनि एहन व्यापार ।"

कृष्णक उक्तिमे पौरुषक दीप्ति झलकैत अछि :–

"पुरुषक संकल्पक समक्ष की गिरि की सिन्धु समीर
दृढ़ता करए शेष-हित कम्पित, धरणी होथि अधीर ।"

अपन दृढ़ता तथा पौरुष एवं शौर्यसँ दीपित कृष्ण पंचजनक नाश करैत छथि ओ पाञ्चजन्य शंख प्राप्त करैत छथि :–

"भेल विषम दुर्घटना सुघटित,
भेल सिन्धु-तट मुक्त
भेल पञ्चजन-जयी–
कृष्ण-कर पाञ्चजन्यसँ युक्त ।"

एवं प्रकार कृष्णक द्वारा शंखनिनादसँ सम्पूर्ण सृष्टि मुखरित भेल, कष्टक निवारण भेल, पवित्र चित्तवृत्तिक उदय भेल :–

"मुखरित भेल दिगन्त, कृष्णक शंख-निनादसँ
अपसारित भए ध्वान्त, भेल लोक-मानस विमल ।"

कृष्णक चरित्रक अतिरिक्त आनो चरित्रक आदर्श रूपक भावमात्र एहि प्रबन्धकाव्यमे देखाओल गेल अछि ।

एहि महाकाव्यमे प्रकृति-वर्णन अपन स्वाभाविक रूपमे भेल अछि । ग्रंथक प्रारम्भहिसँ जे प्रकृतिक वर्णन संग भेल से ग्रंथक अन्तधरि संगे लागल अछि । ई प्रकृति कतहु वर्णनकेँ मनोज्ञ बनएबाक निमित्त, कतहु चरित्रकेँ आओर बेसी स्पष्ट करबाक हेतु, कतहु कथाक्रमकेँ उजागर करबाक हेतु, कतहु घटनाक संघटनमे नाटकीयता अनबाक हेतु, कतहु सामान्य अवस्थाक चित्रणक हेतु, कतहु अलंकारक स्वरूपकेँ आकर्षक बनएबाक हेतु, कतहु व्यक्तित्वमे आकर्षक उद्गम हेतु–अनेक रूपमे आएल अछि, आलम्बन, उद्दीपन, मानवीकरण आदि अनेक रूपमे । सभठाम चित्रात्मक शैलीक प्रयोगसँ ई वर्णन सभ बेसी अनुकूल ओ स्पृहणीय बुझाएल अछि । बुझि पड़ैत अछि जे कवि प्रकृतिकेँ क्षणहु मात्रक हेतु छोड़ए नहि चाहैत होथि । सन्दीपनि मुनिक आश्रमक वर्णनमे प्रकृति प्रकृत रूपमे आएल अछि :–

तृण-काष्ठहि गृह निर्मित भेल
वन्य-पत्रसँ छाड़ल गेल

गोमयसँ नीपल सभ ठाम
परम पवित्र स्वच्छ ई धाम
टाट लगाओल खड़ही काटि
लेबल गोबर चिक्कन माँटि ।

एहि आश्रमक चारू कात विविध प्रकारक फूल फुलाएल अछि, जे आश्रमक शोभाकेँ कतगुण बढ़ाए दैत अछि । एहन सुन्दर फूल, तुलसी, दूबि आदि तोड़ि आश्रमवासीक द्वारा पूजा-अर्चना होइत अछि ! ई सभ जेना आश्रमक प्रसाधन थिक :–

"प्रकृति नटीक प्रसाधनक जनु सज्जित भण्डार
अछि अन्वित आमोदमय विविध-वर्ण सम्भार ।"

आश्रमक समीपहि जहिना फूल, तहिना फल ओ झरनाक आमोदमय रूप छल । फलक ई प्रचुरता जेना पशु-पक्षी-मनुष्यक हेतु भोजक ओरिआओन हो :–

"पशु-पक्षीक रहैत छल पसरल भोज अलेल
रजनि-दिवस वन-देवता सदावर्त्त जनु देल ।"

एहि मुनि-आश्रममे सभ निर्भय वास करैत छल :–

"निर्भय बिहरए वनक पशु ओ पक्षी-समुदाय
कखनहुँकेँ बहाराएकेँ आश्रम दिशि चल जाए ।
कखनहुँ मृगशावक ततए फुलबाड़ीमे जाए
तोड़ए कोमल पात सभ कुदि-कुदि निर्भय खाए ।"

कवि कतोक ठाम प्रकृतिवर्णनक माध्यमसँ नीतिक ज्ञानकेँ मनलग्गू बनाए अभिव्यक्त कएल अछि :–

क्रमहि तिरोहित होअए अन्हार
लागल बढ़ए प्राणि सञ्चार
विद्यासँ अज्ञान समान
सत्संगहि सुविचार प्रमाण ।"

प्रभातवर्णनमे लोककल्याण ओ चेतनाक भावनाकेँ निहित कए कवि कहैत छथि :–

"कर पसारि चढ़ि उदयगिरि कए तिमिरक अपहार
रवि सिखबथि जनु लोककेँ करए अपन व्यापार ।"

सन्ध्यावर्णन :–

"दिनकर अस्ताचल पहुँचि करथि दिनक अवसान
पकड़ि प्रतीची-कर करथि मोचन हुनकर मान ।
होथि प्रतीची उल्लसित पहिरथि लाल पटोर
तिमिर प्रकल्पित निभृतमे करती केलि अथोर ।"

सन्ध्याकालमे कमलिनीक स्थितिक वर्णन :–

"कमलिनि प्रोषित-पतिका भेलि
मुख अरबिन्द सँकुचि झट गेल
सकल प्रसाधन मलि तन छार
तेजल मधुप-आभरन-भार ।"

वसन्त वर्णन :–

"बूढ़ो तरु भए किसलय-मंडित
लागल शोभए तरुण समान
बहराइत मञ्जर विकसित भए
कए परिमल मकरन्द प्रदान
पवन-प्रकम्पित बूझि पड़त ई
ककरहु अछि समीप बजबैत
उपगत-भ्रमर निकर-कल गुञ्जन
छलसँ मोहन मन्त्र जपैत ।"

ग्रीष्म वर्णन :–

"चण्ड किरणसँ तप्त-वासरक तनभरि उद्‌गत धाम
विकच-कुसुम-व्याजेँ तरु-लता-विटपपर भरल ललाम
कुञ्ज-कुञ्ज भ्रमइत करइत गुञ्जन मधुकर भए भ्रान्त
भ्रमरी बुझि चुम्बन कर परिणत जम्बूफलक सकाम ।"

वर्षा वर्णन :–

"उमड़ल मेघक वारिद गरजि, सिरजि चपलाक तरङ्ग
विकच नीप, सुरभित पङ्किल थल, संचर सगर भुजङ्ग
भेक नाद कर, केकी पिच्छ पसारि नृत्यरत भेल
सजग-मदन उन्निद्र-विरहिजन-निशि युग-सम कए देल ।"

कवि सभ ऋतुक ओ प्रकृतिक अन्य समयक वर्णनमे आकर्षणयुक्त भावक सृष्टि कएल अछि । प्रकृतिक मानवीकरण कए कवि ओहू ठाम प्रकृतिक मानव रूपक जे स्वरूप देखाओल अछि, निश्चये से बेसी आकर्षक भेल अछि :–

"विकसित बकुल-कदम्ब-मालती-सर्जहि सपलक भेल
नव-जलधर-श्यामल-वसनहि भल झाँपि सगर तन लेल
जल-विहंग कादम्ब-हंस-सारस-नूपुर अपसारि
के करइछ अभिसार जलद-ऋतु-पिअ-संङ्गम चित धारि ?

तथा–

''शशि-मुखि शरद-रजनि अपसारित कए प्रच्छद-पद ध्वान्त
भेल वृद्धिपर यथा किशोरी-कुच-नितम्ब श्रीमन्त
नव-सङ्गम-लज्जा-विजड़ित-बाला-मृदु-जघन समान
सर-सरिता कर प्रगटित नहु-नहु गूहित पुलिन-प्रान्त ।''

अलंकार योजनामे सर्वमान्य उपमान-उपमेयक प्रयोग कए वर्णनकेँ सश्रीक बनएबाक प्रयास भेल अछि । कवि कखनहुँ प्रयासशील नहि बुझि पड़ैत छथि, स्वाभाविक रूपेँ हिनक अभिव्यक्तिमे अलंकारक प्रयोग होइत रहल अछि । फलतः वर्णन ओ अभिव्यक्ति कखनहुँ बोंझिल नहि अछि । शब्दालंकार ओ अर्थालंकार-दुहूक प्रयोग ई सफलताक संग कएल अछि । अनुप्रास अलंकारक उदाहरण देखू :–

''दयितक मृदु कर-परसहि सहसा चौंकि
धारि शिरोपरि पति-पद-पद्म-पराग
देवक दुहिता सजल-नयन-राजीव
कम्पित-कण्ठहि कहल,–?'

तहिना :–

''दम्भोलि-पतन अति घोर-स्वन,
करइत रहि-रहि जन हृत्कम्पन ।
कए देल लोककेँ श्रोत्र-विकल
अतिमात्र औषधक फल उनटल ।।

उपमा ओ उत्प्रेक्षा अलंकारक उदाहरण एकहि ठाम एतए देखू :–

''ज्वलित अग्निसँ अधिकत्विष रविकरसँ व्याकुल भेल
मृगपति खेपए दिवस भूधरक कुहर मध्य चल गेल
कमल-कोष-बिच मधुकर, कुञ्जरनिकर पल्वलहि पैसि
युवमानस मृगलोचनि-नाभि-विवर धरि आश्रय लेल ।''

पुनः उत्प्रेक्षाक सुन्दर पंक्ति अछि :–

''निकसल प्रभा दिगन्तसँ
प्राची अरुणित भेल
कतहु तमिस्रा राशिमे
आगि लागि जनु गेल ।''

रूपक अलंकारक प्रयोग प्रायः सभ अलंकारसँ बेसी भेल अछि । प्रकृति-चित्रणकेँ गतिशील बनएबाक हेतु तथा चरित्रकेँ सुरुचिपूर्ण बनएबाक दृष्टिएँ कवि एहि अलंकारक प्रयोग बेसी ठाम कएने छथि :–

"चढ़ि समीर-रथ उमड़ल जलधर विपुल वाहिनी साजि
जीमूत-ध्वनि पटह, बलाका श्वेत-पताका राजि
दामिनि-द्युति विकोष करवाले, शक्ति-पट्टि शितधार
दृढ़ सङ्कल्प करब जन-पीड़क रिपु निदाघ-संहार ।"

दृष्टान्त अलंकारक उदाहरण रूपमे अछि निम्नस्थ पद जाहिमे अभिनव रूपेँ तथ्यकेँ सिद्ध कएल गेल अछि :–

"पुनि-पुनि उपजि दूध वक्षोरुह पूरि,
दए-दए दुस्सह पीड़ा होअए व्यर्थ,
व्यर्थ सर्वदा किन्तु सिरजि सन्ताप
यादृश मञ्जु उरोज बाल-विधबाक ।

अलंकार वर्णनमे कविक दृष्णिकोण स्वाभाविक ओ व्यापक अछि, किन्तु कतहु ओ अनेरोक नवीनता अनबाक प्रयास नहि कएल अछि । तथ्य ई अछि जे कतहु अलंकार-वर्णनक क्रममे अभिव्यक्तिमे सामान्यसँ विशेष काठिन्यक वोध भए जाइत अछि तँ से उचित नहि बुझल जाइत अछि ओ तेँ कवि अलंकारकेँ साध्य नहि, साधन बनाए अपन काव्यमे प्रयोग कएल अछि । फलतः अभिव्यक्तिक सहजताक संग-संग चरित्रकेँ सर्व-जन-विद् बनएबाक हिनक प्रयोग सफल भेल अछि ।

गुरु सन्दीपनिक स्थिति केहन भए गेल छन्हि, जखन ओ अपन दुहू छात्र सुदामा ओ कृष्णकेँ बिहाड़ि-पानिमे रातिमे आश्रम नहि अएलापर भीतरसँ अशान्त, किन्तु ऊपरसँ गम्भीर भेल चित्रित-भित्त छथि :–

"भए एतादृश चिन्तासँ ग्रस्त नितान्त
बटु-युगलक कुशलक हेतु भेल उद्भ्रान्त
सन्दीपनि भए उन्निद्र गमाओल काल
चिन्ता करैछ निद्रालुताक उपहार ।
लए करहि गोमुखी करइत जप अविराम
बैसल आसनपर कुलपति सद्गुण-धाम
धए ध्यान करए लगलाह रात्रि अवसान
ता क्रमिक जलदपय नभ तजि कएल प्रयाण ।"

गुरुक चरित्रमे वात्सल्य जनित कर्त्तव्य-चिंताक प्रयोगसँ सहजताक सृष्टि भेल जतए विविध अलंकार क्रमहि प्रयुक्त भए अभिव्यक्तिकेँ सहज ओ आकर्षक बनाओल अछि ।

'कृष्णचरित' मे कवि स्वाभाविक शैली ओ सामान्य भाषाक प्रयोग कएल अछि किन्तु शब्दक चयन जाहि रूपमे भेल अछि ताहिसँ स्वभावहि केओ हिनका शब्दक विपुल भण्डार छन्हि, से कहत । प्रसंगानुकूल शब्दक प्रयोगसँ कविक भाषा-शैलीक गम्भीर ज्ञानक परिचय होइत अछि । कठाइन शब्दक प्रयोग नहि भेल अछि, प्रचलित शब्दहुकेँ एकटा नव व्यक्तित्व

देबाक प्रयास भेल अछि । फलतः अभिव्यक्ति प्रांजल अछि । गमैया आ सुसंस्कृत दुनू प्रकारक शब्दक प्रसंगानुकूल प्रयोग भेल अछि :–

"निर्धूल नभहि भास्वर तारा भल शोभ
बादुर-उलूक कर स्वैरगमन निस्तोभ
कर सारमेय-फेरब रव बारंबार
करइत जनु रातुक नीरवता व्याहार ।"

सामान्य विश्लेषणक हेतु सरल शब्दसँ युक्त अभिव्यक्ति द्रष्टव्य थिक :–

"व्यर्थ एहि संसारक माया-जाल मध्य ओझराए
सदा स्वार्थ-चिन्तातुर भेल व्यग्र दिशि-दिशि बौआए
की कखनहु कए सकब आत्मचिन्तन हम भए एकाग्र
सांसारिक चिंतासँ होइछ कुण्ठित बुद्धि-कुशाग्र ।"

मुक्तककाव्य

परम्परासँ मुक्तककाव्य काव्यक एकगोट विशिष्ट प्रभेद रहल अछि। प्रबन्धकाव्य सदृश मुक्तककाव्यक विषय, वर्णन आदिमे कविकेँ ओतेक स्वतंत्रता नहि रहैत अछि। ई लघु-आकारक काव्य होइछ जाहिमे कलात्मकता ओ भावात्मकताक जेहन सम्मिलन होइछ ओहिसँ ओकर मुख्य तत्त्वक प्रकाशन होइत अछि। काव्यक तँ सभठाम समाने परिभाषा होइत अछि, किन्तु जँ काव्य संक्षिप्त ओ सफल अभिव्यक्तिसँ पूर्ण भेल तँ ओ मुक्तक कहाओत। यदि वर्णनमे सूक्ष्मता अछि, भावाभिव्यक्ति सबल, सघन ओ मुक्त अछि तँ मुक्तक कहाओत। तेँ दण्डी कहल जे मुक्तक छओ छन्दमे पूर्ण भए जाइत अछि तथा से–गुणवती, प्रभद्रा, वाणावली ओ करहारव कहल जाएत। अग्निपुराणमे 'मुक्तक' श्लोक 'एवैश्चमत्कारसमं सताम्' मे जाहि चमत्कारक्षम शब्दकेँ समाहित कएल गेल अछि ताहिसँ सौन्दर्य ओ आकर्षणक सृष्टि तँ होइतहि अछि, संगहि मुक्तक काव्यक प्रभावोत्पादकता एवं संक्षिप्तता सेहो स्पष्ट भए जाइत अछि। सामान्यतः मुक्तक काव्यमे ओ सभ गुण होइत अछि जे पश्चात् 'रमणीयार्थः प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्' ओ 'रसात्मकं वाक्यं काव्यम्' सदृश काव्य-परिभाषाक आधार बनैत अछि। अर्थात् मुक्तक काव्य 'रमणीय' ओ 'रसात्मक' अपन स्वरूप ओ विशेषताक कारणेँ बनैत अछि। वस्तुतः इएह 'चमत्कारक्षम' शब्द ओ आधार भेल जाहि ठामसँ अनेक लक्षणकारलोकनि काव्यक परिभाषा देल। एहि सभ परिभाषाक मूल विशेषतासँ निष्पादित काव्यक वैशिष्ट्यमे पूर्वापर प्रसंग-निरपेक्षता, संक्षिप्तता, सरसता ओ प्रभावोत्पादकता मुख्य मानल जाएत। यदि आओर विवेचन करी तँ मात्र संक्षिप्तता ओ सघनता मुक्तक काव्यक वैशिष्ट्य मानल जाएत। सामान्यतः कवि अभिव्यक्तिमे निरंकुश होइत छथि, किंतु ई निरंकुशता यदि शास्त्रीय नियमक सतत उपेक्षा करैत अछि तँ नवीन नीतिक, सिद्धान्तक अभावमे, से सफल तँ नहिए मानल जाएत तथा ओकर कवि उपहासक कारण भए जएताह। तेँ मुक्तकक कवि संक्षिप्त अभिव्यक्तिमे वैचारिक तादात्म्यक सघनताक सन्निवेश कए चमत्कार ओ सौन्दर्यक सृष्टि ओ रसोपलब्धिक मार्गकेँ प्रशस्त करैत छथि। मुक्तक काव्यक माध्यमे

रसनिष्पादनमे व्यवधान स्वाभाविक अछि–एकर कारण मुक्तक काव्यक स्वरूप-संक्षिप्तता अछि। किन्तु रसवर्षण मुक्तक काव्यक माध्यमे होइत तँ अवश्य अछि। पश्चात् गीतिकाव्य सेहो मुक्तक काव्यक श्रेणीमे परिगणित होबए लागल । पाश्चात्य काव्यमे तँ लीरिक कविताक रूपमे नवीन काव्यक प्रचलन पहिनहि भए गेल छल। एहि काव्यमे मुख्य विशेषता होइछ ओकर गेयधर्मिता । एहि लीरिक काव्यक प्रभाव आधुनिक मुक्तक काव्यपर सेहो पड़ल । आधुनिक गीतिकाव्यपर पाश्चात्य लीरिक काव्यक प्रभाव सेहो पड़ल । एहि गीतिकाव्य सभमे मुक्तककाव्यक आओर विशेषता छल किन्तु संक्षिप्तता ओहि रूपक नहि छल । तथापि गीति मुक्तककाव्यक रूपमे एकरहु उत्तरोत्तर विकास होबए लागल। भक्तिनाथ सिंहठाकुर अपन निबन्धमे एहि निष्कर्षपर पहुँचल छथि जे ''गीतिमुक्तक सहित मुक्तक काव्यक सामान्य परिभाषा अथवा कंसौटीक यदि निरीक्षण कएल जाए तँ कहल जाए सकैत अछि जे पूर्वापर-प्रसंग-निरपेक्ष-मार्मिक खंडदृश्य अथवा सम्वेदनाकेँ उपस्थित करएबला स्वयं अर्थभूमिसम्पन्न अपेक्षाकृत ओ लघुरचना मुक्तक थिक जाहिमे निरन्तर कथा-प्रवाहक अनुपस्थितियहुमे ओकर सूक्ष्म अधिक, मुदा व्यापक कम होइछ।'' तात्पर्य जे मुक्तक काव्य संक्षिप्त होइत अछि, किन्तु भावक प्रवाहक तीव्रानुभूतिक कारणेँ ओ रसक सापेक्ष प्रस्रवणक कारणेँ ई मस्तिष्ककेँ झंकृत करबामे पूर्ण समर्थ होइत अछि । पारम्परिक रसानुभूति सूक्ष्म रूपमे एहि माध्यमे होइत अछि । यद्यपि प्रबन्धकाव्य सदृश स्वरूप, प्रभाव व्यापक नहि, किन्तु संक्षिप्त होइत अछि तथा तीव्रानुभूतिक कारणेँ मुक्तक-काव्य बेसी लोकप्रिय होइत अछि, चमत्कारिक होइत अछि ।

तंत्रनाथझाक मुक्तक काव्यक सामान्य विश्लेषणसँ स्पष्ट होइत अछि जे हिनक मुक्तक काव्य संक्षिप्त ओ सूक्ष्म प्रभावोत्पादकतासँ पूर्ण तँ अछिए, ओहिमे हास्य, व्यंग्य, विनोद आदिक तेहन चासनी देल अछि जे सभ ओकर आस्वादनक हेतु तत्पर रहैत अछि । मार्मिक उक्ति, सटीक व्यंग्य, प्रसंगानुकूल शब्दसंकलन ओ सरस चमत्कारिक उक्ति-वैचित्र्य हिनक मुक्तक काव्यक मुख्य विशेषता अछि। अपन बाल्यावस्थहिसँ बालमण्डलीक विनोदार्थ रचल हिनक विनोदपूर्ण कविता सभक मोन आकृष्ट करैत रहल। ओहि समयक हिनक बेसी मुक्तककाव्य किंवा तँ अप्रकाशित अछि अथवा कतहु-कतहु यदि प्रकाशितो अछि तँ ओकर संख्या थोड़ अछि । बादमे रचल, सम्पूर्ण साहित्यिक तत्त्वक विनियोगसँ बनल प्रगल्भप्रतिभाक प्रतापसँ चमकल हिनक मुक्तक काव्य जे 'नमस्या' ओ 'मंगलपंचाशिका' मे प्रकाशित अछि, ओकर शास्त्रीय विवेचन ओ साहित्यिक पर्यावलोकन बेसी भेल अछि। प्रारंभक रचल हिनक मुक्तक काव्य सभ तत्सामयिक साहित्यिक समुदायमे व्यंग्य ओ विनोदक एकटा आधार होइत छल। तंत्रनाथझाक मुक्तक काव्य-संग्रह 'नमस्या' ओ 'मंगल-पंचाशिका' प्रकाशित होइतहि लोकप्रिय भए गेल। गुणोत्कर्ष अछि एहि मुक्तक सभमे ओ अपना दिशि आकृष्ट करबाक क्षमतासँ पूर्ण अछि। हिनक दुइ गोट प्रबन्धकाव्य 'कीचकवध' ओ 'कृष्णचरित' सेहो अछि जे अपन क्षेत्रमे सर्वाधिक सफल अछि, तथापि

अनुभूतिक तीव्रता ओ सूक्ष्म प्रभावोत्पादकताक कारणेँ हिनक किछु मुक्तक काव्य अविस्मरणीय भए गेल अछि। 'नमस्या' मे काव्यक संख्या चौबीस ओ 'मंगलपंचाशिका'मे चौंसठि अछि।

तंत्रनाथझाक मुक्तककाव्यक यदि सम्पूर्णतासँ परीक्षण करी तँ स्पष्ट होएत जे "हिनक रचनामे मोटामोटी दुइ प्रकारक भावधारा दृष्टिगत होइछ-प्रथम, प्राचीन ढंगक विचारधारा ओ द्वितीय, नवीन ढंगक। प्रथममे भक्तिभाव, शृंगारभाव, वीरभाव, वात्सल्यभाव ओ किछु अर्थशास्त्रीय एवं नीतिविषयक विचार आदि अबैत अछि आ द्वितीयमे सामयिक क्रमिक परिवर्तनक आधारपर अपन परिपार्श्विक जीवनक व्यक्तिगत प्रतिक्रिया। प्राचीन ढंगक विचारधारा लए जे मुक्तक सभ रचित छन्हि ताहिमे किछु देवी-स्तुति, दशावतार वर्णन आ परम्परित लोकरुचि विषयक व्यावहारिक गीत सभ अछि। देवीस्तुति, दशो महाविद्याक वर्णन आ दशावतारक वर्णनमे मात्र अनुकरणात्मक भक्तिभाव छन्हि। एहन रचना किछु 'नमस्या' आ किछु 'पंचाशिका' दुनूमे छन्हि। 'नमस्य'क एहि प्रकारक रचना सभ प्रायः कविक प्रारंभिक रचनासभ थिक जकरा संकलनकर्त्ता श्री 'श्रीश'जी ठीके विद्यापतिक अनुकरण कहलन्हि अछि, मुदा हिन्दीक भारतेन्दुक रचनाक भाषा जकाँ एहू सभक भाषामे आधुनिक स्पर्श अछि। प्राचीन भावकेँ नव भाषा-परिधान मात्र एतए प्रदान कएल गेल अछि। इएह बात 'नमस्या'क व्यवहारगीत आ 'पंचाशिका'क परिशिष्टक दशोमहाविद्याक वर्णन-प्रसंग सेहो कहल जाए सकैछ। खाली दशावतारक वर्णनमे लोकरक्षक-रूपक आभास दए नव-निर्माणक सांकेतिक सन्देश किंचित् विशेषताक रूपमे मानल जाए सकैछ, अन्यथा एहूमे 'यदायदाहि धर्मस्य' क आधारपर भगवानक महिमाक बखान मात्र एछि। तात्पर्य ई जे एहि सभमे कविक कोनो उद्भावना नहि, परम्पराक रक्षा मात्र अछि। परम्परानुमोदित एहि स्तुतिपरक मुक्तक सभमे 'मुकुन्द' उपनामक भनितासँ साधारण अनुकरणात्मक भक्तिभावना स्वतन्त्ररूपेँ मात्र अभिव्यक्त अछि। हास्य-व्यंग्य-विनोद सेहो एहि सभमे प्रायः नहिए जकाँ अछि। एहि प्रकारक मुक्तक सभमे संकलनकर्त्ता 'नमस्या' क बहुतो अन्य कविता सभ जकाँ समयक बोधो नहि करओने छथि जाहिसँ हुनक कविरूपक विकास-क्रमक बोधमे सेहो त्रुटि रहि जाइछ। एहि सभक भाषा ततबा प्राञ्जल ओ प्रौढ़ अछि जे कविक ई प्रारंभिक रचना थिक, से मानबामे प्रौढ़ पाठककेँ हमरा जनैत किछु सोचए पड़तन्हि। निर्णय ई जे सभमे भाषा नवीन मुदा भाव प्राचीने अछि। भक्ति-भाव धरि सर्वत्र मुख्य प्रतिपाद्य अछि। एकर विपरीत 'पंचाशिका'क ओ मुक्तकसभ जाहिमे वात्सल्य, शृंगार आ वीर भाव वर्णित अछि ओ सभ भक्ति-भावसँ संश्लिष्ट भए हास्य-व्यंग्य-विनोदक मौलिक उद्भावनासँ परिव्याप्त अछि। भक्ति एतए प्रमुख होइतहु स्वतन्त्र रूपेँ व्यक्त नहि अछि। ई सभ कविक भाव एवं कलापक्षीय सौन्दर्यसँ भरल अछि। ई मुक्तक सभ कविक स्वभावक पूर्णतः अनुकूल बुझना जाइछ–एहि सभमे

मनो पूर्णतः रमल बुझना जाइछ । एहि सभमे कविरूपक स्वाभाविक विकास देखबामे अबैछ । व्यक्तित्व पूर्णतः निखरल छन्हि । पढ़लासँ स्पष्ट बुझि पड़त जे कविवर केहन सरस, विनोदी आ हास्य-व्यंग्यप्रिय व्यक्ति छथि । गम्भीर भक्ति-भाव लए चलितो कविवर अपन एहि स्वाभाविक प्रवृत्तिक परित्याग कतहु नहि कएलन्हि अछि । वात्सल्य-मिश्रित भक्ति आ शृंगार-मिश्रित भक्तिक वर्णन भारतीय साहित्यमे कोनो नव बात नहि । सूरदास आ 'अष्टछाप'क अन्य कविलोकनिक भाषाकाव्य एहि तरहक वर्णनसँ भरले अछि । तथापि, एहि सभ प्रसंगमे कविवर अपन प्रतिभाक परिचय देलन्हि अछि । कतहु-कतहु वात्सल्य, शृंगार आ भक्तिक एकहि संगे अभिव्यक्ति भेटि जाएत । 'पंचाशिका' मे भाव-पक्षक दृष्टिएँ प्राचीन होइतहुँ कविवर अपन मौलिक उद्भावनाक परिचय देने बिना नहि रहलाह अछि । वात्सल्य आ शृंगारक प्रसंग कवि अपन भक्तिभाव परम्परानुमोदित भागवतक आधारेपर व्यक्त कएने छथि, मुदा वीररसक वर्णन-प्रसंगमे अर्थशास्त्री आ नीतिनिपुण कवि अपन महाभारतक नीतिकुशल, राजनीति-विशारद एवं रणनीति-निपुण वीर कृष्णक चरित्राधारपर उतरि अबैत छथि, तखन सहज-स्वाभाविक ढंगे कृष्णभक्तिक नव रूपक उद्रेक भए जाइछ जे मैथिली साहित्यक अतिरिक्त अन्यो भाषा-साहित्यमे प्रायः दुर्लभ अछि । महाभारतक ई प्रसंग यद्यपि अत्यन्त प्राचीन थिक, तथापि कृष्णक एहि स्वरूपक प्रति भागवतेक कृष्णक प्रति जकाँ भक्तिभाव प्रदर्शित करब अवश्य नव थिक । प्रतिभा एकरे कहैत छैक । एक तँ ई युग भक्तिक थिके नहि, तथापि ई युग किंचितो ग्रहण करत तँ वीरपरक भक्तिएकेँ ।''

उपर्युक्त विवेचनमे तंत्रनाथझाक मुक्तक काव्यकेँ लगसँ चिन्हबाक अवसर भेटैत अछि । कविक रचना-प्रक्रियाक प्रारम्भ तँ हिनक किशोरावस्थहिसँ भए गेल छलन्हि, किंतु बादक रचनामे व्यंग्य-विनोदक जे धार देखबामे आएल ओ उपहास काव्यक प्रयोगकेँ जाहि रूपमे कवि अवसर-विशेषक हेतु सुरक्षित राखल, ताहिसँ हिनक साहित्यिक अभिरुचि ओ लौकिक व्यावहारिकताक सामान्य परिचय सेहो होइत अछि । कवि स्वयं प्राध्यापक रहबाक कारणेँ एहि जीवनमे होइत विविध प्रकारक अनुभव, विश्वविद्यालययीय राजनीतिमे रहलाक कारणेँ विविध क्षेत्रक एवं विविध प्रकारक मनोवृत्तिक व्यक्तित्वसँ परिचय जन्य हिनक रचनाक आयाम बढ़ि गेल । एतबे नहि, हिनक सम्पूर्ण अनुभव एहि प्रकारक उपहासात्मक काव्येमे नहि, अपितु नव प्रयोगक माध्यमसँ विशिष्ट साहित्यिक मुक्तककाव्यक रूपमे सेहो स्फुट भेल । कवि हास्यक सृष्टि व्यंग्यक माध्यमे करैत रहलाह ओ हिनक साहित्यिक व्यक्तित्वक ई परिचिति बनि गेल । कविक मुक्तक रचनाक सामान्य परिचय, ओकर गम्भीरता ओ अवसरविशेषक तथ्योद्घाटनसँ सेहो होइत अछि । तेँ भक्तिनाथ सिंहठाकुर द्वारा हिनक मुक्तक काव्यक प्रसंग निम्नस्थ उक्ति समीचीन अछि–

''भावपक्षक आधारपर तंत्रनाथझाक मुक्तकक यदि वर्गीकरण कएल जाए तँ

निम्नांकित भेद-प्रभेद होएत :– (१) प्राचीन धारामे (क) प्राचीन विशुद्ध भक्तिपरक मुक्तक, जाहिमे नमस्याक देवीस्तुति आ 'पंचाशिका' क परिशिष्टक दशोमहाविद्याक ध्यान तथा दशावतारक वर्णन अबैछ, (ख) हास्य-व्यंग्य-विनोदसँ भरल वात्सल्य, शृंगार तथा वीर-भक्तिपरक प्राचीन मुक्तक, जाहिमे प्रायः पंचाशिकाक समस्त प्रमुख मुक्तक पद सभ (दशावतार प्रसंग छोड़ि) आ 'नमस्या'क शिव-गणेश-पार्वती-प्रसंगक पदसभ अबैछ, (ग) आओर लोकरुचिपरक प्राचीन मुक्तक जाहिमे व्यवहार गीतसभ आबि जाइछ। (२) नवीन धारामे (क) व्यक्ति-प्रधान, (ख) प्राच्य-पाश्चात्य काव्य प्रवृत्तिक प्रभावापन्न आओर (ग) प्रतिक्रियात्मक परिपार्श्व-चित्रणपरक मुक्तक। नवीन धाराक प्रथम कोटिमे 'नमस्या'क उपरिचर्चित प्रगीत मुक्तक सभ अबैछ, द्वितीयमे आख्यान प्रधान मुक्तक सभ (गदहावला कथा, मुसरीझा, आदर्श प्रेम आदि) आ तृतीयमे तार्क्ष्य, कौआ, कुकूर, प्रयाणालाप आदि कविता सभ आबि जाइछ।

कलापक्षक दृष्टिएँ वर्गीकरण कएलासँ कविवरक समस्त मुक्तक रचना (१) गीतात्मक, (२) प्रगीतात्मक, (३) आख्यान सूत्रात्मक, (४) आख्यानक, (५) प्रयोगात्मक आओर (६) दुइ चरणसँ लए आठ चरण धरिक लघु-आकारात्मक, छहो भेदमे मुख्यतः बँटि जाइछ। प्रथममे 'पंचाशिका'क 'परिशिष्ट'क भगवतीक ध्यान सभ आ 'नमस्या'क देवी-स्तुति सभ आओत्र, द्वितीयसँ पंचम धरिक उदाहरण तँ देले अछि, छठममे 'नमस्या' क प्रकीर्ण-मुक्तक' तथा 'परिशिष्ट' छोड़ि 'पंचाशिका' क सभ मुक्तक। गीतात्मक मुक्तक सभ परम्परानुमोदित मात्र अछि।.... गीतिकाव्यमे जाहि आत्माभिव्यञ्जनक सर्वोपरि स्थान अछि से एहि सभमे यत्किंचिते भेटैछ, मुदा एकर विकसित स्वरूप स्वाभाविक रूपेँ प्रगीतात्मक मुक्तक सभमे बड़ विलक्षण ढंगे अछि। एहि विशेषताक पराकाष्ठा 'प्रयाणालाप' आओर 'प्रतिमा-विसर्जन' मे देखबामे अबैछ। गीतकाव्यक आत्मनिष्ठताक दृष्टिएँ 'प्रतिमाविसर्जन'क अपन पृथक सर्वोपरि स्थान मानए पड़ैछ। एहिमे कविवरक आत्मभिव्यंजना पूर्णतापर पहुँचल अछि। 'प्रयाणालाप'मे कविवरक आत्मचिन्तनक प्रौढ़ व्यंग्यसँ, अन्तुर्मख होइतहुँ, समाजोन्मुख नीकजकाँ अछि। एकर विरीत 'प्रतिमा-विसर्जन' मे कविवर अन्तर्मुखी पात्र भए पूर्ण शान्त छथि, कनेको प्रतिक्रियात्मक नहि।''

एहि विवेचनमे उपहास-व्यंग्यमूलक कविक मुक्तक काव्यमे विभिन्न प्रकारक प्रयोगक सामान्य परिचय होएब अपेक्षित। एहि सम्बन्धमे डॉ. श्रीशक कथन पूर्णतः समीचीन अछि–''तंत्रनाथझा जखन मैथिलीमे उपहास-व्यंग्यमूलक प्रयोग (१९५३-५६) ई. मध्य करए लगलाह तँ मुक्त-वृत्त शैलीक अनुसरण कए ओकरा एकटा नवीन व्याप्ति देल। ओ अपन मुक्तवृत्तिमे अन्त्यानुप्रास-योजनाकेँ सर्वथा वहिष्कृत कए देल तथा ताहिमे गीततात्मक लयक प्रयोग नहि करितहुँ ओकरा गद्यात्मक होएबाक दोषसँ बचओने रहलाह। हिनक एहि प्रकारक रचना–'वर्षाघोष', 'धनछूहा', 'तार्क्ष्य', भीड़परक पक्षी', 'कौआ' ओ 'कुकूर' मैथिलीमे उपहास-व्यंग्य (सेटायर) ओ मुक्तवृत्त दुहू अभिनव प्रयोगक दृष्टिएँ

प्रसिद्ध अछि तथा वर्ण्य-विषय ओ वर्णन-शैलीमे सर्वत्र तादात्म्य सम्बन्ध स्थापित कएने अछि । कवि एहन प्रत्येक रचनामे प्राचीन अन्योक्तिक नूतन प्रयोग करैत छथि ।'' रमानाथझाक शब्दमे–''हिनक काव्य-प्रेरणाक मूल उत्स थिक पाश्चात्य साहित्य जकरा ओ अपन मौलिक कविक प्रतिभासँ परिमार्जित कएल अछि । ई मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ उपहास-काव्यक, जकरा अंगरेजीमे सेटायर कहल जाइत छैक, कवि मानल जाइत छथि ।'' हिनक प्रत्येक उपहास-व्यंग्यकाव्य कोनो-ने-कोनो व्यक्ति-विशेषकेँ लक्ष्य कए लिखल गेल, परन्तु एहि कविता सभमे चित्रित भए ओ व्यक्ति, व्यक्ति नहि रहि, प्रतीक बनि गेल छथि । एहिसँ कविक अपन सामाजिक पर्यावरणक प्रति सजगता तँ द्योतित होइतहि अछि, संगहि समाजमे व्याप्त निम्नस्तरीयता, अवसरवादिता, स्वार्थपरता प्रभृतिक सेहो व्यंग्यपूर्ण चित्रण होइत अछि आओर हमरालोकनिमे एकर विरोध करबाक विवेक नहि रहल अछि, सभ किछु देखैत जे नपुंसक जकाँ तटस्थ बनल रहैत छी, ताहूपर घोर कटाक्ष कएल गेल अछि । 'कौआ' क अन्तमे ओ कहैत छथि :–

''लोकसँ विवेक हा !
बिनु मारले करपूर जकाँ उड़ि गेल,
केओ एकरा 'हारा' कहत सेहो नहि ।''

तथा 'कुकूर'क अन्तमे :–

''लोकक विवेक हा !
आगिपर मोम जकाँ गलि गेल,
केओ एकरा 'धूर' कहत सेहो नहि ।'

अपन उपहासकाव्यमे कवि मुक्तवृत्तक अभिनव प्रयोगक संग-संग भाषा ओ अभिव्यक्तिशैलीक सर्वथा नवीन स्वरूप उपस्थित करैत छथि जे हिनक पूर्ववर्त्ती रचनामे कतहु नहि भेटैत अछि । उपर्युक्त उद्धरणमे 'बिनु मारले कर्पूर जकाँ' उड़ि जाएब ओ 'आगिपर मोम जकाँ' गलि जाएब उपमानक जे सार्थक प्रयोग भेल अछि से अपरिचित नहि होइतहुँ, अर्थगर्भिताक दृष्टिसँ सर्वथा नवीन कहल जाए सकैत अछि । एहिना 'कुकूर' मे होमकुण्डसँ सटिकेँ सूतल कुकूरक जे संदेहालंकारसँ युक्त वर्णन भेल अछि, ताहिमे 'समेटल कारी कम्बल', 'हेराएल अलकतरा' ओ 'चित्रगुप्तक ओंघराएल मोसिआनी'क उपमान देल गेल अछि, से सर्वथा नवीन थिक एवं निहित व्यंग्यकेँ बड़ मार्मिकताक संग व्यंजित करैत अछि । एहिना अपन उपहासकाव्य सबहिमे कवि अनेकानेक लोकग्राह्य उपमानक प्रयोक कएने छथि जे मैथिलीमे सर्वथा नव कहल जाए सकैत अछि ओ जाहिसँ अद्‌भुत अर्थगर्भित व्यंग्यक समावेश होइत अछि,–यथा–'मूसर सन लोल', 'चार सन डेन', 'लोल वंशी सन', 'पाटी केर पोतना', 'औन्हल अरगासनक कोहा सन' आदि । उदाहरणार्थ 'वर्षाघोष' शीर्षक कवितामे कानोकान भरल डबरामे पीअर-पीअर ढाबुसक उल्लासपूर्ण कर्कशनादक व्यंग्यपूर्ण वर्णन करबाक पश्चात् ओ बेङकेँ कहैत छथिन्ह :–

"ठनकासँ लोकक बहीर कानमे
कथीलए कनेको करतैक असरि
कतबो कए प्रयास करबह तौँ कर्कशनाद"

ओ अन्तमे :–

"किन्तु हे मण्डूक !
देखह कतराक झाड़ लग ।
दबकल केंचुआएल ढोंढ़
प्रसन्न छहु गान सुनि,
तकैत छहु तोरहे दिश" ।

डॉ. 'श्रीश'क अनुसार "वस्तुतः उपहास-काव्यहुमे हुनक अन्य प्रयोगक सदृश वर्ण्य-विषय ओ वर्णन-प्रणाली– दुनूक अन्योन्याश्रित सम्बन्ध स्थापित अछि । हिनक प्रयोगशीलताक एही विशेषताक कारणेँ हिनक रचना सर्वत्र उच्च कवित्वक उदाहरण बनल अछि । परवर्ती नवीन कवि जकाँ हिनका केवल 'टेकनीकहि' अथवा नव-नव अग्राह्य 'प्रतीक' अथवा परिचित-अप्रस्तुतक प्रयोग कए लोककेँ चमत्कृत करबाक दुराग्रह नहि रहैत छन्हि ।"

तंत्रनाथझा 'नमस्या' मे मुक्तकक जाहि प्रणालीक प्रयोग कएल अछि से मैथिली साहित्यमे नव अछि । किछुकेँ छोड़ि शेष समस्त कविता अंगरेजी साहित्यक नवीन कविताक प्रभेद-सदृश रचल गेल अछि से 'सॉनेट', 'वएलेड' आदिक रूपमे परम्परागत भारतीय काव्यसदृश व्यंग्य-विनोदक प्रयोग तँ अछिए, संगहि 'उपहास'क प्रयोगसँ ओ सभ काव्य 'सैटायर'क श्रेणीमे अबैत अछि । एतबा अवश्य जे एहि काव्यक स्वरूप पाश्चात्य किंतु भाव ओ भाषा विशुद्ध भारतीय अछि ओ एहि प्रकारक प्रयोग करबामे कवि सफल भेल छथि । किछु व्यवहारिक गीत सेहो 'नमस्या' मे संकलित अछि जे परम्पराक लीकसँ हटि नवीन रूपमे गेय अछि, यथा 'उचिती'क भासमे 'समदाउनि' जे परम्परा नहि अछि । तात्पर्य जे कवि नमस्याक प्रायः प्रत्येक कवितामे नव प्रयोग कएने छथि, नव प्रतीक देने छथि, नव आयामक सृष्टि कएने छथि ओ वातावरणकेँ नवीन रूपमे उपस्थित कएने छथि । एतबा अवश्य जे ई सभ कविता कविक वैयक्तिक अनुभूतिक प्रतिफल थिक । अर्थात् कवि अपन जीवनमे जाहि-जाहि व्यक्तिक निकट सम्पर्क मे अएलाह ओ जाहि-जाहि तथ्यक अनुभव अत्यन्त लगसँ कएल ताहि सम्पर्क ओ अनुभव केँ ओ मुक्तक काव्यक रूप दए देल । कविक समयक एहिं वातावरणक ओ व्यक्तिक परिचय, जे हुनक सम्पर्कमे छथि, तनिका तँ शीघ्रहि भए जाएत किंतु जे सम्पर्कमे नहि छथि, समय आ स्थानक दूरीक कारणेँ फराक छथि, तनिका एहि 'मुक्तक' सभक वातावरण, प्रयोग, प्रतीक, व्यक्ति ओ तथ्यकेँ बुझबामे बिलम्ब अवश्य लगतन्हि ओ से काव्य-अनुशीलनक दृष्टिएँ समुचित नहि मानल

जायत । तंत्रनाथझाक भाषाक स्वरूप ने अत्यन्त ठेठ अछि आओर ने बेसी अलंकृत । ओहिमे ठेठ ओ अलंकृत शब्दक सम्मिलन छैक जे काव्यक हेतुए उचित कहल जाए सकैत अछि । हिनक प्रत्येक उपहास-काव्य एक-एक व्यक्तिपर आधारित व्यंग्य-विनोदमिश्रित काव्य थिक ओ सभक हेतु ई सम्भव नहि जे कविक समपर्कमे आएल सभ व्यक्तिक परिचय राखए, तैँ ई उपहास-काव्यसभ सामाजिक महत्त्वक अछि । एतबा अवश्य जे एहिमे जे साहित्यिक प्रयोग भेल अछि, उपमान-उपमेयक नवीनता देल अछि, से सभ ग्रहण कए नव साहित्यकार सेहो अपन काव्य-रचनामे चमत्कार-सृष्टि कए सकैत छथि । किछु एहन प्रयोग जाहिसँ कविक सामाजिक रचना-शैलीक संस्तुतिमे सुविधा भए सकैत अछि, जे सामाजिक दृष्टिकोण, उक्ति-बक्रता ओ विनोद-शैलीक सम्बाहन करैत अछि—द्रष्टव्य :—

आगिपर मोम जकाँ गलि गेल, पलासक फूल सन मूड़ी, मूसर सन लोल, चार सन डेन, सोङर जेना लागल हो मेघमे, बिनु मारले कर्पूर जकाँ आदि । एही सभ आधारपर रमानाथझाक कहब अछि जे ''हिनक कविताक मुख्य गुण थिक नवीनता । हिनक नवीनतामे, प्रयोग रहितहुँ 'वाद'क संकीर्णता कतहु नहि रहैत अछि, कारण ओ नवीनताक स्वीकार परम्परासँ विद्रोहक हेतु नहि, विकासक हेतु करैत छथि । हिनक काव्य-प्रेरणाक मूल-उत्स थिक पाश्चात्य-साहित्य, जकरा ओ अपन मौलिक प्रतिभासँ परिमार्जित कएल अछि । ई मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ उपहास काव्य, जकरा अंगरेजीमे सेटायर कहैत छैक, कवि मानल जाइत छथि ।''

कविक 'प्रयाणालाप' ओ 'नवका मकान' कविताकेँ बुझबाक हेतु हिनक वैयक्तिक जीवनक अनुभवकेँ बुझब आवश्यक । महाविद्यालयक वातावरण ओ ओहिमे भेल परिवर्तन कविकेँ केहन प्रतीत होइत अछि, से थिक उपर्युक्त दुनू कविता । अपन प्राध्यापकीय जीवनक मुख्य भागकेँ जाहि ठाम बिताओल, जाहि सम्पर्क सामीप्यमे अनुभव कएल, आसक्ति ओ अनासक्तिक भावमे बहैत तकरा कोन रूपमे कवि स्वीकार कएल अछि :—

''अएलहुँ तूमल तूर सन, जाइत छी पाथर भए
गुरुतर अनुभूति-भार माथ पर उठओने ।

तथा :—

अएलहुँ पथक कुशकंटक पददलित करइत
उच्च-नीच प्रतिरोधन अनायास टपइत
जाइत छी सम्प्रति सम-भूमिअहुमे ठेसइत ।
जयबाक एसगर अछि
आन सभ चल गेलाह जतए-ततए नीक ठाम
संगीमात्र इएह मकान आओर द्वारि देबाल खिड़की आदि ।

अन्ततः ओकरो छोड़ैत कवि कहैत छथि :—

"चललहु हम आइ एकरा सभकेँ नमस्कार कए,
सजल-नयन, व्यथित-हृदय चललहुँ, हम चललहुँ ।"

'नमस्या' मे वर्णित 'आश्विन मास' ओ 'नूतन वत्सर' चौदह पंक्तिक प्रगीत मुक्तक थिक । भाव पूर्णतः मर्यादित ओ भारतीय, भाषा सुघड़ तथा स्वरूप पाश्चात्य–एहि मुक्तक सभक ई विलक्षणता थिक । दर्शन ओ साक्ष्यसम्मत सत्यक अनुपम संगम अछि उपर्युक्त कविता सभमे । 'आश्विन मास'मे कवि प्राकृतिक सौन्दर्यक स्पर्श दैत पौराणिक देवी-भक्तिक उद्रेक उपस्थित करैत छथि । 'पूर्व भक्ति की उपजत हिअहि अथोइ ?' कहि अश्रु बहबैत छथि । 'नूतन वत्सर' मे नव वर्षक शुभागमनपर दार्शनिक दृष्टिएँ जीवन व्यतीत होएबाक गीत गबैत, निराश शोक-ध्वनि सुनबैत छथि आ तद्रूपे प्राकृतिक दृश्य सेहो उपस्थित करैत छथि । दुहू ठाम उपस्थित अछि कविक अनुभवक शालीन स्वर, जाहिमे अपन चतुर्दिक वातावरण प्रति मोह सेहो स्फुट अछि । तंत्रनाथझाक काव्यक इएह विशेषता हुनका आन कविसँ फराक करैत अछि । उपर्युक्त दुनू कवितामे अभिव्यक्तिक विशिष्ट रूप प्रदर्शित कएल गेल अछि । कलापक्ष ओ भावपक्षक दृष्टिएँ उपर्युक्त कविताक श्रेणी सेहो फराक अछि–गम्भीर चिन्तनक भावुक वर्णन जाहिमे आकर्षण ओ स्वाभाविकता अछि ।

'नमस्या'क कविताक लोकप्रियताक आधार आख्यानमूलक काव्य–मुसरीझा, गदहाबला कथा, आदर्श प्रेम एवं अओ सज्जनगण... अछि । 'आदर्श प्रेम' ओ 'अओ सज्जनगण....' पाश्चात्य कविताक अनुवाद थिक । 'मुसरीझा' ओ 'गदहाबला कथा' मैथिली आख्यान-काव्यमे सर्वाधिक लोकप्रिय कथाकाव्य थिक जे समाजक निकटक वस्तुसँ निर्मित, जलसँ सिंचित अछि । प्रतिदिनक सामाजिक ऊहापोहक व्यंग्यमिश्रित चित्रण मुसरीझा' जे कविक मौलिक उद्भावनासँ पूर्ण अछि, हास्य-व्यंग्य-विनोदसँ भरल सरस एवं प्रभावोत्पादक कविता अछि । ढोंगी पण्डितक केहन दुर्दशा होइछ, समाजकेँ निष्क्रिय बनओनिहार पंडितक पाषण्ड कोना ध्वस्त होइछ, अपनाकेँ समाजकेँ चलौनिहार परम्परागत पंडित बुझनिहार लोककेँ केहन–केहन परिस्थितिक समकक्षत्व करए पड़ैत–तकर दृष्टान्त थिक 'मुसरीझा' । 'नमस्या' केँ व्यंग्य-विनोद-हास्यक त्रिवेणी कहि सकैत छी । परम्परा, नवता आ प्रयोगक त्रिवेणी सेहो थिक 'नमस्या' तथा प्रगीतक सुन्दर उदाहरण भरल अछि 'नमस्या' मे । अतः नमस्याक प्रतिनिधि कविता सभमे–वर्षाघोष, धनछूहा, कुकूर, कौआ, तार्क्ष्य, प्रयाणालाप, नूतन वत्सर, नबका मकान, आदर्श प्रेम, मुसरीझा आदि प्रमुख अछि । तार्क्ष्यक एकटा उदाहरण, जाहिमे प्रयोग, व्यंग्य-विनोद-हास्य, सत्य, लोकोक्ति, संस्कृति आदि कोना चकभाउर दैत अछि से देखू :–

मुसर सन लोल, चार सन डेन, नवका आँक सन बनाए लैत छी तार सन घेघ,
तारक खाम्ह सन-सन दुनू अपन टाँग रोपि, सोङर जेना लागल हो मेघमे ।

लघ्वाकार मुक्तक सभ दू-दू पाँतीक रचना अछि। संक्षिप्तता एकर मुख्य गुण अछि ओ ई सभ अपनहिमे पूर्ण अछि। वस्तुतः थोड़ मे बहुत बेसी कहि देबाक सामर्थ्य एहि प्रकीर्ण लघु मुक्तक सभमे अछि जे सघन ओ सटीक अभिव्यक्तिक दृष्टिएँ महत्त्वपूर्ण अछि। एक तँ मुक्तककाव्य स्वयंमे लघु आकारक होइत अछि ओ ओहूमे यदि दुइए पाँतिक मुक्तक होअए तँ ओकरा 'गागरमे सागर' कहि अवश्य प्रतिष्ठित कएल जाएत। ई लघ्वाकार मुक्तक सभ कविक दृष्टिकेँ द्योतित करैत अछि :–

"छटपट करए तृषार्त्त चिर, भूखेँ व्याकुल प्राण,
चहुदिश छलकए रस-कलश, केहन विधिक विधान।"

कृपणक रूपमे सामन्तवर्गपर मार्मिक व्यंग्य देखी :–

"ताधरि भल कए भोग करु, जा रसाल परसाए।
कृपण ! परक अपकर्ष लए, जनु धन धरह नुकाए।"

एखनुक समयमे बेसी उपयुक्त अछि अर्थक, धनक खर्च करबाक उपदेश देब; बाट देखाएब तथा तेँ धनक उपयोगिता देखाए कृपणक स्वभावकेँ मार्मिक रीतिएँ बुझाओल अछि :–

"जे धन नहि दानहि घटए, बढ़ए न राखि नुकाए।
भंगुर ताहि जोगाए सहि, छह जड़ कृपण कहाए।"

एवं प्रकार कहल जाए सकैत अछि जे तंत्रनाथझा 'नमस्या' मे मुक्तक काव्यमे विभिन्न प्रकारक प्रयोगक जे स्वरूप देखाओल अछि ताहि आधारपर ई नवीन कवि तँ प्रमाणित होइत छथि तथा परम्पराक सामान्य निर्वाह, जे विकासमे वाधक नहि हो, तकरहु प्रयास कएल अछि। आत्माभिव्यंजनक सजीव स्वरूप नमस्याक प्रत्येक कविता अछि तथा साहित्यिक कसौटीपर ओकर परीक्षण निश्चये बादक कवि लोकनिक हेतु सम्बल अछि।

मंगलपञ्चाशिका

कविक दोसर मुक्तक-काव्य संग्रह थिक 'मंगलपंचाशिका'। एहिमे चौंसठि गोट मुक्तक संगृहीत अछि तथा एहि सभ मुक्तकक स्वभाव 'नमस्या' क मुक्तकसँ भिन्न अछि। कविक सम्पूर्ण जीवनक सोचल, बिचारल, अनुभव कएल विषय भक्तिक प्रदर्शनक रूपमे पंचाशिकाक माध्यमे प्रस्रवित भेल अछि। कविक जीवनक अन्तिम पड़ावक ई रचना सभ अछि, जाहिमे समस्त देवी-देवताक प्रति भक्ति ओ समर्पणक भाव प्रदर्शित कएल गेल अछि। रचनाक विषय प्राचीन अछि तथा कवितामे आलम्बन रूपमे देवी-देवता छथि; राम-कृष्ण तथा हुनकासँ सम्बद्ध विभिन्न प्रसिद्ध प्रसंगक अतिरिक्त अन्य आलम्बन जेना बलराम-प्रसंग, राम-लक्ष्मण-सीताक प्रसंग आदि। पुनः अन्य आलम्बनमे छथि महादेव-

पार्वती एवं हुनक पुत्रक प्रसंग, गौरी-लक्ष्मीक परिहासक प्रसंग । परन्तु आलम्बन प्राचीन होइतहु कविक वर्णन-शैली पूर्णतः नवीन अछि । प्रचलित विभिन्न प्रसंगमे अपन नवीन उद्भावना दए ओहि प्रसंगकेँ नव बनएबाक सफल प्रयास तथा नव रूपेँ सोचि कोनो प्रख्यात प्रसंगमे अभिव्यक्तिक तेहन रूप देब जे ओ प्रचलित होइतहुँ नव लागय–से कवि देखाओल अछि । ई कविक प्रतिभाक विशेषता थिक जे परम्परागत तथ्यहुकेँ नवीन बनाए लोकानुरंजनमे ओ सफल होइत छथि ।

सामान्यतः कवि कृष्ण ओ महादेवक प्रसंगकेँ अपन एहि मुक्तक सभमे बेसी प्रश्रय देल अछि । कृष्णक विविध लीलाक संग-संग हुनक महाभारतीय चरित्रकेँ आलम्बन बनाए भक्ति प्रदर्शित कएल गेल अछि । तहिना महादेव, गौरी ओ हुनक पुत्रक प्रसंगक प्रचलित विभिन्न कथानककेँ विषय बनाओल गेल अछि तथा सीता-राम-लक्ष्मणक प्रसंग एकाधिक स्थानपर तथा अन्य देवी-देवतामे गणेश, बलराम, सरस्वती, दुर्गाक प्रसंगे सेहो भाव अभिव्यक्त कएल गेल अछि । गौरी ओ लक्ष्मीक परिहाससँ पूर्ण मुक्तक अपन फराक महत्त्व रखैत अछि । एकर अतिरिक्त 'मंगलपंचाशिका'मे विष्णुक एगारह अवतार तथा दशोमहाविद्याक महत्त्व, महिमा ओ वन्दनामूलक रचना अछि । विविध देवी-देवताक प्रसंगक ई मुक्तक सभ विषयक दृष्टिएँ कविक प्रतिभाक मूल उद्भावना नहि मानल जाएत । किछु एहनो मुक्तक अछि जे प्रचलित संस्कृतक श्लोकक अनुवाद अछि । ओ एहू दृष्टिएँ ओकर महत्त्व छैक । एहि सभ मुक्तक-रचनामे कविक दृष्टिकोण साहित्यकारसँ बेसी एकटा भक्तक अछि जे अपन जीवनक समस्ताकेँ अपन उपास्यक प्रति निवेदन करबामे तल्लीन अछि । किन्तु मौलिक कवि भेलाक कारणेँ हिनक एहू भक्तिभावपूर्ण काव्यमे साहित्यक सामान्य ओ विशिष्ट अवयवक स्वाभाविक प्रयोग भेल अछि जाहिसँ एहि भक्तिकाव्यक साहित्यिक महत्त्व अक्षुण्ण भए जाइछ । सभसँ बेसी कविक इच्छाशक्ति ओ तकर बाद हुनक वर्णन-शैलीसँ मुक्तक-काव्यक नव रूपक परिचय होइत अछि । मंगलपंचाशिकाक कोनो रचना दश-बारह चरणसँ बेसी नहि अछि, मात्र दशोमहाविद्याक भक्ति मूलक पद एकर अपवाद अछि । बेसी रचना तँ सात-आठ चरणक अछि । अपन हृदयक समस्त भक्ति-भावकेँ एतेक थोड़े शब्देँ प्रकाशित कए देब एक गोट विशिष्टता अछि । ताहूमे प्रायः कवि साहित्यशास्त्रक परिनियमकेँ विद्वत्तापूर्वक मानैत ओकर आकारकेँ नहि बढ़ए देबाक सफल प्रयास कएल अछि । जेँ हेतुएँ ई सभ भक्तिकाव्य थिक तेँ एकर भाषा सेहो सामान्यसँ किछु फराक, पूर्णतः ठेठ नहि अछि ।

एहि प्रसंगे ई कथन पूर्णतः समीचीन बुझि पड़ैछ–''महाविद्यालय-जीवनसँ अवकाश-ग्रहणोपरान्त प्रारम्भिके समयमे वेश अस्वस्थता समय आनुषङ्गिक रूपेँ मंगलकामनासँ एहि 'मंगलपंचाशिका'क रचना कएल गेल । एकर प्रकाशन १९७३ ई. मे भेल आ ई कालिदासक 'रघुवंश' तथा तुलसीदासक ''हनुमान बाहुक'' सिद्ध भेल । काव्यक प्रयोजन

'शिवेतरक्षये' सद्यः देखल । मंगल-कामना-सूचक मुख्य पचास गोट छोट कविता एहिमे अछि जे नामकरणक सार्थकता सिद्ध करैछ । एतदतिरिक्त परिशिष्टक दशोमहाविद्याक वन्दना, मुखपृष्ठक गणेश-शिव-उमा-वन्दना, प्रारंभिक खर्वस्थूलक सुन्दर अनुवाद मंगलाचरण रूपेँ 'सर्वमंगल भावना'क 'राधा-हरिक वन्दना' आओर अन्तिम रचना समय-सूचक राधा-श्यामक प्रति समर्पण कुल चौसठि गोट कविता भए जाइछ । ई सभ प्रवृत्तिसँ प्राचीन अछि,मुदा उत्कृष्ट मुक्तक-रचना अछि, कारण, सभ संक्षिप्त अछि । सभक आकार शास्त्रीय नियमानुकूले अछि । 'पंचाशिका' केँ पढ़ैत ई स्पष्ट बुझना जाइछ जे कवि नियमक दृढ़तासँ पालन करैत मुक्तक रचना कएने छथि । हिनक ई प्रवृत्ति प्रौढ़ भाषाधिकारक संग गद्यमे लिखल 'आमुख' मे सेहो उत्कृष्ट रूपेँ अवस्थित अछि । 'पंचाशिका'क मुख्य कविता सभमे संक्षिप्तता, सरसता, कल्पनाशीलता, शब्द-चयन, समताक संग भाषाक भावानुरूपता, छन्दक छोट चित्रपटीपर सजीव चित्र द्वारा मार्मिक दृश्य-विधान, प्रसंगक शीघ्र आक्षेप-क्षमता, रसमग्नता, भाव-सौन्दर्य आदि सभ विशेषता सर्वत्र भेटैत अछि । उदाहरणस्वरूप मुखपृष्ठक पंक्तिद्वय :–

"जयतु तितल पट सटि प्रकट, युगल उरोज उमाक ।
जाहि सकाम गणेश-शिव, अपलक सपुलक ताक ।

"एहिमे कलापक्षक प्रशंसनीय सन्निवेशक संग-संग भाव-पक्षक सेहो समाने सन्निवेश अछि । भक्ति, शृंगार आ वात्सल्यक एहन संश्लिष्ट वर्णन विरले भेटैछ । ई दोहा समस्त 'पंचाशिक'क सार थिक, किएक तँ भाव-पक्षक दृष्टिएँ एहि पुस्तकमे मुख्यतः वात्सल्य आ शृंगार-वर्णनक माध्यमे भक्ति-भावनाक प्रतिपादन भेल अछि आ कलाक दृष्टिएँ मुक्तक-शैली अपनाओल गेल अछि । सम्पूर्ण पुस्तकमे प्रयुक्त संश्लिष्ट-वर्णनक जे प्रमुखता अछि, तकरो सुन्दर परिचय एतहिसँ प्रारम्भ भए जाइछ । सद्यःस्नाता उमाक दृश्य-खण्ड-विद्यानक मुक्तकानुकूल मौलिक उद्भावनाक संग कविक सहज आस्थापूर्ण विनोदी एवं व्यंग्यात्मक प्रवृत्ति एतए देखबायोग्य अछि ।"

'मंगलपंचाशिका' मे कविक मूल उद्देश्य अछि मुक्तकक माध्यमे भक्ति प्रदर्शित करब । प्रायः मुक्तक काव्यक संक्षिप्ततांक कारणेँ एहि माध्यमे भावाभिव्यक्ति सघन रूपमे होइछ तथा तीव्रानुभूतिसँ पूर्ण होइछ । भक्तिकेँ अपन भाव-निवेदनमे एहि माध्यमे बेसी स्पष्ट ओ सरल होबए पड़ैछ । तंत्रनाथझाक भक्तिभावनाक विश्लेषण सेहो एहि पुस्तकमे संकलित मुक्तकक अधारपर कएल जाए सकैत अछि, किंतु भक्तिकालक कविक सम्प्रदाय विवेचन सदृश तंत्रनाथझाक सम्प्रदाय विवेचन एहि माध्यमे प्रायः सम्भव नहि होएत । कविक समकालीन अनेको साहित्यकार एखनहु छथि जे हुनक सामान्य जीवन-प्रणालीसँ परिचित छथि । कवि अपन जीवनमे पूर्ण आस्थासम्पन्न भक्त नहि, अपितु विशिष्ट आस्था-सम्पन्न गृहस्थ भए जीवन बिताओल तथा जीवनक अन्तिम चरणमे भक्तिक प्रति बेसी

उन्मुख भेलाह । ओना, सामान्य मैथिल सदृश जीवनमे कहियो कोनो देवी-देवताक प्रति अवहेलनाक दृष्टि नहि राखि, सभ देवी-देवताक प्रति उपासनामे समान दृष्टि राखल । तेँ ई कहब जे तंत्रनाथझाक साम्प्रदाय विवेचन पंचाशिकाक माध्यमे कएल जा सकैछ, युक्तियुक्त नहि बुझना जाइछ । हँ, एतबा अवश्य जे कविक समग्र जीवनक अनुभव ओ प्रौढ़ता एहि मुक्तक काव्यमे भक्तिक प्रस्रवणक रूपमे बहिर्भूत भेल–से अवश्य कहल जाए सकैत अछि ।

'नमस्या' मे कविक व्यंग्य-विनोद-हास्य सर्वत्र परिलक्षित अछि, किंतु 'पंचाशिका'मे एहि तरहक प्रयोग ओतेक नहि भेल अछि । वास्तवमे एहि भक्तिकाव्यमे हास्य-व्यंग्यकेँ ताकए पड़त । ई कहि सकैत छी जे प्रवृत्यनुकूल मौलिकता 'पंचाशिका' में सर्वत्र अछि तथा जखन जतए अवसर भेटि गेलन्हि अछि, अपन विनोदात्मक सहज-स्वाभावक पूर्ण परिचय देलन्हि अछि । एहि प्रकारक भक्ति प्रदर्शनहुँमे कविक एकात्म तादात्यक जे उदात्त चित्र भेटैत अछि ताहिसँ काव्यालम्बनक प्रति कविक सम्मानक भाव आओर प्रगाढ़ होइत देखबामे अबैछ । कृष्ण, शिव ओ दशो महाविद्याक वर्णन कए कवि सामान्य रूपेँ मैथिल संस्कृतिक उपासना क्षेत्रक सामान्य तत्त्व बोध कराओल अछि ।

कृष्णक बाल-लीला-प्रसंगसँ 'मंगलपंचाशिका' पुस्तकक विषयावर्त्तन भेल अछि । कृष्णक बाल्यावस्थामे एहि प्रकारक अनेक घटनासभ अछि जाहिसँ पैघसँ पैघ ओ छोटसँ छोट आकारक काव्यग्रंथक निर्माण भए सकए । कवि ओहि छोट-छोट प्रसंगहिकेँ अपन मुक्तक काव्यक आधार बनाओल अछि जाहिमे–पूतना-वध, माखन, उखड़िमे बन्हाएब, माटि खएबाक प्रसंग, कालियदमनक दृश्य, कन्दुक-क्रीड़ा आदिमे अपन कवित्वक संग-संग कृष्णक अलौकिक शक्ति ओ स्वरूपक दर्शन करबैत भक्ति, शृंगार, वात्सल्य ओ वीर रसक भावकेँ प्रतिनिवेदित कएल अछि । ठाम-ठाम अपन स्वभावानुकूल हास्य-व्यंग्य-विनोदक झड़ी लगएबामे सेहो कवि कोताही नहि कएल अछि । उदाहरणार्थ :–

"भोरहि मथइत दूध यशोदा
धएने मन्थन दण्डक डोर,
फूजल चिकुर, ससरि खस अञ्चल,
भूषण क्वणय, श्वास चल जोर
देखि पुत्र ठेहुनपर चलइत,
तकइत अबइत भेलि विमुग्ध,
विवृत प्रकम्पित पीन पयोधर,
लागल स्रवय निरन्तर दुग्ध
हपसि ताहि करसँ पकड़ि
मुख धए करइत पान

बाल कृष्ण प्रमुदित वदन
करथु विघ्न अवसान ।

प्रस्तुत चित्रमे मातृत्व वात्सल्यक आवेगमे ततेक नमरि जाइछ जे भावोद्‌बोधनमे दृश्यक सहायता स्वाभाविक रूपेँ अपेक्षित भए जाइछ । 'भूषणक क्वरणमे' अत्यन्त सावधानीक स्वर तथा 'ससरि खस अंचल' सँ स्वाभाविक वात्सल्यक उदय होइछ । कृष्णक समस्त लीलाक इएह थिक मेरुदण्ड, जाहिमे माताक ओ वात्सल्यक प्रभाव सभसँ बेसी होइछ । छओ चरणक एहि मुक्तक काव्यमे रसोपलब्धि सेहो स्वाभाविक रूपेँ भए जाइछ । एही प्रकारक संक्षिप्तताक कारणेँ मुक्तक काव्य सभसँ बेसी लोकप्रिय भेल अछि । पंचाशिकाक कोनो कविता एकर उदाहरण भए सकैछ । पूतनावधक प्रसंग तँ आओर बेसी विविधताक उदाहरण अछि :–

कामरूपिणी पूतनाक वक्षहि चढ़ि बैसल
विष-लेपित वक्षोज पकड़ि कसि हँसइत कल-कल
मुख धए चूषण करइत दूधक संगहि जीवन
सुनइत गर्जन निरखि तकर बिकराल सहज तन
हँसइत नयन अशङ्क चित, पयःपानरत पुनि अभय
दन्तहीन, उत्पलजयी बालकृष्ण शशिवदन जय ।

एहि कवितामे लीलानायक कृष्णक खेल-खेलमे राक्षसी पूतनाक वध कए देबाक जे तथ्य अछि, से सत्य होइतहुँ अविश्वसनीय लगैछ, किंतु कृष्णक शक्तिक इएह अलौकिकता हुनक लीलाक आधार अछि तथा कवि एही तथ्यकेँ आधार बनाए पैघ बातकेँ अत्यन्त सहज रूपमे कहि देल अछि । एहिना हास्य-व्यंग्य-विनोदक दृश्य देखबामे अबैत अछि पूर्णतः सामान्य परिसरमे जखन राधाकेँ कृष्ण ओ कृष्णकेँ राधा बनाए गोपीगण अतिशय आनन्द ओ उत्साह पबैत छथि :–

फागु खेलाए गोपिकागण कृष्णहि धए बलकए
हुनक सकल परिधान राधिकासँ कए विनिमय
वर राधाकेँ, बधू-रूप कृष्णहि कए सज्जित
दए करताल भभाए हँसलि तनिका कए लज्जित
अवगुण्ठन तनइत तनिक पूछए की देखना देबहु ?
नतमस्तक विकसित-वदन गोपी रमण सहाए रहु ।

कृष्ण-प्रसंगक प्रायः सभ पदमे कविक दृष्टि बेसी स्पष्ट ओ आतुर बुझि पड़ैछ प्रसंग विशेषक व्यंग्य-मिश्रित अभिव्यक्ति देबामे । मात्र विनोदप्रियताक दृष्टिएँ राधा-कृष्णक कन्दुक-क्रीड़ा सजीव ओ चित्रमय लगैत अछि, से द्रष्टव्य :–

"राधा दौड़ि सरोष यशोदा-निकट गेलि चल

अनुसरइत गोपीपति तनिकर भुज कसि पकड़ल
कुटिल-भृकुटि बजलाह राधिका उर इङ्गित कए
"जननि ! हमर कन्दुक ई राखल अञ्चलतर धए"
नटवर कृष्ण-सराग-मुख,
राधामुख-अवनत-अरुण
मुग्ध-यशोदा-स्मेरमुख,
हरिबाधा राखओ शरण ।"

कतहु अस्वाभाविक, उत्कट अथवा चंचल नहि, पूर्णतः शान्त ओ संचरणीय वर्णन, एकहि ठाम रोष, उपालम्भ, समर्पण, विनोद, मुग्धता, वात्सल्य वर्णित, किन्तु आधार सभक व्यंग्य–इएह थिक 'पंचाशिका'क विशिष्टता ।

साहित्यशास्त्रमे विरह दशाक अन्तर्गत दश गोट कामदशा मानल गेल अछि–अभिलाषा, चिन्ता, स्मृति, गुणकथन, उद्वेग, प्रलाप, उन्माद, व्याधि, जड़ता ओ मृत्यु । कवि एकटा मुक्तकमे कुशलतापूर्वक एहि दशो दशाक वर्णन कएल अछि तथा अन्तमे उद्धवक वचन सुनि घनश्यामक नयनकेँ तरलमात्र भए जएबाक वर्णन कए कृष्णक संवेदनात्मक सहृदयताकेँ बेस संक्षिप्त रूपेँ ध्वनित कए देल अछि :–

तुअ मिलनक उत्कट इच्छासँ, चिन्तन करइत तकर उपाय,
सुमरि तनच्छवि, वरनि गुणावलि, स्मरावेगसँ चेष्टित काय,
संप्रलाप करइत, उन्मद भए जड़-चेतनक विसारि विचार,
छाड़ि निसास पाण्डु दुर्बल तन, भए गतासु सन निस्सञ्चार,
अएलहुँ तनि एहि दशहि तजि
दशम दशा शंकित हृदय
सुनइत उद्धव-बचन हरि
तरल नयन घनश्याम जय ।

एवं प्रकार कृष्णक प्रसंगक 'पंचाशिका' मे विविध रसक हेतु भिन्न-भिन्न मुक्तकक रचना कवि कएने छथि । चीरहरणक प्रसंगमे शृंगारक मार्मिक व्यंग्य-विनोदपूर्ण चित्र उद्भासित अछि । वीररस आवेशसँ पूर्ण मुक्तक सभमे पूतना-वध, कालिय-दमन आदिक संगकंस-वध ओ 'कुवलयापीड़' प्रसंग आओत । शृंगार ओ वीररसक समायोगक वर्णन 'रुक्मिणी-हरण' मे होइत अछि । एकर अतिरिक्त कृष्णक महाभारतीय रूप जाहि ठाम ओ नीतिज्ञ, राजनीति-निपुण, रणनीति-विशारद छथि-ताहि प्रति भक्तिक भावना एकटा नव प्रक्रियाक प्रारम्भ जकाँ लगैत अछि ।

'पंचाशिका' मे पौराणिक आधारहिपर समस्त मुक्तक रचना भेल अछि जे कृष्ण, विष्णु-अवतार, शिव ओ अन्य देवता तथा दशोमहाविद्याक प्रति अछि । शिवक प्रसंग

मुक्तकमे हास्य-विनोद-व्यंग्य सभटा परिलक्षित अछि । लक्ष्मी-गौरीक सरस-परिहासहुपर एकटा मुक्तक अछि तथा सम्बद्ध विविध प्रसंगकेँ आधार बनाए अन्य मुक्तक सभक रचना भेल अछि । शिवचरित्र पौराणिको रूपमे, सर्वशक्तिमान होइतहु, परिहासक आधार बनल देखल गेल अछि । ओना, शिवक प्रसंगक आन तथ्य सेहो वर्णित अछि । हास्य-व्यंग्य-विनोदक प्रयोग करैत किंचित नव कल्पना करबाक अवसर कविकेँ तखन भेटल, जखन–'उमा-महेश'-प्रसंगमे कामदेवकेँ भस्म कए शिव गिजरिजाक निकट गेलाह अछि :–

''मदनान्तक शिव उपगत गिरिजा-वसन रक्त अति
हर-भालस्थ चन्द्र बुझि नयनानल कातर-मति
भय-त्रस्त तनि तनसँ चुबइत स्वेद-सुधा-जल
पड़ितहि व्याघ्र-चर्म जीवित भए वृष लखि गुम्हड़ल
से सुनि मनइत मेघ-ध्वनि, शिखि नृत्यक आरम्भ करु
भए साकांछ परेखि हँसि, उमा-महेश उपाय करु ।''

उत्सुकताक आधिक्यमे चंचल बटुक गणेश शिवक अद्‌भुत स्वरूपक प्रसंग माता पार्वतीसँ अनेकानेक प्रश्न करए लगैत छथि ओ एहि प्रश्नक उत्तर माता दैत छथिन्ह, किंतु उत्तर देबामे सशंकित होइतहु जिज्ञासाक शान्ति करैत छथिन्ह :–

मातः ! की थिक पितृपाद गर बिच ?'' पन्नगपति'
'मस्तक पर' ?'सुरसरि', 'करमे की?' 'परशु निशित अति'
एहि प्रकार मुग्ध गणपति प्रश्नक कए उत्तर
भए सशंक पुछइत ई करए न आब् निरुत्तर
निरखि दिगम्बर पति-वदन
गौरी हँसइत दाबि मुख
हरथु विघ्न-बाधा-रहित
मुदित-चित्त भए, त्रिविध दुख

एहिमे देखल जे एहनो अवसरक आशंका गौरीकेँ भए जाइत छन्हि जे दिगम्बर शिवक प्रसंग कोनो प्रश्न हुनका निरुत्तर ने कए दैन्हि । एहन किंकर्त्तव्यविमूढ़ स्थितिक अनुमान मात्र विनोद-हास्यक सृष्टि करैत अछि ।

एहिना 'विष्णु-शिव-मिलन' प्रसंगमे हास्य ओ विनोदक सर्वथा नव रूप देखबामे अबैत अछि । गरुड़पर असवार भेल विष्णुकेँ अबैत देखि, दिगम्बर शिवकेँ गिरिजा शीघ्रहि करधनी रूपेँ सर्पकेँ लपटाए दैत छथिन्ह, ओ एहि रूपेँ तैयार भेल शिव विष्णुकेँ अरि-आति आनए बिदा होइत छथि । गरुड़केँ समक्षमे देखि, करधनी बनल साप पड़ाए जाइत अछि–'फणि ससरि पड़ाएल प्राण लए' । अनुमानहिसँ शिवक स्थिति केहन होएत से बुझल जाए ? पति दिगम्बर छथिन्ह से बुझि गिरिजाक संकोच कतए धरि ? एतए व्यंग्य-हास्य-

विनोदक जे रूप अछि से अन्यत्र कतए ताकब ? आ तखन कविक सौजन्य ओ नम्रता देखू–'निरखि ताहि विधि शंकरहि, गौरि लजाइति हरथु भय' । रसोपलब्धि ओ विनोदक छटा–दुनू एकहि ठाम देखबायोग्य अछि ।

एहि प्रकारक गौरी-शिवक प्रसंगक पदमे व्यंग्यजनित लालित्य, हास्य ओ विनोदक स्वरूप ओ ताहि संग-संग समर्पणक भाव, दास्यक स्वर भक्तक आह्लाद ओ उपास्यक प्रति निर्मल अभिव्यक्ति-सभ एकहि ठाम भेटैत अछि । 'पंचाशिका' मे एकर अतिरिक्त अछि दशावतार वर्णन, जाहिमे परिस्थिति ओ स्वरूपक सम्मिलन एकहि ठाम होइत अछि तथा विविध अवतारक प्रसंगे कविक भावना द्रष्टव्य अछि । 'नरसिंह' अवतारक चित्र कवि एहि रूपेँ प्रकट करैत छथि :–

"स्तम्भ फाड़ि भए प्रगट उग्र नरसिंह रूप-हरि,
यथा व्याल धर गरुड़, भेक पन्नग, मृग केहरि
दनुज हिरण्यकशिपु रिपुकेँ पछारि देहरि धए
जाँघ राखि तीक्ष्णाग्र नखेँ विदीर्ण उर-थल कए
आँतक माला पहिरि गर, अट्टहास करइत विकट,
शोणिताक्त-कम्पित-सदा नाशथु विघ्न नृसिंह झट ।

एहिमे रूपकक जे चमत्कारिक रूप उल्रेक्षाक सुष्ठु-स्वाद'यथा व्याल-धर गरुड़ भेक-पन्नग' मे भेटैत अछि, ताहिसँ एहि मुक्तमे कविक रचना-कौशलक ओ प्रौढ़-शैलीक स्वाभाविक परिचय प्राप्त होइत अछि । अतः ई उक्ति सर्वथा समीचीन अछि–"कलात्मक वैशिष्ट्यक क्रमिक विवेचन-क्रमहि ई कहब अप्रासङ्गिक नहि जे 'मंगल पंचाशिका' मे कविक काव्यशास्त्रीय ज्ञान जतेक निखरल अछि, ततेक अन्य रचना सभमे नहि । अलंकार, रस, गुण, शब्द-शक्ति, छन्द आदि कविकेँ जेना खूब पचल होइन्हि ।"

तंत्रनाथझाक मुक्तक काव्यक परिशीलनमे जाहि विविध तथ्यक सकारात्मक निरूपण आवश्यक होइत अछि से थिक कविक एहि रचना सभमे भाव ओ कला-पक्षक प्रसंगानुकूल एक दोसराक संग लए चलबाक प्रवृत्ति । कविक सामान्य व्यक्तित्व हिनक मुक्तक काव्यक आधार अछि ओ तेँ व्यंग्य-विनोद-हास्यक रूप सर्वत्र भेटैछ । कल्पना एहन सटीक जे देवी-देवताक प्रसंगक अभिव्यक्तियहुमे कतहु अन्य रूपक स्खलन नहि, सभठाम मर्यादित ओ साहित्यशास्त्रानुकूल । जीवनक आधिभौतिक सुखक लिप्सासँ अपनाकेँ फराक कएने कवि सतत दोसराक निमित्त किंवा सभक निमित्त सहयोगमे तत्पर । 'नमस्या' क मुक्तकमे त्याज्य तथ्यक प्रति मात्सर्य, ओकर वर्णनमे आकर्षण, नवीन प्रयोग ओ से एहन जे समसामयिक ओ बादक रचनाकारकेँ सम्बल प्रदान कए सकए–तेहन विशेषता सभ अछि । तंत्रनाथझाक शैशवक कवि हुनकामे अन्त धरि जीवित रहल, जकर उदाहरण अछि हिनक 'नमस्या' ओ 'मंगलपंचाशिका' ।

गद्य एवं अन्य रचना

तंत्रनाथझाक ख्याति मूलतः कविरूपमे अछि । प्रबन्ध-काव्य ओ मुक्तक काव्यक रचयिताक रूपमे जहिना हिनक ख्याति मैथिली साहित्यमे अछि, तहिना गद्यकार, विशेषकए एकांकीकारक रूपमे हिनक लोकप्रियता बेस अछि । एकांकीक अतिरिक्त हिनक लिखल किछु कथा, लघु-कथा, बालोपयोगी दीर्घ कथा, निबन्ध, आलोचनात्मक ओ अनुसन्धानात्मक निबन्ध, किछु गद्य-पद्यमय अनुवाद, अंगरेजीमे लिखल किछु निबन्ध सभ अछि—जकर विवेचन अपेक्षित । हिनका प्रबुद्ध ओ श्रेष्ठ एकांकीकारक श्रेणीमे राखल जाए सकैत अछि । कथाक रचनामे ई आधुनिक युगक हेतु तार्किक कसौटीपर पूर्णरूपेँ सुदृढ़ कथाक निर्माणक संग-संग जे बालोपयोगी लघुकथा सभक सृष्टि कएल, ताहिमे लोकोत्तर तत्त्वक सेहो समावेश कए देल । फलतः ओ कथासभ संस्कारक रूपेँ बेसी लोकप्रिय भेल । किन्तु मिथिलाक्षरमे लिखल ओ प्रकाशित हिनक 'योगक संगी' तथा 'लघु-कथा' वर्तमान सभ पाठकक हेतु उपयोगी नहि अछि । मिथिलाक्षरक प्रचार थोड़ भेल अछि ओ मैथिलीक सामान्य पाठक आब देवाक्षर मात्रसँ साहित्यिक कर्ममे परिमित अछि, फलतः उपर्युक्त दुनू मिथिलाक्षरमे लिखल पोथी, सभ दृष्टिएँ उपयुक्त भइयो कए बड़ बेसी लोकप्रिय नहि भए सकल । ओना, हिनक गद्यमे लिखल जतेक रचना अछि ताहिमे शास्त्रीय पद्धतिक अनुरसण तँ कएल गेल अछि किन्तु ई स्वयं कोनो साहित्यशास्त्रीय ग्रंथ अथवा निबन्धक रचना नहि कएने छथि । गद्यकार तंत्रनाथझा आधुनिक मैथिलीक गद्यक विकासक्रममे अपन रचना सभक माध्यमे बेस योगदान कएल अछि ।

हिनक उपलब्ध गद्य-साहित्यकेँ विभिन्न वर्गमे बाँटल जा सकैत अछि-यथा निबन्ध, कथा ओ एकांकी, समालोचना ओ अनुसन्धान तथा संस्मरण । हिनक लिखल निबन्ध यद्यपि थोड़ अछि किन्तु ओहि माध्यमे निबन्धकार जेना बस्तुक उपास्थापन कएल अछि, परिचय देल अछि, प्रभाव देखाओल अछि,—निश्चये ओ सभ मिलि हिनक निबन्धकेँ श्रेष्ठ बनबैत अछि । हिनक रचल व्यक्तिनिष्ठ निबन्धक संख्या मात्र दुइ अछि—'हमर ठेंङा' ओ 'अणाची दाना' । 'हमर ठेंङा' निबन्धमे रोचकता अछि ओ ओहि 'रोचकता'क आधार अछि व्यंग्य-

हास्य। वस्तुतः निबन्धलेखन ओ थिक जाहिसँ लेखकक सम्पूर्ण व्यक्तित्वक आभास सामान्य रूपमे भए जाइत अछि। तंत्रनाथझाक सामान्य व्यक्तित्व-सैंतल, बुझनुक ओ प्रभावशाली रूपमे ख्यात अछि। शब्दक खर्च सेहो रचनामे ई अनावश्यक रूपेँ नहि करैत छथि–फलतः सभ ठाम सघन अभिव्यक्तिक चमत्कार सहजहि उपलब्ध होइत अछि। ओ ताहिपर हिनक सरस भावनाक चामत्कारिक अभिव्यक्तिसँ स्वभावतः हिनक निबन्ध पूर्ण रहैत अछि। ओ सरलता अबैत अछि व्यंग्यक अवतारणासँ, विनोदक सृष्टिसँ, परिहासक प्रयोगसँ। हिनक गद्यक विशेषता अछि अकृत्रिम भाषा ओ एहन निर्मल अभिव्यक्ति जाहिमे कखनहु लिखबाकाल शब्दकं अकाल नहि होएत–शब्द सतत भेटितहि रहत। वस्तुतः नव्य-पाश्चात्य शैलीक आधारपर अंगरेजीक चार्ल्स लैम्बक निबन्ध सदृश हिनक रचना होइत अछि। डॉ. जयकान्त मिश्रक विचारेँ मैथिली गद्यमे रचित 'हमर ठेङा' निबन्धमे प्रो. तंत्रनाथझा चार्ल्स लैम्बक अनुकरण करबाक प्रयत्न कएल अछि। एहिसँ 'हमर ठेङा' निबन्धक नव्यता ओ प्रयोगशीलताक अतिरिक्त निबन्धकारक नव्यलेखन शैलीक परिचय होइत अछि।

'अणाची दाना'मे सामान्य कोटिक तत्त्वकेँ अपन प्रयोगधर्मी रचनाक माध्यमे एकटा महत्त्वपूर्ण तत्त्वक रूपमे प्रतिष्ठित करबाक सफल प्रयास अछि। वस्तुतः हिनका लिखबाक समय तर्कसंगत तथ्य ततेक शीघ्रतासँ हिनक मस्तिष्कमे अबैत छन्हि जे ओ कखनहु अस्वाभाविक भइए नहि पबैछ। 'अणाची दाना'क नाम तँ तखन सार्थक, यदि ओहिमे फोड़लापर अणाची भेटए आ तकर बदलामे यदि धनी अथवा जनेर अथवा आने कोनो वस्तु भेटए तँ ओकर नाम अणाची दाना नहि भए 'धनीदाना' अथवा 'जनेरदाना' होइत–किन्तु लेखक सहजतासँ केहन तार्किक तथ्य कहि दैत छथि–ओना नामक विषयमे की कहल जाए? दूधक उत्कृष्ट तत्त्व मलाइ ओ मलत्यागक स्थानविशेषक नाम 'पयखाना'। लेखक वक्रोक्तिक माध्यमे हास्यक सृष्टि ओ व्यंग्यक आधारपर कथ्यकेँ सहज रूपेँ सम्बेद्य बनएबाक प्रयास कएल अछि। एहि प्रकारक निबन्धमे भावना बेसी प्रबल भए उपस्थित रहैत अछि। भावुक हृदयक अभिव्यक्ति स्वतः निवेदित रहैत अछि। केहनो महत्त्वपूर्ण वस्तु यदि सर्वसुलभ भए जाए तँ ओकर महत्ता निश्चये थोड़ भए जाइत अछि। अणाचीदाना, जे बैद्यनाथधामक प्रसाद रूपेँ प्रतिष्ठित अछि, से यदि गामहुक पेठियापर भेटए लागए तँ निश्चये ओ बेसी महत्त्वक नहि रहि जाएत।

दुनू निबन्ध 'हमर ठेङा' ओ 'अणाची दाना' मे निबन्धकार मैथिली गद्यक स्वरूपक परिचय देल अछि। गद्यलेखनमे सभसँ सहज अछि निबन्ध लेखन, किंतु ओ सहजता स्वभावहि नहि आबि जाइत अछि–ओहि हेतु अपन लेखनकेँ बेसी चामत्कारिक बनएबाक प्रयोजन होइत अछि। जेँ हेतुएँ एहन निबन्ध बस्तुनिष्ठ कहल जाइछ तेँ एकर प्रभाव ओ स्वरूप सेहो व्यक्ति-व्यक्तिपर भिन्न रूपक हेइत अछि, ओकर बौद्धिक विकास, अध्ययनक्रम तथा साहित्य-सृजनशील-प्रतिभाक आधारपर एहि प्रकारक निबन्धक समग्रता

बदलैत रहैत अछि ।

हिनक वस्तुनिष्ठ निबन्धक श्रेणीमे अबैत अछि 'प्राथमिक शिक्षा ओ मैथिली', 'संस्कृत विश्वविद्यालय ओ स्त्री-शिक्षा' । एहि प्रकारक निबन्धमे तथ्याश्रित अभिव्यक्ति रहैत अछि तेँ लेखककेँ एहिमे छूट नहि रहैत छन्हि । मैथिलीमे प्रारम्भिक शिक्षाक सम्बन्धमे बहुत किछु लिखल गेल अछि, आन्दोलन भेल अछि, संस्था ओ व्यक्ति संघर्ष करैत रहलाह अछि । सन् १९४८ ई. मे एहि तथ्यकेँ समीचीन रूपमे उठाय तंत्रनाथझा मैथिलीक विकासक मार्गमे सरकारक उपेक्षानीति ओ मिथिलावासीक सुषुप्त भावनाकेँ देखाओल अछि । मातृभाषाक माध्यमे शिक्षा हो, ई तँ राष्ट्रपिताक कथन अछि, किंतु शासनमे सभ बातकेँ बिसरि राजनीतिक रूपमे लाभ-हानिक भावसँ प्रशासन कएनिहार व्यक्तिक समक्ष विचारकेँ राखि, ओकर महत्त्व देखाए, ओहि सम्बन्धमे अपेक्षित अभिलेख प्रस्तुत करब आवश्यक अछि । मात्र नारा देलासँ नहि, अपितु ओकर अन्तरंग भए कार्य कएलासँ अधिकार प्राप्ति बेसी आशा होइछ । तहिना 'संस्कृत विश्वविद्यालय ओ स्त्रीशिक्षा' निबन्ध जे १९७० मे रचल गेल ताहि माध्यमे स्त्री शिक्षामे संस्कृत विश्वविद्यलय आगाँ आबओ, एहि हेतु नियम-परिनियम बनाओल जाए, वातावरण प्रस्तुत कएल जाए, स्त्रीक मौलिक अधिकारक रक्षा कएल जाए–आदि अनेको तथ्यकेँ ई उठाओल । समाजक उत्थान, विकास, अन्य विकसित समाजक संग एकर तुलना ताधरि नहि कए सकब जाधरि मिथिलामे स्त्रीगणकेँ सभठाम स्वाभाविक रूपेँ ओ स्थान विशेषपर विशेष रूपेँ शिक्षित करबाक प्रयास नहि कएल जाएत । वस्तुतः वस्तुनिष्ठ निबन्धमे भाषा पूर्णतः सहज, संयत ओ समयानुकूल होइत अछि ओ ताहि गुणसँ उपर्युक्त दुनू निबन्ध पूर्ण अछि ।

एकर अतिरिक्त हिनक अनेक निबन्ध अप्रकाशित अछि तथा जकर चर्चा तंत्रनाथझा अभिनन्दन ग्रंथमे कएल गेल अछि । एहि अप्रकाशित निबन्ध सबहिमे गद्यकार तंत्रनाथझाक ओएह स्वरूप परिलक्षित अछि, ओएह पाण्डित्य ओ तार्किक पक्ष प्रदर्शित अछि जे सभ ऊपर वर्णित निबनधक क्रममे भेल अछि ।

तंत्रनाथझाक कथासाहित्य सेहो बड़ विशाल नहि अछि । किछु प्रकाशित कथासभ तथा दुइ-गोट छोट-छोट मिथिलाक्षरमे प्रकाशित लघुकथा संग्रह–'योगक संगी' ओ 'लघुकथा' । कथाकार तंत्रनाथझाक सम्बन्धमे डॉ. जयधारी सिंहक उक्ति द्रष्टव्य अछि जाहिमे हिनक कथा लिखबाक समग्र गुण प्रतिबिम्बिति अछि – ''वस्तुतः प्रस्तुत साहित्यकारक समस्त साहित्य-साधना अपूर्व ढंगसँ, अपूर्व चमत्कारक संग प्रतिफलित अछि हिनक हार्दिक ग्राहकताशक्तिसँ, ताहि शक्तिसँ जे हिनका समान रूपसँ लोकगाथाक मर्मसँ तथा आधुनिक, किछु-किछु पश्चिमीय कथा-साहित्यक मर्मसँ परिचित कराए सकल आओर दुनू जातिक साहित्यिक अध्ययनसँ हिनकामे एक अपूर्व, संश्लिष्ट, सहज प्रवृत्ति जागि सकल । हिनक–'योगक संगी' तथा 'लघु कथा' हिनक ताहि जातिक व्युत्पत्तिकेँ सूचित

करैत अछि जे बिनु निश्चिन्त, अवकाशपूर्ण तथा उन्मुक्त चेतना रहने कथमपि सम्भव नहि-कोनहु प्रकारक मानसिक संघर्षक दशामे ई सम्भव नहि जे ताहि प्रकारक कथा कहवामे वा सुनबामे मन लागत। स्थल-स्थलपर मध्य युगक अन्धविश्वास, रहस्यमयता आदि परम्पराक संकेत भेटैछ। आओर आधुनिक समालोचक विश्वासकेँ वहिष्कृत नहि करैत छथि, जँ ओ विश्वास तर्कक पाटिपर धब्ब दए नहि चढ़ि जाए आओर लोकक सहज प्रवृत्तिमे विश्वासक सत्ता कम नहि अछि।

हिनक 'चोर' शीर्षक कथा प्रगतिशीलताक अन्ध अनुकृति नहि थिक, प्रत्युत समाजवादी यथार्थवादक वास्तविक धरातलपर ठाढ़ जीवनक प्रतिबिम्ब थिक आओर इएह तत्त्व अछि तंत्रनाथझाक नवीन प्रयोगक। एकोटा पंक्ति तेहन नहि भेटत जे कठाइन-हास-परिहास जकाँ लागए, जे भासित होइत अछि से अपन शुद्ध रूपमे, जँ व्यंग्यो रहैत अछि तँ केवल तनिके हेतु जे हिनका संग किछु जीवन बितओने छथि, अन्यथा भासित गूढ़-सँ-गूढ़ अर्थ एक निर्दुष्ट चित्रण मात्र रहैत अछि आओर कथा तँ सएह थिक जे सरल, सुबोध रहए आओर अपरिचितसँ अपरिचित पाठक वा श्रोताकेँ बिनु प्रयासेँ रुचि जगाए सकए, चित्रित पात्रक निकटतम बिन्दुपर सुस्थिर देखि सकए। एहिमे कोनो सन्देह नहि जे कथाकारक सुदीर्घ अध्ययन सर्वत्र भासित रहैत अछि, विशेषतः मनोविश्लेषणक सूक्ष्म तथा मर्मस्पर्शी सम्प्रेषणमे। कहल जाइत अछि जे हिनकापर किछु पाश्चात्य कथाकारक प्रभाव पड़ल अछि, किन्तु किछु लोक-कथाकेँ छोड़ि, 'स्टाइल इज मैन' सूत्र सर्वत्र घटित अछि आओर जँ कथन-शैली कथाक प्राण अछि तँ ई कहि सकैत छी जे कथा पढ़बाक समयमे एहन सन अनुभव करैत छी जे कथाकार तहिना रुकि-रुकि कथा लीखि सुनबैत छथि जेना ओ कोनो कथा कहि वा बाजि सुनबैत छथि।''

उपर्युक्त विश्लेषणमे सैद्धान्तिक तथ्य मात्र कहल गेल अछि, एकर व्यावहारिक स्वरूप कथा सभक विश्लेषणसँ स्पष्ट होइत अछि। तंत्रनाथझा द्वारा रचल गेल कथासभमे लघुकथा सभक स्वरूप तँ किछु एहन रूपक अछि जाहिमे लोक-शैलीक चमत्कार भेटैछ। लोकसाहित्यक जे स्वरूप प्रचलित अछि ताही स्वरूपक, भाव ओ विषयक समावेश एहि कथा सभमे कएल गेल अछि। 'योगक संगी' ओ 'लघु कथा'—एहि दुहूमे संगृहीत ई कथा सभ अलौकिक शक्तिक चमत्कारसँ पूर्ण अछि ओ वस्तुतः एही चमत्कारपर ई कथासब आधारित अछि। सम्पूर्ण कथा सभमे शैलीक रोचकता तँ देखबामे अबतहि अछि, विषयमे अलौकिकताक प्रवेशक कारणेँ एहि कथा सभक कथानक सुनबामे नीक लगैत अछि। मिथिलाक सामाजिक परिवेशमे एखनहुँ एहन अलौकिक तत्त्वक प्रति, शक्ति सम्पन्नताक प्रति, आस्था देखबामे अबैत अछि। एहि प्रगतिशील युगहुमे लोकक मोनमे एहि सभ शक्तिक विशालता ततेक व्याप्त अछि जे सामान्यतः लोक ओहि प्रति नतमस्तक रहैत अछि। ओ तेँ एहि कथा सभक प्रभाव सेहो रहितहि अछि। ओना, तर्कक कसौटीपर उचित

रहएबला तत्त्वक महत्त्व तँ क्रमशः बढ़ि रहल अछि, से सत्य, किन्तु संस्कारसँ प्राप्त भेल एहि अलौकिक शक्तिक प्रति लोकक आस्था एखनहुँ ओहिना अछि। इहो सत्य अछि जे जीवनमे किछु विशेष करबाक प्रेरणा लोक एहन शक्तिसम्पन्न व्यक्तियहुसँ अवश्य ग्रहण करैत अछि। एहि सभ कथामे संक्षिप्तता तँ अछिए, उत्सुकता सेहो सतत बनल रहैत अछि, मनलग्गू शैली होएबाक कारणेँ लोक एकरा गाम-घरक खिस्सापिहानी जकाँ सुनितहुँ अछि।

वर्तमान मैथिली कथाक विकासक क्रममे जे तथ्य सभसँ बेसी प्रभावकारी भेल अछि, से थिक कोनहु कथामे मनोविश्लेषण एवं पात्रक चरित्र-चित्रण, किंतु सभ किछु आधारित होइत अछि कथानकक मर्मस्पर्शी भाव ओ बिन्दुपर ओ तेँ आधुनिक युगक प्रत्येक कथाक विषय वर्त्तमान ओ चरित्र गतिशील रहैत अछि। तंत्रनाथझा लिखित 'चोर' एहने नव्यतम कथाक उदाहरण अछि। एहि कथामे सरल शैलीक माध्यमे व्यंग्य सेहो कएल गेल अछि जाहिसँ कथाक कथानकमे आकर्षणक सृष्टि भेल अछि। सामान्य रूपेँ सामन्ती प्रवृत्तिपर प्रहार, शक्ति नहि तेँ देखार भए नहि तँ चोरि कए, एहि कथाक मूल भित्ति अछि। कर्जक तगेदासँ त्रिभुवना ओ ओकर नवीना पत्नी, दुहू मर्माहत होइत अछि ओ केहनो पाप करबाक हेतु दुनू तत्पर भए जाइत अछि। किन्तु देवानजी अपन शानमे रहैत अछि ओ सभक चरित्र, बनौआ चरित्र कोतबालक ठहकब सुनि अकस्मात ढनमनाए जाइत छैक। चोर चोरि करत किंतु ताहि हेतु साहस, धैर्य इत्यादि गुण चाही, मुदा जखन त्रिभुवना चोरि करए जाइत अछि, लेखकहिक शब्देँ–"पाएर थरथराइत, हाथ कँपैत। कतोक कालेँ घरमे प्रवेश कएलक भालरि जकाँ कँपैत। अपने हृत्कम्प अपने सुनए, ठाढ़ नहि रहि भेलैक, लुद्द दए बैसि रहल।" एहि कथामे कथाकार चरित्रक विश्लेषण जाहि स्वाभाविक रीतिएँ कएल अछि, सएह तँ आधुनिक कथाक आधार अछि। 'चोर' कथामे मनःविश्लेषणक विशेष चमत्कार अछि, घटनाक्रममे स्वाभाविकता, सहज शैली ओ आधुनिक परिवेशक प्रवेश–मुख्य विशेषता अछि। परम्पराक निर्वाह ओ आधुनिकताक आलम्बन एहि दुहू तथ्यकेँ एहि कथामे देखल जाए सकैत अछि।

एकांकी

नाटकक एक विशिष्ट भेद अछि एकांकी। जेँ ई एके अंकक होइत अछि तेँ एकांकी कहल जाइत अछि। एक अंकक रहबाक कारणेँ भावसंयोजन, तथ्यनिरूपण, चरित्र-चित्रण, घटनाक संघटनमे एकांकीकारकेँ बड़ श्रमसँ थोड़ समय ओ स्वरूपमे उपर्युक्त तथ्यकेँ स्पष्ट करए पड़ैत छन्हि। तेँ प्रत्येक एकांकीमे सघन अभिव्यक्तिक चमत्कार देखबामे अबैत अछि। सघन अभिव्यक्ति-सम्पन्न होएबाक कारणेँ एकांकीक प्रभाव सेहो तीक्ष्ण होइत अछि। आओर एही तीव्र प्रभावितिक कारणेँ एकांकीक लोकप्रियता ओना

तँ सभ युगमे, किन्तु विशेषकए आधुनिक युगमे बेसी बढ़ल अछि। जहिना उपन्यास ओ कथा, प्रबन्ध ओ मुक्तक काव्य, तहिना नाटक ओ एकांकीक स्वरूपकेँ अपन विशेषतासँ युक्त प्रयोग भेल ओ सामान्य लोक एकरा खूब मोनसँ स्वीकार कएलक। कम समयमे अधिक तथ्य सघन अभिव्यक्तिक माध्यमे भेटि जाएब, स्वयं मे एकटा विशेषता अछि ओ से एकांकीक माध्यमे नीकजकाँ होइत अछि तथा घटैत घटनाक सद्यःरूप एहि माध्यमे देखाओल अछि तेँ एकर प्रभाव सेहो गम्भीर पड़ैछ। एकर इहो विशिष्टता अछि जे रंगमंचीय विधान सेहो एहिमे सम्पूर्ण नाटक सदृश करए नहि पड़ैछ–फलतः कम साधन, समय ओ स्थानमे एकांकीक अभिनय भए जाइत अछि ओ प्रभावकारी सेहो होइत अछि। आधुनिक युगमे एकांकीक बेसी प्रयोग-प्रभावक इएह कारण अछि।

तंत्रनाथझाक एकांकी 'एकांकी चयनिका' मे प्राप्त अछि। एहिमे संकलित एकांकी सभक रचना चारिक दशकमे भेल ओ तेँ आधुनिक मैथिली एकांकीक प्रारम्भिक समयक ई सभ रचना थिक, से मानल जाए सकैत अछि। जहिना 'साहित्य-पत्र'क माध्यमे प्रकाशित 'कीचक वध' प्रबन्धकाव्यक आधारपर तंत्रनाथझा कवि-रूपमे लोकप्रिय भेलाह, तहिना 'एकांकी-चयनिका'क एकांकीक आधार पर तंत्रनाथझा एकांकीकारक रूपमे ख्यात भेलाह। बादमे ई कवि कहाएब बेसी पसिन्न कएल तेँ मुक्तक काव्यक संग-संग दोसरो प्रबन्ध काव्य 'कृष्णचरित'क रचना कएल–किन्तु पुनः एकांकीक रचना नहि कएल। प्रस्तुत 'एकांकी चयनिका' मे पाँच गोट एकांकी संकलित अछि–'कओलेजक प्रवेश', 'पन्ना', 'उपनयनाक भोज', 'तमघैल' एवं ''घटकक पराभव''। एहिमे 'पन्ना' एकांकी ऐतिहासिक इतिवृत्ति थिक तथा शेष चारू एकांकी उर्वर कल्पनाशीलताक माध्यमे प्रकाशमे आएल अछि। एहि संग्रहक पाँचो एकांकी अपन विशिष्टतासँ ताहि रूपेँ पूर्ण अछि जे तंत्रनाथझा श्रेष्ठ एकांकीकार मानल जाइत छथि। 'कओलेजक प्रवेश', 'घटकक पराभव' ओ 'उपनयनाक भोज' एकांकी सभक मंचन मिथिला ओ मिथिलासँ बाहर कतेको ठाम सफलतापूर्वक भेल अछि। सभ ठाम एकर कथ्य ओ चरित्रक प्रति दर्शक सामञ्जस्य स्थापित कएलक अछि। यदि विषय ओ चरित्रक संग दर्शक-पाठक अपनाकेँ एकाकार कए लेअए तँ ओहि एकांकीक सफलता सद्यः भेटि जाइत अछि। हिनक 'कओलेजक प्रवेश' मे कओलेजमे प्रथम वर्षक छात्रक उत्साहक जाहि चित्रकेँ लेखक प्रदर्शित कएल अछि, सएह एकर सफलताक आधार अछि। व्यंग्य-विनोद हिनक सभ रचना, गद्य हो किंवा पद्य, रहितहि अछि ओ व्यंग्यक प्रभाव तँ विशिष्ट रूपेँ पड़ितहि अछि–तेँ एहि एकांकी सभमे व्यंग्य-विनोद–हास्यक अद्‌भुत सृष्टि देखबामे अछि।

'कओलेजक प्रवेश' एकांकीक नायक छथि बिजुलीकान्त, जे अपन महत्त्वाकांक्षामे लीन भए आइ. सी. एस. होएबाक स्वप्न देखैत छथि। प्रथम वर्षक छात्र होएबाक कारणे हुनका अनुभव थोड़ छन्हि ओ तकर लाभ, जेना होइत छैक, द्वितीय वर्षक छात्र नन्नू

उठबैत बिजुलीकान्तकेँ ज्योतिषीक ओहिठाम लए जाइत छथि । ज्यौतिषी तेहन भाषामे हिनका भविष्यक हाल कहैत छन्हि जे भविष्यमे असफलताकेँ मानि ई अपन मोटा-चोटा बान्हए लगैत छथि । पश्चात् नन्नू हुनका प्रबोधन कए ज्यौतिषीक उक्ति ''मान बेसी द्रव्य कम, परिश्रम अधिक, अधिकार न्यूने'' केँ हुनका भविष्यमे हाइकोर्टक जज बनबाक व्याख्यासँ संतुष्ट करैत छथि । कथावस्तुकेँ बेसी पुष्ट करैत अछि व्यंग्य ओ हास्य तथा ज्यौतिषीक चरित्र । सभ मिलाकए ई एकांकी एकटा रोचक प्रहसनक रूपमे लोकप्रिय भेल । अनेक स्थानपर एकर मंचन भेल । एहि एकांकीक मुख्य विशेषता कथा-संयोजन, कथोपकथनक संघटन, व्यंग्यात्मक शैलीक प्रयोग तथा चारित्रिक विकासमे अछि । उपनयनाक भोज एकटा धूर्त्तइक चित्र अछि । बहुरीझा सम्पन्न सद्गृहस्थक ओहि ठामक उपनयनमे निमन्त्रण नहि पाबि अपनाकेँ अपमानित बुझि अपन धूर्त्तता देखाए तेहन चक्रचालि चलैत छथि जे पाहुनक घोड़ीक चोरि भए जाइत अछि । ओ वस्तुतः चोरि कराओल जाइत अछि तथा से पुनि बहुरीझा नाम काढ़ि घोड़ी तकबाए अनैत छथि फलतः कचरिकए भोज खाइत छथि । एहि एकांकीमे खबास, टुनटुनमा, घोड़ीक सहीस ओ बहुरीझाक चरित्र बेसी हास्य ओ विनोदक सृजन करैत अछि–व्यंग्य सम्पादित करैत, विनोद प्रस्तावित करैत अछि । उपनयनाक भोज एकांकी टिपिकल-भोजी ओ खाधुर ब्राह्मणंक मानसिक ऊहापोहकेँ स्पष्ट करैत अछि । 'तमघैल' एकांकीमे पंडित श्रीकान्तझाक मित्र मास्टरक बुद्धिक ओ रूप भेटैत अछि जाहिसँ अपनहि घरमे अपन पुत्र द्वारा होइत अनादरसँ त्राण पबैत पुनः आदरसँ देखल जाइत छथि । एकटा फूसिक घटनाक कल्पना कए दू गोट तमघैल आँकड़-पाथरसँ भरि घरहिमे गाड़ल जाइत अछि ओ आब हिनकासँ किछु नहि भेटत से सोचि जे पुत्र लोकनि अवकाश-प्राप्त पिताक अनादर करए लागल छलाह से ई बुझि जे दू गोट तमघैल गहना-टाकासँ युक्त घरहिमे गाड़ल अछि-मास्टर साहेबक आदर पुत्र द्वारा होबए लगैत अछि । मृत्युक पश्चात जखन ओहि तमघैलकेँ उखाड़ल जाइत अछि तँ ओहिमे भेटैत अछि आँकड़-पाथर ओ एकटा पुर्जी जाहिपर लिखल अछि जे एहि तमघैलमे किछु नहि अछि । एहि एकांकीमे शिक्षा अछि, पंडितक मित्र मास्टरक आधुनिक प्रकारक बुद्धिक क्रम अछि, मास्टरक अपन सामान्य अवस्थाक मित्र ओ हुनक पुत्र सभक बदलैत भाव ओ चरित्र अछि । व्यंग्य ओ विनोद एहू एकांकीमे अछि, जे हास्यक अवतारणा करैत अछि, एकटा प्रपंच सभ प्रकारक कष्टसँ मुक्तिक कारण बनैत अछि । 'घटकक पराभव' मे एकटा शिक्षित युवकक महत्त्वाकांक्षाकेँ ध्वस्त होइत देखाओल गेल अछि । युवक मदन चाहैत छथि विवाह करी ओहन कन्यासँ जे रूप अे गुणमे सुन्दरि होथि एहि हेतु ओ स्वयं कन्याक इन्टरभ्यू लैत छथि । एहि क्रममे ओ कतोक कन्यागतकेँ अपमानित कए विदा कए दैत छथि । घटक लोकनि फेरीमे पड़ि जाइत छथि, अपमानित होइत छथि । मुदा अन्तमे मदन अपनहि फेरमे पड़ि जाइत छथि एहन वाक्चतुरा, बुधियारि ओ रूपवती

कादम्बरी नामक कन्यासँ–जकर एकोटा प्रश्नक उत्तर मदन नहि दए पबैत छथि । मदन मुग्ध भए प्रस्ताव करैत छथि, किन्तु ओ कन्या हिनका अस्वीकार कए दैत छन्हि । मिथिलामे वैवाहिक सम्बन्धक एखन धरिक स्वरूपकेँ छिन्न-भिन्न करबाक नेआर कए एहि माध्यमे बहिष्कार कएल गेल अछि । मार्मिक व्यंग्यक माध्यमसँ सनकल माथक इलाज कएल गेल अछि । 'पन्ना' थिक एकटा एहन ऐतिहासिक एकांकी जाहिमे पन्ना धाय शिशु राजा उदयसिंहक प्राणक रक्षा अभिभावक बलवीरसिंहसँ, अपन पुत्रक बलिदान दए करैत छथि । बलवीरसिंह शिशुराजकुमार उदयसिंहक अभिभावक अछि, किन्तु शिशु राजाकेँ मारि स्वयं राज्य हथिया लेबाक नेआर करैत अछि । ई बात खुजैत अछि नौआसँ ओ पन्ना धाय अपन पुत्रक बलिदान कए शिशुराजा उदयसिंहकेँ बचा लैत छथि । ई थिक ऐतिहासिक घटनापर आधृत एकांकी ओ एहि माध्यमे चारित्रिक उत्कर्ष, त्याग, बलिदानक आदर्श उपस्थित कएल गेल अछि । हास्ययुक्त प्रहसन लिखबामे निपुण, व्यंग्यक माध्यमे मार्मिक चित्र उपस्थित करबामे सिद्धहस्त तंत्रनाथझा ऐतिहासिक आदर्श-चरित्रकेँ कोना प्रस्तावित करैत छथि– से एकटा आओर हुनक विशेषता थिक ।

उपर्युक्त पाँचो एकांकीमे घटनाक जाहि काल्पनिक स्वरूपकेँ कथावस्तुक आधार बनाओल गेल अछि ताहिसँ चरित्र ओ एकांकीक विषय-वस्तुक नीक जकाँ व्यख्या भए जाइत अछि । एकांकीक समस्त तत्त्वक यथास्थान प्रयोगसँ ओकर रमणीयता बढ़ल अछि तथा व्यंग्य-विनोद-हास्यक सृजनसँ ओहिमे चमत्कार आएल अछि, वस्तु प्रभावशाली, प्रभाव तीक्ष्ण, चरित्र आदर्शक रूपेँ प्रस्तुत भए सकल अछि । हिनक एकांकी सभमे प्रस्तुतीकरण बड़ मोहक ढंगे भेल अछि तथा शैली सभठाम मनोहारी रहल अछि । भावानुकूल ओ पात्रानुकूल भाषाक प्रयोगसँ एहि एकांकी सभक सफलता असंदिग्ध अछि । इएह कारण अछि जे एकांकीसभ मात्र साहित्यिक एकांकी नहि भए अभिनयक दृष्टिसँ सेहो बेस सफल सिद्ध भेल अछि । अभिनय योग्य एकांकीक मुख्य गुण होइत अछि ओहिमे कथोपकथनक सरलता ओ छोट-छोट अभिव्यक्ति द्वारा पात्रक दर्शकक संग साक्षात्कार ओ से एहि एकांकी सभमे पूर्णरूपेँ वर्त्तमान अछि । रंगमंचीय निर्देश दए एकांकीकार अभिनयकेँ आओर बेसी सुलभ कए देने छथि संगहि रंगमंचीय विधानक सुन्दर ज्ञान छन्हि–तकरो परिचय एहिसँ भेटैत अछि । अतः एहि सम्बन्धमे डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश'क कथन उपयुक्त बुझि पड़ैत अछि जे–"तंत्रनाथझा प्रथम एकांकीकार छथि जनिक पाँच गोट एकांकी प्रथम बेर संकलित भए प्रकाशित भेल । हिनक एकांकीमे हास्य-व्यंग्यक नियोजन उत्कृष्ट कोटिक अछि, स्थान-स्थानपर अन्तःसंघर्षहुक समावेश नीक जकाँ भेल अछि ।"

एकांकी सभमे विशेषरूपेँ समाजमे पसरल, महत्त्वाकांक्षामे ओंघराएल, अपन सामन्ती प्रभावमे बोरिआएल एहन व्यक्ति ओ घटना सभक चित्र अंकित अछि जाहिसँ

समाजक विकास अवरुद्ध अछि। व्यंग्य ओ विनोद तथा हास्यक माध्यमसँ एहि प्रकारक चरित्र सभक सामाजिक प्रतारणा बेसी आवश्यक बूझि लेखक ओहन चरित्रसँ समाजकेँ साकांक्ष करबाक चेष्टा कएल अछि। थोड़ेक कालक हेतु अपन सीमित साधनहुमे महत्त्वाकांक्षाक अपन बढ़ल आवेगकेँ शान्त करबाक अथक प्रयास कोनो व्यक्ति द्वारा होइत तँ अवश्य अछि, किन्तु प्रकारान्तरेँ समाज ओकरा नकारिए कए आगाँ बढ़ैत अछि। समाजक विचारकेँ दूषित कए एहन-एहन चरित्र तुरन्त अपन चलाकीसँ सभकेँ मातु कए दैत अछि, किन्तु ओहन प्रवृत्ति समाजक विकासक चिरस्थायी समाधान नहि कए सकैत अछि। अपन ओरिआएल गपसँ, विवेकसँ, सौजन्यसँ, प्रारम्भमे एहन व्यक्ति सफल भए जाइत अछि, किन्तु पश्चात् ओकर भेद खुजैत अछि ओ समाजक हेतु ओ कतेक अवांछनीय तत्त्व अछि से बादमे पता चलैत अछि। तंत्रनाथझा एहन प्रवृत्तिकेँ चिन्हबैत समाजकेँ ओहिसँ साकांक्ष करबाक प्रयास अपन एकांकीसभमे कएल अछि। 'उपनयनाक भोज'क बहुरीझा एहने चरित्र छथि, 'पन्ना'क बलवीरसिंह आदि एहने पात्र छथि। एकर अतिरिक्त एकांकी सभमे आधुनिक तत्त्व, पात्रक मनोविश्लेषण द्वारा तथ्यकेँ प्रकाशित करबाक प्रयास कएल गेल अछि। वाक्चतुर पात्र सभक मनोवृत्ति ओ अभिव्यक्ति एहि रूपमे देखबा योग्य अछि। आधिकारिक कथाक मध्यहि अवान्तर ओ 'क्षेपक' कथाक प्रयोग सभसँ एक दिशि एकांकीक तीव्र प्रभावन्विति एहिसँ जगजियार होइत अछि। 'एकांकी चयनिका'क प्रत्येक एकांकीक विषय-योजनामे चमत्कार अबैत अछि तँ दोसर दिशि एकांकीमे प्रभावक तीव्रता तँ अछिए। अतः हिनक एकांकी सभ मैथिलीक आधुनिक कालक एकांकी-लेखन-कलाक विकासक मार्गकेँ प्रशस्त करैत अछि, बेसी दमगर आधार प्रस्तुत करैत अछि।

तंत्रनाथझाक गद्य-साहित्यक उपर्युक्त सभ प्रकारक निबन्ध, कथा, एकांकीक अतिरिक्त हिनक किछु अनुशीलन ओ अनुसन्धानात्मक निबन्ध, मैथिली भाषाक विकाससँ सम्बन्धित निबन्ध ओ किछु संस्मरणात्मक निबन्ध अछि। एहि सभक संख्या अछि थोड़ किंतु एहि सभक माध्यमे निबन्धकार मैथिली साहित्यक उपलब्धि, ओकर विकास एवं अन्य रूपक समस्या तथा मिथिला क्षेत्रक महापुरुष लोकनि—जे साहित्य ओ अन्य प्रकारक ज्ञान-वृद्धिक, रचना प्रकरणसँ सम्बद्ध रहि मिथिलाक उत्थान चाहल, तनिका लोकनिक सामीप्य ओ सम्पर्कसँ पूर्ण संस्मरण सेहो लिखल अछि।

तंत्रनाथझाक अनुसन्धानात्मक निबन्धमे सन्तकवि साहेब रामदास, मिथिला भाषामे नाटक परम्परा, कवि रविनाथ कृत १३०४ सालक रौदीक वर्णन आदि प्रमुख अछि।

हिनक निबन्ध 'साहेब रामदास'मे निबन्धकार मैथिलीक प्रथम 'सन्तकवि'क सम्बन्धमे अपन विचार रखल अछि, जाहिमे हुनक जीवनीसँ सम्बद्ध तथ्यकेँ एक माँजल अनुसन्धित्सु सदृश रखबाक सफल प्रयास कएल अछि। सम्पूर्ण जीवन निर्वाहमे साहेब

रामदास अपन मातृभूमिसँ ततेक सम्पृक्त रहलाह जे ओ सभ किछु, घर-आङन, परिवार, मोह-मायासँ मुक्त भइयो कए मिथिला जनपद, अपन मातृभूमिसँ फराक नहि भए सकलाह तकर स्वरूप एहि निबन्धमे प्रकाशित कएल गेल अछि। सन्तकवि साहेबरामक सम्बन्धमे हिनक स्थापना सटीक अछि। 'मिथिला भाषा नाटक परम्परा' हिनक एहन निबन्ध अछि जाहिमे मैथिली साहित्यमे नाटकक विकास-परम्पराकेँ देखबैत कतोक नव तथ्य समक्षमे राखल अछि, संगहि पूर्व समालोचक द्वारा कहल गेल कतोक भ्रामक तथ्यक निवारण कएल अछि। विद्यापतिक 'गोरक्ष विजय'क ऐतिहासिकताक प्रतिपादन करैत एहि सम्बन्धक भ्रामक दृष्टिकेँ हटाओल अछि। मैथिली नाट्य-परम्परा तँ विद्यापतिसँ पूर्वहिसँ आबि रहल अछि तेँ कोनो आलोचकक एहिसँ भिन्न मान्यताकेँ हटाए अपन एहि स्थापनाकेँ प्रस्तावित कए निबन्धकार निश्चय एकटा सफल अनुसन्धानक मार्गकेँ प्रशस्त कएल अछि। एकर अतिरिक्त हुनक अन्य एहि कोटिक निबन्ध सबहुमे सेहो अनुशीलन आ अनुसन्धानक तथ्य निरूपित होइत अछि।

हिनक संस्मरणात्मक निबन्धमे डॉ. अमरनाथझा ओ डॉ. आदित्यनाथझा तथा 'एकावली परिणय' महाकाव्यक प्रकाशनक संस्मरण अछि। एहि सभ संस्मरणमे लेखकक आत्मीय भाव निवेदित अछि। उपर्युक्त तीनू निबन्ध हिनक सम्बन्धी लोकनिक सम्पर्कक थिक जाहिमे डॉ. अमरनाथझा ओ आदित्यनाथझा, जे हिनक ममिऔत भाइ छलथिन्ह, तनिका लोकनिक जीवनसँ हिनक घनिष्ठताक वर्णन भेल अछि। 'एकावली परिणय' महाकाव्यक रचयिता हिनक श्वसुर कविशेखर बदरीनाथझा छलथिन। मैथिली 'साहित्य-पत्र' मे एहि महाकाव्यक प्रकाशन कोना प्रारम्भ भेल, तकर संस्मरण एहि निबन्धमे अछि। उपर्युक्त मनीषी लोकनिक सम्पर्कसँ मैथिली साहित्यक विकासमे गति आएल तथा लेखकक सम्पर्क एहि महापुरुष लोकनिक संग आत्मीय छल ओ ताहि सम्बन्धक दुइ-चारि छोट, किन्तु महत्त्वपूर्ण घटना सभक विवेचन कए लेखक एहि संस्मरण सभकेँ विशिष्ट ओ समीचीन बनाओल अछि।

उपर्युक्त विवेचनमे गद्यकार तंत्रनाथझाक विविध पक्षक गद्य साहित्यक जे विश्लेषण भेल अछि ताहि आधारपर हिनका सफल कविक अतिरिक्त प्रांजल गद्यकार कहवामे कोनो तारतम्य नहि बुझना जाइत अछि।

एकर अतिरिक्त तंत्रनाथझाक लिखल अछि किछु अनुवाद, जे पद्यात्मक ओ गद्यात्मक–दुनू अछि। हिनक पद्यानुवाद अछि–विद्यापतिक कीर्त्तिलताक दुइ पल्लवक अनुवाद, संस्कृतक दुइ स्तोत्रक अनुवाद, गोल्डस्मिथक तीन गोट कविताक अनुवाद तथा गद्यानुवादमे हितोपदेशक गद्यांशक अनुवाद। एकर अतिरिक्त किछु आओरो हिनक अनुवाद सभ अछि जे बंगला, संस्कृत आदि भाषासँ भेल अछि, किंतु से सभ प्रकाशित नहि भए सकल अछि।

अनुवाद करब एक विशिष्ट कार्य अछि। कोनहु लेखकक हेतु भाषान्तरक अनुवादमे कमसँ कम दुइ भाषाक ज्ञान रहब आवश्यक होइत अछि ओ से परिमार्जित ज्ञान। आ जँ कोनो लेखक अनेक भाषासँ एक वा बेसी भाषामे अनुवाद करथि तँ निश्चये हुनका बहुभाषाविद् कहल जाए सकैत अछि। तंत्रनाथझा मैथिलीमे संस्कृत, बंगला, अंगरेजी आदि भाषासँ अनुवाद कएल। अवहट्ठसँ आधुनिक मैथिलीमे अनुवाद कएल ओ एहि आधार पर तँ निश्चये हिनका बहुभाषाविद् मानए पड़त। मूल भाषाक कथनकेँ यथातथ्य अनुवादक भाषामे राखब कठिन कार्य अछि ओ तकर निर्वाह तंत्रनाथझा कएल अछि। कीर्तिलताक एक-दुइ पदक उदाहरण पर्याप्त अछि। मूल पाँती अछि :–

''माता भणइ ममत्तवह मन्ती रज्जहि नीति।
मझ्झु पिआरी एक पह वीर पुरिस का रीति॥''

अनुवाद :

''माता कहथि ममत्वसँ मन्त्री राजक नीति।
हमर प्रिय पुनि एक पओं वीर पुरुष केर रीति॥''

मूल तथ्यकेँ सोझ ओ सरल भाषामे रूपान्तर कए तंत्रनाथझा मौलिक रचनाक अतिरिक्त अनुवाद क्षेत्रहुमे सफलतापूर्वक प्रवेश कएल अछि। वस्तुतः एहिना हिनक संस्कृत ओ अंग्रेजी भाषाक अनुवादक क्रम अछि जाहिमे शब्दानुकूल भावकेँ स्पष्ट करबाक प्रयास कएल गेल अछि। तंत्रनाथझाकेँ संस्कृत, अंग्रेजी, बंगला आदि भाषापर समान अधिकार छलन्हि ओ तकरे प्रतफिल थिक जे अनुवादक सूक्ष्म तत्त्वसँ अपन अभिव्यक्तिकेँ पुष्ट कएलन्हि। तंत्रनाथझाक अनुवादमे हुनक भाषाक अधिकार सद्यः परिलक्षित अछि। ओना, देखल जाइत अछि जे अनुवादक रचनामे मूल भाषाक भावकेँ ओही रूपेँ राखब कठिन होइत अछि। अनुवादक ई श्रेयस्कर कार्य होइत अछि जे ओ मूल भाषाक कथ्यकेँ बेसीसँ बेसी भावक निकट राखि सकथि। सभ भाषाक अपन-अपन स्वरूप होइत अछि, व्याकरण होइत अछि ओ से अन्य भाषासँ निश्चित रूपेँ फराक होइत अछि। अनुवाद कलाक ई श्रेष्ठता अछि जे मूल भाषाक कठिन शब्दहुकेँ अनुवादक भाषामे सरल रूपमे राखल जाए जाहिसँ ओहि मूल भावक कोनो रूपमे विसंगति नहि होअए। तंत्रनाथझा एहि तथ्य सभकेँ ध्यानमे राखि भाव व्यक्त कएल अछि, अनुवाद कएल अछि ओ हिनक अनूदित कोनो स्थल एहन नहि अछि जाहि ठाम गतानुगतिकताक दोष होअए। अतः श्रेष्ठ अनुवादकक रूपमे हिनका परिगणित कएल जाएत।

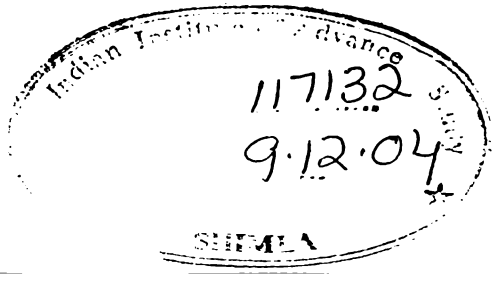
Indian Institute of Advanced
117132
9.12.04
SHIMLA

तंत्रनाथ झा (१९०९-८४) आधुनिक मैथिली साहित्यक एक महत्त्वपूर्ण निर्माता छथि । हिनक *'कीचकवध'* नवीन शैली मे रचित महाकाव्यक रूपमे प्रख्यात भेल तँ *'कृष्णचरित'* हिनका १९७९क साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ अलंकृत करौलक । हिनक मुक्तक एवं कथाकाव्य मे व्यंग्य ओ उपहास-कला उच्च कोटिक अछि । सहज, सरल, सुरेबगर गद्यक रचयिताक रूप मे सेहो हिनक महत्त्व अक्षुण्ण अछि । ई एकांकी, निबन्ध, कथा ओ बालसाहित्यक रचना कय मैथिलीक भण्डार कैं समृद्ध कयने छथि तथा मिथिलाक्षरक प्रचार-प्रसार मे योगदान देने छथि । भाषान्तरक उत्कृष्ट साहित्य कैं मैथिली मे अनबाक काज सेहो हिनका द्वारा भेल अछि । तत्कालीन सामाजिक-सांस्कृतिक-साहित्यिक आन्दोलन मे हिनक व्यक्तित्वक अवदान स्मरणीय रहत ।

एहि विनिबन्धक रचयिता डॉ. शिवशंकर झा 'कान्त' वरिष्ठ मैथिली प्राध्यापक ओ उच्च कोटिक समालोचक छथि । कवि, कथाकार, निबन्धकार, सम्पादक रूप मे सेहो हिनक मान्यता छनि । हिनक *'मैथिली महाकाव्यक उद्‌भव ओ विकास'* मैथिली समीक्षाक एक महत्त्वपूर्ण कृतिक रूप मे मान्य अछि । हिनक एक कथासंग्रह आ एकाधिक संपादित कृति सेहो प्रकाशित अछि ।

Library IIAS, Shimla
MT 817.23 092 J 559 J
00117132

ISBN 81-260-0160-7

पन्द्रह टाका